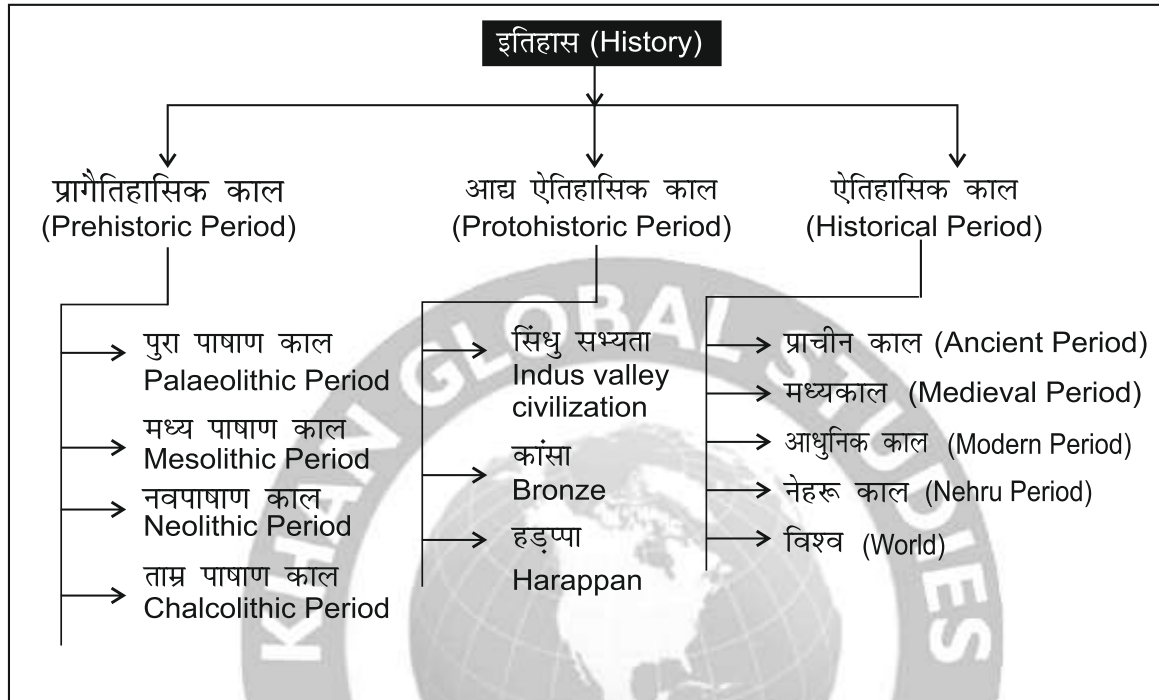


# 01.

## प्रागैतिहासिक काल (Prehistoric History)



- ☞ अतीत का अध्ययन **इतिहास** कहलाता है।
- ☞ इतिहास के जनक **हेरोडोटस** को कहते हैं।
- ☞ मानवजाति का पालना **अफ्रीका महादेश** को कहते हैं।
- ☞ जबकि सभ्यता का पालना **एशिया महादेश** को कहते हैं।
- **इतिहास को 3 खण्डों में बाँटते हैं—**

1. **प्रागैतिहासिक काल (Prehistoric History)–** इतिहास का वह समय जिसमें मानव लिखना पढ़ना नहीं जानता था। इसकी जानकारी केवल पुरातात्विक साक्ष्य से मिली है। इसके अंतर्गत पाषाण काल को रखते हैं।

### पाषाण काल (Stone Age)

- ☞ वह समय जब मानव पत्थर के औजार एवं हथियार का उपयोग करता था, पाषाण काल कहलाता है।
- ☞ भारत में सर्वप्रथम 1863 ई० में **रॉबर्ट ब्रुस फ्रुट** ने पाषाणकालीन सभ्यता की खोज की।
- ☞ भारतीय पुरातत्व का पिता सर **अलेक्जेंडर कनिंघम** है।
- ☞ भारत का पुरातात्विक संग्रहालय **इंदिरा गांधी मानव संग्रहालय** (भोपाल) है जो संस्कृति मंत्रालय के अधीन है।

- ☞ मिलने वाले धातु के आधार पर नामकरण **क्रिश्चियन थॉमस** ने किया।

- ☞ लिखावट के आधार पर नामकरण **जॉन ब्रूस** ने किया।

- **पाषाण काल को 4 भागों में बाँटा गया है—**

1. **पुरापाषाण काल (Palaeolithic Period) ( 20 लाख ई०पू० से 12,000 ई०पू० तक )–**

यह इतिहास का सबसे प्रारम्भिक समय था। इस समय के मानव को आदि मानव कहा जाता है। इस समय का मानव खानाबदोश (खाद्य संग्राहक) अर्थात् उसके जीवन का मुख्य उद्देश्य जानवरों की भाँति ही अपना पेट भरना था। इस समय के मानव की सबसे बड़ी उपलब्धी आग की खोज थी।

- ☞ इस समय मानव पत्थर के बड़े-बड़े औजारों का इस्तेमाल शिकार करने के लिए करते थे। इसी समय मानव ने चित्रकारी करना प्रारंभ किया।

- ☞ भिम्बेटका के गुफाओं में **पुरा पाषाण काल** के चित्र देखने को मिलते हैं। जो मध्यप्रदेश के अब्दुलागंज (रायसेन) में स्थित है।

2. **मध्यपाषाण काल (Mesolithic Period) ( 12,000 ई०पू० से 10,000 ई०पू० तक )–**

- ☞ इस काल के बारे में सर्वप्रथम जानकारी कार्ललाइल ने 1867 ई० में दिया।
  - ☞ यह पुरापाषाण के बाद का काल था। इस समय मानव के हथियार छोटे आकार के थे, इसलिए इन्हें **माइक्रोलिथ** कहते हैं। इस समय के मानव की सबसे प्रमुख कार्य अंत्योष्टि (अंतिम संस्कार) कार्यक्रम था।
  - ☞ इसी काल में कश्मीर के बुर्ज होम से मानव के साथ-साथ कुत्ता को भी दफनाने का साक्ष्य मिला है।
  - ☞ इसी काल में मानव के अस्थिपंजर का सबसे पहला अवशेष प्रतापगढ़ (UP) के **सराय नाहर** तथा **महदहाना** नामक स्थान से प्राप्त हुआ।
- 3. नव या उत्तरपाषाण काल (Neolithic Period) ( 10,000 ई०पू० से 3000 ई०पू० तक )-**
- ☞ इस काल के बारे में सर्वप्रथम जानकारी सर जॉन लुबाक ने 1865 ई० में प्रस्तुत किया।
  - ☞ इस काल में मानव ने स्थायी आवास बना लिया था। साथ ही कृषि तथा पशुपालन भी प्रारम्भ कर दिया। मानव ने इस काल में **पहिया** तथा **मनका ( घड़ा )** की खोज की।
  - ☞ कर्नाटक के मैसूर के पास संगनकल्लू नामक नवपाषाण कालीन पुरास्थल से **राख के टीले** प्राप्त हुए हैं।
  - ☞ पशुपालन का साक्ष्य भारत में आदमगढ़ (MP) तथा बागौर (राजस्थान) से प्राप्त हुआ है।
  - ☞ मानव द्वारा पाला गया पहला पशु 'कुत्ता' था।

**Note :-**

1. **मेहरगढ़**— यह पाकिस्तान के ब्लूचिस्तान में स्थित है। यहाँ से सर्वप्रथम 7000 ई० पू० सुलेमान और किर्थर पहाड़ियों के बीच कृषि के साक्ष्य जौ एवं गेहूँ मिली थी।
2. **बुर्जहोम**— यह कश्मीर में अवस्थित है। यहाँ गर्तावास का प्रमाण मिला है। यहाँ से मालीक के साथ कुत्ते को दफनाने का साक्ष्य मिला है।
3. **गुफकराल**— यहाँ से मृदभांड का पहला प्रमाण प्राप्त हुआ।
4. **कोल्डिहवा**— यह उत्तरप्रदेश के बेलनघाटी में स्थित है। यहाँ पर चावल का प्राचीनतम साक्ष्य (6000 ई० पू०) मिला है।
5. **चिरांद**— यह बिहार के सारण जिले में स्थित है। यहाँ से प्रचुर मात्रा में हड्डी के उपकरण प्राप्त हुए।
6. **लेहूरादेह**— यहाँ से नवीनतम सबसे प्राचीन चावल का साक्ष्य (9000 ई० पू०-7000 ई० के बीच) प्राप्त हुआ।
7. **दमदमा**— यहाँ एक ही कब्र से तीन मानव कंकाल मिले हैं।

#### 4. ताम्रपाषाण काल (Chalcolithic Period)–

- यह पाषाण काल का अंतिम समय था। इस समय ताँबे की खोज हुई थी। जिस कारण औद्योगिकरण शुरू हो गया। इसी औद्योगिकीकरण का विकसित रूप सिंधु सभ्यता में देखने को मिलता है।
- ☞ ताम्रपाषाण के लोग मुख्यतः ग्रामीण समुदाय बनाकर रहते थे।
  - ☞ अहार एवं गिलुंद पुरास्थल राजस्थान के बनास घाटी क्षेत्र में फैले हुए ताम्रपाषाण बस्तियाँ हैं।
  - ☞ अहार का प्राचीन नाम तांबवती अर्थात् ताँबा वाली जगह है।
  - ☞ मालावा मृदभांड ताम्रपाषाण युग का सर्वोत्तम मृदाभांड माना गया है।
  - ☞ बिहार में सेनुवार, सोनपुर और ताराडीह तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश में खैराडीह और नरहन ताम्रपाषाण कालीन हैं।
  - ☞ महिष दल पश्चिम बंगाल के ताम्रपाषाण बस्तियाँ हैं।
  - ☞ नवदाटोली मध्यप्रदेश का एक महत्वपूर्ण ताम्रपाषाणिक पुरास्थल है जिसकी उत्खनन H.D. संकालीया ने कराया था।
  - ☞ इनामगाँव ताम्रपाषाण युग की सबसे बड़ी बस्ती थी।
  - ☞ यहाँ के लोग विशेषकर मातृदेवी की पूजा करते थे।
  - ☞ मानव द्वारा खोजी गई पहली धातु ताँबा थी।
  - ☞ बच्चों के गलों में ताँबे के मनकों का हार पहनाकर उन्हें दफनाने का साक्ष्य महाराष्ट्र के चंदोली और नेवासा बस्तियाँ में पाया गया है।
  - ☞ स्टेटाइट और कार्नेलियन ताम्रपाषाण की प्रमुख किमती पत्थरों में से एक थे जिनके पास ये वस्तुएँ होती थी वे धनी कहलाते थे।
  - ☞ चित्रित मृदभांड का सबसे पहले इस्तेमाल ताम्रपाषाण में हुआ था।
  - ☞ सर्वप्रथम ताम्रपाषाण लोगों ने ही प्रायद्वीप भारत में बड़े-बड़े गाँव बसाये थे।
  - ☞ ताम्रपाषाण युग के लोग लिखने की कला नहीं जानते थे और ना ही वे नगरों में रहते थे जबकि काँस्य युग के लोग नगरवासी हो गए थे।
  - ☞ सबसे बड़ी ताम्र उपकरण मध्य प्रदेश के गुंगेरिया से प्राप्त हुई है।

#### जोरवे संस्कृति

- ☞ यह महाराष्ट्र में प्रचलित था।
- ☞ यह एक ग्रामीण संस्कृति थी।
- ☞ इस संस्कृति के अंतर्गत निम्नलिखित पुरास्थल आते हैं— इनामगाँव, नासिक, नेवासा, दैमाबाद आदि।

| युग           | स्थान                                 | प्रमुख साक्ष्य                                                                                                                                                   |
|---------------|---------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| पाषाण युग     | बोरी (मुंबई)                          | कुल्हाड़ी खंडक (चोपर) के प्रारंभिक उपयोग के साक्ष्य                                                                                                              |
|               | सोहन घाटी (पाकिस्तान के पंजाब प्रांत) | यहाँ चौपर-चौपिंग संस्कृति दिखाई पड़ती है।<br><b>Note :- चौपर</b> – एक तरफा धार वाला उपकरण<br><b>चैपिंग</b> – दोहरी धार वाला काटने का औजार                        |
|               | भीमबेटका (रायसेन, मध्य प्रदेश)        | देश की शैली चित्रकारी का सबसे बड़ा खजना।                                                                                                                         |
|               | चौतरा (मंडी, हिमाचल प्रदेश)           | यह सोहन संस्कृति से संबंधित है।                                                                                                                                  |
|               | अतिरंपक्कम (चेन्नई, तमिलनाडु)         | यहाँ मिश्रित एबीवेली तथा ऐशुली उपकरण प्राप्त हुए हैं।                                                                                                            |
|               | पल्लवरम (चेन्नई, तमिलनाडु)            | ब्रिटिश पुरातत्वशास्त्री राबर्ट ब्रुस फ्रुट ने 1864 में यहाँ पुरापाषाणकालीन औजारों की खोज की थी।                                                                 |
|               | बेलन घाटि (मिर्जापुर, यूपी)           | आरंभिक पुरापाषाणकालीन औजार                                                                                                                                       |
| मध्यपाषाण काल | बागौर (भीलवाड़ा, राजस्थान)            | <ul style="list-style-type: none"> <li>● मध्यपाषाण काल का सबसे बड़ा स्थल</li> <li>● पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य</li> </ul>                                      |
|               | सराय नाहर राय (प्रतापगढ़, यूपी)       | शवों को आवासीय क्षेत्र में ही दफनाने के साक्ष्य।                                                                                                                 |
|               | महादहा दमदमा (प्रतापगढ़, यूपी)        | पुरुष-स्त्री दोहरा शवाधान के साक्ष्य।                                                                                                                            |
|               | आदमगढ़ (होशंगाबाद, मध्यप्रदेश)        | बागौर की तरह यहाँ से भी पशुपालन के आरंभिक साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।                                                                                               |
| नवपाषाण काल   | बुर्जहोम (श्रीनगर)                    | <ul style="list-style-type: none"> <li>● गर्तावास और कब्रों में मानव के साथ कुत्तों को दफनाने के साक्ष्य।</li> <li>● अस्थि उपकरणों की साक्ष्य।</li> </ul>        |
|               | गुफकराल (पुलवामा, जम्मू-कश्मीर)       | यहाँ के लोग कृषि और पशुपालन दोनों कार्य करते थे।                                                                                                                 |
|               | मेहरगढ़ (बलूचिस्तान प्रांत)           | <ul style="list-style-type: none"> <li>● भारत में सर्वप्रथम गेहूँ व जौ की खेती का स्थल है।</li> <li>● मानव के साथ बकरी दफनाए जाने का साक्ष्य मिला है।</li> </ul> |
|               | चिरांद (छपरा, बिहार)                  | <ul style="list-style-type: none"> <li>● भारत में नवपाषाण काल का पहला ज्ञात स्थान</li> <li>● अस्थि उपकरणों की साक्ष्य।</li> </ul>                                |
|               | दाओजली हैडिंग (असम)                   | पॉलिश पत्थर के औजार, चीनी मिट्टी तथा बड़ी संख्या में घरेलू बर्तन के साक्ष्य।                                                                                     |
|               | कोल्डिहवा (इलाहाबाद, यूपी)            | 6000 ई.पू. चावल का साक्ष्य। हस्तनिर्मित मृदाभांड तथा निवास के लिए झोपड़ियाँ।                                                                                     |
|               | बरूडीह (सिंह भूम, झारखंड)             | उपकरण।                                                                                                                                                           |



## आद्य-ऐतिहासिक काल (Proto Historic History)

- ☞ इस काल में मानव द्वारा लिखी गई लिपि को पढ़ा नहीं जा सकता है, किन्तु लिखित साक्ष्य मिले हैं। इस काल के जानकारी के स्रोत भी पुरातात्विक साक्ष्य ही हैं। इसमें सिंधु सभ्यता को रखते हैं।

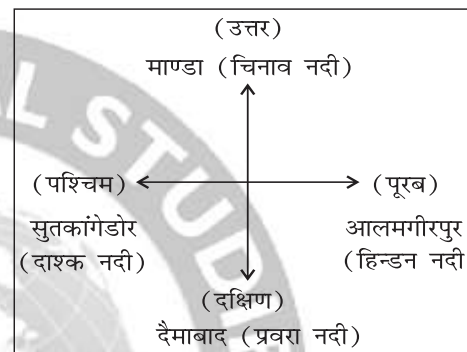
### सिंधु सभ्यता (Indus Valley Civilization)

- ☞ समाजिक रूप से रहने वाले व्यक्तियों को सभ्यता कहते हैं।
- ☞ यह सभ्यता सिंधु नदी के तट पर मिली थी, इसलिए इसे सिंधु सभ्यता कहते हैं।
- ☞ इसका विकास 2500 ई० पूर्व से 1750 ई० पूर्व तक हुआ।
- ☞ सिन्धु सभ्यता का आकार त्रिभुजाकार था।
- ☞ इसका क्षेत्र 13 लाख वर्ग किमी में फैला था।
- ☞ सिन्धु सभ्यता में कुल 350 स्थल मिले हैं जिसमें से 200 स्थल केवल गुजरात में हैं।
- ☞ सिन्धु सभ्यता विश्व की पहली नगरीय (शहरी) सभ्यता थी जबकि विश्व की पहली सभ्यता मेसोपोटामिया की सभ्यता थी जो ग्रामीण सभ्यता थी।
- ☞ सिंधु सभ्यता की जानकारी सबसे पहले चार्ल्स मैशन ने (1826 ई०) दिया था।
- ☞ सिंधु सभ्यता का सर्वेक्षण जेम्स कनिंघम ने (1853 ई०) किया।
- ☞ लॉर्ड कर्जन ने 1904 ई० में पुरातत्व विभाग की स्थापना किया था। जिसके महानिर्देशक सर जॉन मार्शल थे।
- ☞ सिंधु सभ्यता की पहली खुदाई दयाराम साहनी ने की।
- ☞ इसकी जानकारी के लिए पहली खुदाई हड़प्पा में (1921 ई०) हुई थी। अतः इसे हड़प्पा सभ्यता भी कहते हैं।
- ☞ सिंधु सभ्यता का नामकरण जॉन मार्शल ने किया था।
- ☞ इस सभ्यता को काँस्ययुगीन सभ्यता भी कहते हैं क्योंकि इसी समय काँसे की खोज हुई थी।

### सिन्धु सभ्यता की सीमाएँ

1. इसकी उत्तरी सीमा कश्मीर के मांडा में चिनाब नदी के तट पर थी। इसकी खुदाई जगपति जोशी ने 1982 ई० में किया।
2. इसकी पूर्वी सीमा उत्तर-प्रदेश के आलमगीरपुर में थी। जो हिन्दन नदी के किनारे थी। यज्ञदत्त शर्मा के नेतृत्व में इसका उत्खनन हुआ।

3. इसकी दक्षिणी महाराष्ट्र के दैमाबाद में प्रवरा नदी के तट पर थी। यहाँ से धातु का एक रथ (इक्का गाड़ी) का प्रमाण मिला है।
4. इसकी पश्चिमी सीमा पाकिस्तान के सुतकांगेडोर में थी, जो दाश्क नदी के तट पर थी।



**Trick :-** सम = AD  
डच - है पर (भारत में नहीं)

| सम = AD         | डच हैं पर भस्म में नहीं |
|-----------------|-------------------------|
| स - सुतकांगेडोर | ड - दास्क               |
| म - माण्डा      | च - चिनाव               |
| A - आलमगीर      | है - हिण्डन             |
| D - दैमाबाद     | पर - प्रवरा             |

### हड़प्पा (1921)

- ☞ इसकी खुदाई दयाराम साहनी ने की। यह रावी नदी के तट पर पाकिस्तान के “माऊण्ट गोमरी” जिला में स्थित है।
- ☞ पिग्गट ने हड़प्पा और मोहनजोदड़ों को एक विस्तृत साम्राज्य की जुड़वा राजधानी कहा।
- यहाँ से निम्नलिखित वस्तुएँ मिली हैं—
- (i) कुम्हार का चाक
  - (ii) श्रमिक आवास
  - (iii) अन्नागार
  - (iv) मातृदेवी की मूर्ति



- (v) लकड़ी की ओखली
- (vi) लकड़ी का ताबूत
- (vii) R.H. 37 कब्रिस्तान
- (viii) एक सिंग वाला जानवर
- (ix) हाथी का कपाल
- (x) स्वास्तिक चिन्ह
- (xi) स्त्री के गर्भ से निकला हुआ पौधा (जिसे उर्वरता की देवी माना गया है)

**Note :-** चाँदी का सर्वप्रथम प्रयोग हड़प्पा सभ्यता के लोगों ने ही किए थे।

### मोहनजोदड़ो (1922)

- इसकी खुदाई सन् 1922 ई. में राखलदास बनर्जी ने की। यह पाकिस्तान के लरकाना जिले में स्थित है। यह सिंधु नदी के तट पर है।
- यह सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा शहर है।
- मोहनजोदड़ों की सबसे प्रमुख विशेषता उसकी सड़कें थी जो सीधी दिशा में एक-दूसरे को समकोण (ग्रीड पद्धति) पर काटती हुई नगर को वर्गाकार अथवा चतुर्भुजाकार खंडों में विभाजित करती थी।

➤ यहाँ से निम्नलिखित वस्तुएँ मिली हैं—

- (i) स्नानागार
- (ii) अन्नागार (सबसे बड़ा)
- (iii) पुरोहित आवास
- (iv) सूती वस्त्र
- (v) सबसे चौड़ी सड़क
- (vi) सभागार
- (vii) पशुपति शिव
- (viii) काँसे की नर्तकी
- (ix) ताँबे का ढेर
- (x) घर में कुआँ।

**Note :** मोहनजोदड़ों का अर्थ होता है। मृतकों का टीला किन्तु यहाँ से कब्रिस्तान नहीं मिला है बल्कि एक ही स्थान पर कंकाल का ढेर मिला है। यह कंकाल क्षतिग्रस्त हैं जो बाह्य आक्रमण को दर्शाता है।

**Note :** मोहनजोदड़ों का विशाल अन्नागार सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा भवन या इमारत है।

**Remark :-** स्वास्तिक मुहर सर्वाधिक मोहनजोदड़ों से मिला है। जिसका निर्माण शिलखड़ी से हुआ था।

### सुतकांगेडोर (1927)

- इसकी खुदाई आरेण स्टाइन ने किया। यह सबसे पश्चिमी स्थल है जो दास्क नदी के किनारे है यहाँ से बंदरगाह मिले हैं।

### चन्हुदड़ों (1931)

- इसकी खुदाई सन् 1931 ई. में गोपाल मजूमदार ने की।
- यह पाकिस्तान में सिंधु नदी के तट पर स्थित है।
- यह एक मात्र शहर है, जो दुर्ग रहित है।
- यह एक औद्योगिक शहर है।
- यह एक मात्र पुरास्थल है जहाँ से वक्राकार ईंटें मिली हैं।
- यहाँ से निम्नलिखित वस्तुएँ मिली हैं—

- (i) सौंदर्य सामग्रियाँ
- (ii) मनका
- (iii) गुड़िया
- (iv) सुई-धागा
- (v) बिल्ली का पीछा करता हुआ कुत्ता का पद चिह्न
- (vi) अलंकृत ईंट

**Note :-** दड़ो या कोट शब्द वाले स्थान पाकिस्तान में पाये गए।

**Ex :-** चन्हुदड़ों                      वालाकोट  
मोहनजोदड़ों                      डावर कोट  
जुरिद जोदड़ों                      कोट दीजी

### रोपड़ (1953)

- इसकी खुदाई यज्ञदत्त शर्मा ने 1953 ई. में की। यह पंजाब के सतलज नदी के किनारे स्थित है।
- इसका आधुनिक नाम रूपनगर है।
- यहाँ मानव के साथ-साथ उसके पालतू जानवरों (कुत्ता) का भी साक्ष्य मिला है।

**Note :** ऐसा ही शव नव-पाषाण काल में जम्मू-कश्मीर के बुर्जहोम में मिला था।

### बनावली (1973)

- इसकी खुदाई 1973 ई. में रविन्द्र सिंह ने किया। यह हरियाणा में स्थित है। इसके समीप रंगोई नदी है। यहाँ जल-निकासी की व्यवस्था नहीं थी जिस कारण यहाँ नाली न मिलकर घरों में ही सोखता व्यवस्था मिला है।
- यहाँ की सड़कें टेढ़ी-मेढ़ी थी अर्थात् सड़कें नगर को ताराकित (Star Shaped) भागों में विभाजित करती है।

### कुणाल

- यह हरियाणा के फतेहबाद जिला में स्थित है।
- यहाँ से चाँदी के दो मुकूट मिला है।

## कालीबंगा

- इसका अर्थ होता है “काली मिट्टी की चूड़ी”।
- यहाँ से अलंकृत ईंट, चूड़ी, जोता हुआ खेत हल एवं हवन कुँड मिले हैं।
- यह राजस्थान में सरस्वती (घग्गर) नदी के किनारे हनुमानगढ़ जिले में स्थित है।
- इसकी खोज अलमानंद घोष द्वारा की गई।
- कालीबंगा के लोग एक साथ दो फसल उगाते थे। वहाँ पे एक ही खेत में चना और सरसों उपजाने का विवरण मिला है।
- इसकी खुदाई B.K. थापड़ तथा B.B. लाल ने की।

## धौलावीरा

- यह गुजरात में स्थित है।
- यह सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल है।
- इसकी खुदाई सर्वप्रथम जे.पी. जोशी (1967) ने किया एवं पुनः इसकी खुदाई रविन्द्र सिंह बिस्ट द्वारा (1990-91) किया गया।
- यह गुजरात तथा पाकिस्तान दोनों में फैला हुआ है।
- भारत में स्थित सबसे बड़ा स्थल राखीगढ़ी था जो हरियाणा में है।

## सुरकोटदा

- यह गुजरात में स्थित है।
- इसकी खुदाई जगपति जोशी ने करवाया।
- यहाँ से कलश शवाधान तथा घोड़ों की हड्डी मिली है।
- यहाँ छोटे बंदरगाह भी मिले हैं।

## लोथल

- इसकी खुदाई रंगनाथ राव ने भोगवा नदी के किनारे अहमदाबाद (गुजरात) में किया।
- यह सिंधु सभ्यता का बंदरगाह स्थल है।
- यहाँ से गोदीवाड़ा (Dock-yard) का साक्ष्य मिला है।
- यहाँ फारस की मुहर मिली है, जो विदेशी व्यापार का संकेत है।
- यहाँ से माप-तौल के समान भी मिले हैं।
- यहाँ से छोटा दिशा मापक यंत्र मिला है।
- यह एक औद्योगिक शहर था। इस शहर में घर के दरवाजें सड़कों की ओर खुलते थे।
- यहाँ से युगल शवाधान (जोड़े में लाश) मिला है, जो सतीप्रथा का साक्ष्य है।

## रंगपुर

- यह गुजरात में स्थित है।
- यहाँ से धान की भूसी मिली है।

## सिंधु सभ्यता की विशेषताएँ

- सिंधु सभ्यता एक नगरीय (शहरी) सभ्यता थी।
- यहाँ की सड़क एक-दूसरे को समकोण पर काटती है तथा ये पूरब-पश्चिम दिशा में थी, जिससे हवा द्वारा सड़क स्वतः साफ हो जाती थी।
- नगर नियोजन तथा जल निकास इसकी सबसे बड़ी व्यवस्था थी।
- इसकी नालियाँ ढकी हुई थी तथा सड़क सीधी थी।
- अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि था।
- इसका व्यापार (अंतर्राष्ट्रीय) विदेशों से होता था।
- इनकी भाषा भावचित्रात्मक थी।
- इनकी समाज मातृसत्तात्मक थी।
- इनकी लिपी दाएं से बाएं की ओर लिखा जाता था।
- हड़प्पा लिपी के प्रमाण से सबसे ज्यादा चित्र U आकार तथा मछली का चित्र देखने को मिलता है।
- इनके मुहरों पर सर्वाधिक 1 सिंग वाले जानवर का चित्र था।
- इनके मुहरों पर गाय तथा सिंह का चित्र नहीं मिला है।
- हड़प्पा सभ्यता के मुहरों में सेलखरी का प्रयोग मुख्य रूप से किया गया था।
- सिंधु घाटी सभ्यता के लोग लोहे से परिचित नहीं थे इसके अन्य धातु जैसे— सोना, चाँदी, ताँबा, टीन, काँसा इत्यादि से परिचित थे।
- यहाँ माप-तौल के लिए न्यूनतम बाट 16 kg का था जो दशमलव प्रणाली के सूचक हैं।
- सिंधु सभ्यता के लोग युद्ध या तलवार से परिचित नहीं थे।
- सिंधु सभ्यता में मिट्टी के बर्तनों में लाल रंग का उपयोग होता था।
- सिंधुवासी विश्व में कपास के प्रथम उत्पादक थे।
- सिंधु घाटी सभ्यता के लोग कृषि भी करते थे, पशुपालन भी करते थे परंतु उनका मुख्य व्यवसाय व्यापार था।
- यहाँ के लोग मनोरंजन के लिए चौपर और पासा खेलते थे।
- सबसे प्रिय देवता — शिव
- इनका पसंदीदा वृक्ष — पीपल
- इनका पसंदीदा जानवर — साँढ़ तथा वृषभ (बसहा बैल)
- इनका पसंदीदा पक्षी — बत्तख
- इनका आदरणीय नदी — सिन्धु
- सिंधु सभ्यता का समाज 4 वर्गों में बँटा हुआ था—
  - विद्वान
  - योद्धा

3. व्यापारी एवं शिल्पकार
4. श्रमिक

| वस्तुओं का आयात | किस प्रदेश से?             | वस्तुओं का आयात | किस प्रदेश से? |
|-----------------|----------------------------|-----------------|----------------|
| सोना            | अफगानिस्तान, ईरान, कर्नाटक | गोमेद           | सौराष्ट्र      |
| चाँदी           | अफगानिस्तान, ईरान          | लाजवर्द         | मोसोपोटामिया   |
| ताँबा           | ब्लूचिस्तान, खेतडी, ओमान   | सीसा            | ईरान           |
| टिन             | ईरान, अफगानिस्तान          |                 |                |

### ➤ सिन्धु सभ्यता के पतन के कारण-

- ☞ सिन्धु सभ्यता के विनाश का सबसे बड़ा कारण बाढ़ को माना जाता है।

☞ वर्तमान में हुए उत्खनन से आईआईटी खड़गपुर को सिन्धु घाटी सभ्यता से संबंधित कुछ परिमाण मिला जिस आधार पर कहा जा रहा है कि इसके पतन का महत्वपूर्ण कारण जलवायु परिवर्तन है।

| विद्वान                           | पतन के कारण                       |
|-----------------------------------|-----------------------------------|
| गार्डन चाइल्ड एवं व्हीलर          | बाढ़ एवं आर्यों के आक्रमण         |
| जॉन मार्शल अर्नेस्ट एवं एस.आर.राव | बाढ़                              |
| आरेल स्टेइन, अमलानंद घोष          | जलवायु परिवर्तन                   |
| एम.आर. साहनी                      | भूतत्विक परिवर्तन/जलप्लावन        |
| जॉन मार्शल                        | प्रशासनिक शिथिलता                 |
| के.यू.आर. कनेडी                   | प्राकृतिक आपदा (मलेरिया, महामारी) |

## सिन्धु सभ्यता के प्रमुख स्थल

|     | प्रमुख स्थल       | अवस्थिति                                                            | उत्खननकर्ता                     | उत्खनन वर्ष      | नदी             |
|-----|-------------------|---------------------------------------------------------------------|---------------------------------|------------------|-----------------|
| 1.  | हड़प्पा           | मोंटगोमरी जिला, पंजाब (पाकिस्तान)                                   | दयाराम साहनी और माधोस्वरूप वत्स | 1921 ई०          | रावी            |
| 2.  | मोहनजोदड़ो        | लरकाना जिला, सिंध प्रांत (पाकिस्तान)                                | राखालदास बनर्जी                 | 1922 ई०          | सिन्धू          |
| 3.  | कालीबंगा/कालीबंगन | हनुमानगढ़ जिला, राजस्थान (भारत)                                     | बी०बी० लाल और बी०के० थापर       | 1961-69 ई०       | घग्गर (सरस्वती) |
| 4.  | धौलावीरा          | कच्छ जिला, गुजरात (भारत)                                            | रवीन्द्र सिंह विष्ट             | 1990-91 ई०       | लूनी            |
| 5.  | चन्हूदड़ो         | सिंध प्रांत (पाकिस्तान)                                             | गोपाल मजुमदार                   | 1931 ई०          | सिन्धू          |
| 6.  | लोथल              | अहमदाबाद जिला, गुजरात (भारत)                                        | रंगनाथ राव                      | 1955 ई०/1962 ई०  | भोगवा           |
| 7.  | कोटदीजी           | सिंध प्रांत का खैरपुर स्थान (पाकिस्तान)                             | फजल अहमद खान                    | 1955 ई०, 1957 ई० | सिन्धू          |
| 8.  | बनावली            | हिसार जिला, हरियाणा (भारत)                                          | रवीन्द्र सिंह विष्ट             | 1974 ई०          | सरस्वती (रंगोई) |
| 9.  | रोपड़             | रोपड़ जिला, पंजाब (भारत)                                            | यज्ञदत्त शर्मा                  | 1953-56 ई०       | सतलज            |
| 10. | रंगपुर            | काठियावाड़ जिला, गुजरात, अहमदाबाद (भारत)                            | रंगनाथ राव                      | 1953-54 ई०       | भादर            |
| 11. | आलमगीरपुर         | मेरठ जिला, उत्तर प्रदेश (भारत)                                      | यज्ञदत्त शर्मा                  | 1958 ई०          | हिन्डन          |
| 12. | सुतकागेंडोर       | मकरान में समुद्र तट के किनारे (पाकिस्तान के ब्लूचिस्तान प्रांत में) | ऑरैल स्टाइन (आर०एल०स्टाइन)      | 1927 ई०          | दाश्क           |
| 13. | सुत्काकोह         | मकरान के समुद्र तट पर (पाकिस्तान के ब्लूचिस्तान प्रांत में)         | जॉर्ज डेलस                      | 1962 ई०          | शादीकोर         |

### मेसोपोटामिया की सभ्यता (10,000 ई.पू.)

- ☞ इसका विकास इराक में टिगरीस एवं यूफ्रेट्स नदी (दजला-फरात) नदियों के मध्य में हुआ है।
- ☞ यहाँ की मिट्टी अत्यधिक उपजाऊ थी। यह सभ्यता ग्रामीण थी। इसके अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि था।
- ☞ इस समय के मंदिरों को जिगुरद कहा जाता था।
- मेसोपोटामिया की सभ्यता के 4 भाग थे-
  - (i) सोमेरियन की सभ्यता
  - (ii) बेबीलोन की सभ्यता
  - (iii) सिरिया की सभ्यता
  - (iv) कैलिड्रिया की सभ्यता

☞ झूलता हुआ बगीचा बेबीलोन में स्थित है।

☞ सिकंदर ने इस सभ्यता का विनाश कर दिया और इसके स्थान पर ग्रीक सभ्यता को थोप दिया।

☞ विश्व की सबसे पहली सभ्यता मेसोपोटामिया की सभ्यता थी। जबकि विश्व की पहली नगरीय सभ्यता सिंधु सभ्यता थी।

### मिस्र की सभ्यता (2100 ई.पू.)

- ☞ यह मिस्र के रेगिस्तानों में स्थित थी।
- ☞ इसे नील नदी की देन कहते हैं।
- ☞ इस सभ्यता की विकास फिरौन के नेतृत्व में किया गया था।

- ☞ इस सभ्यता में पिरामिड, सूर्य कैलेंडर तथा ममी का विकास हुआ था। अर्थात् इस सभ्यता का रसायन शास्त्र सूदृढ़ था।
- ☞ गिजा का पिरामिड सबसे प्रसिद्ध है।

### रोम की सभ्यता (600 ई.पू.)

- ☞ इसे इटली में विकसित किया गया था।
- ☞ इन्होंने पूरे भू-मध्यसागर पर अधिकार कर लिया था।
- ☞ प्राचीन सभ्यता के यह सबसे विकसित सभ्यता थी। आज भी इस सभ्यता के अवशेष सुरक्षित बचे हुए हैं। जो पर्यटन का आकर्षण केन्द्र हैं।
- ☞ इस सभ्यता के दो सबसे बड़े राजा जुलियस सीजर एवं आगस्टस थे।

**Note :-** जुलियस सीजर की हत्या धोखे से उसके मंत्रिण्डल द्वारा कर दी गई।

- ☞ जुलियस सीजर नामक नाटक William Shakespear ने लिखा है।

### फारस की सभ्यता (500 ई.पू.)

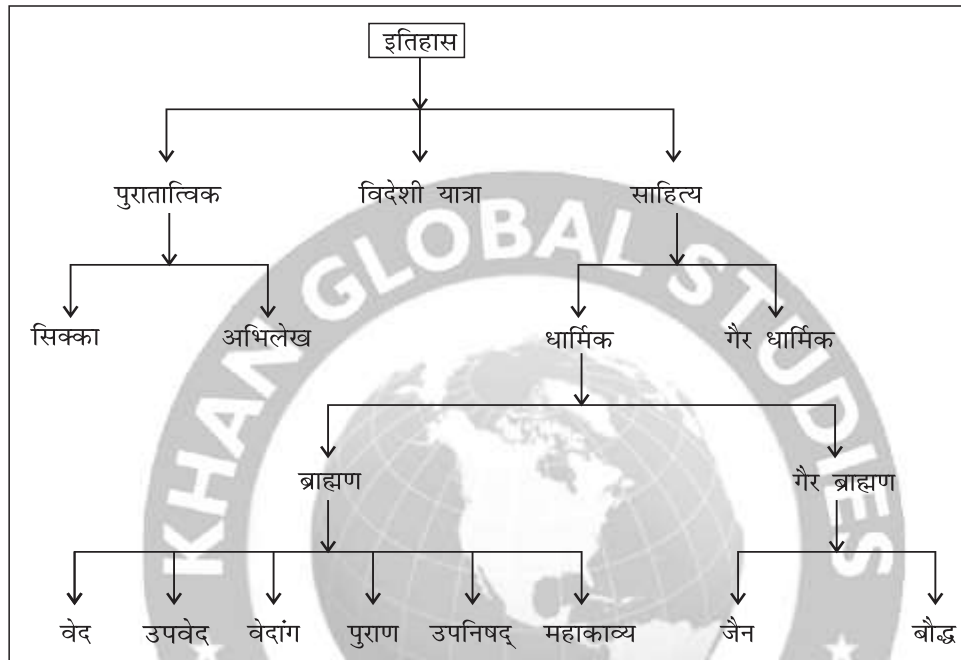
- ☞ यह वर्तमान में ईरान में है। इस सभ्यता का विकास तेजी से हुआ था। इन्होंने पूरे अरब प्रायद्वीप पर अधिकार कर लिया था।
- ☞ इनकी भाषा फारसी थी तथा पारसी धर्म को मानते थे।
- ☞ सिकंदर ने इस धर्म का अंत कर दिया।

### स्पार्टा

- ☞ स्पार्टा अपने बहादुर सैनिकों के लिए विख्यात है। यह ग्रीस के पास का एक छोटा सा क्षेत्र था।
- ☞ स्पार्टा के मात्र 300 सैनिकों ने लियोनाइड्स के नेतृत्व में ग्रीस के 20000 सैनिकों को मात दे दी थी।
- ☞ ग्रीस की विशाल सेना का नेतृत्व जर्कसीज कर रहा था।
- ☞ जर्कसीज ने धोखे से Spartans को हरा दिया।
- **पीली नदी की सभ्यता**— यह चीन में 5000 ई.पू. विकसित हुई थी। ह्वांगहो नदी के तट पर इसका विस्तार था। यह सभ्यता अपने उपजाऊ भूमि के लिए प्रसिद्ध थी।



- इसके बारे में लिखित स्रोत उपलब्ध है, और इसे पढ़ा भी जा सका है। इसके अंतर्गत वैदिक काल से लेकर अभी तक का समय आता है।



## सिक्का (Coins)

- सिक्के का अध्ययन न्यूमेसमेटिक्स कहलाता है।
- टेराकोटा का सिक्का मिट्टी का बना होता था। यह सिंधु सभ्यता में बना था।
- मौर्य काल के समय आहत या पंचमार्क सिक्के का प्रयोग होता था। आहत सिक्कों पर लिखावट नहीं होती थी। केवल चित्र बने होते थे। यह पहला धातु का सिक्का था।
- पर्ण चाँदी के सिक्के थे, जो मौर्य काल में प्रचलित थे।
- सीसा का सिक्का सातवाहन काल में प्रचलित थे।
- पहली बार सोने का सिक्का यूनानी शासकों द्वारा प्रचलित किया गया।
- शुद्ध सोने का सिक्का कुषाण शासकों द्वारा प्रचलित किया गया।
- सर्वाधिक मात्रा में तथा सबसे अधिक अशुद्ध सोने का सिक्का गुप्त काल में प्रयोग हुआ। इस समय स्कंद गुप्त शासक थे।
- चाँदी का सिक्का गुप्त काल में चन्द्रगुप्त-II विक्रमादित्य के समय प्रचलित हुआ।
- राजा-रानी का सिक्का गुप्त काल में चन्द्रगुप्त-II विक्रमादित्य के समय प्रचलित हुआ।

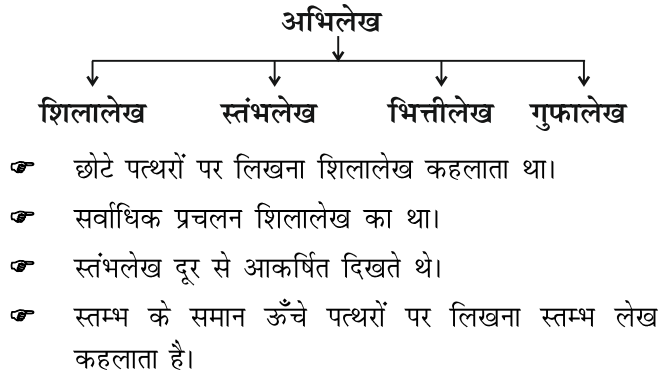
- मयूर शैली की सिक्का गुप्त काल में समुद्र गुप्त के समय प्रयोग में लाया गया। इस सिक्के का प्रचलन गुप्त काल में सर्वाधिक था।
- कौड़ी का प्रयोग भी गुप्त काल में ही हुआ।
- चमड़े का सिक्का हुमायूँ के शासन काल में शिहाबुद्दीन ने प्रारम्भ करवाया था।
- चाँदी के रुपये का प्रारंभ शेरशाह शूरी ने किया।
- ताँबे के दाम का प्रारम्भ शेरशाह शूरी ने ही किया।
- सोने की अशर्फी का प्रारम्भ भी शेरशाह शूरी ने ही किया।

## अभिलेख (Epigraph/Inscriptions)

- पत्थरों को खोदकर लिखना अभिलेख कहलाता है।
- विश्व में अभिलेख लिखने का प्रारम्भ ईरान के शासक डेरियस ने किया था तथा भारत में अभिलेख का जनक अशोक को कहा जाता है।
- पहला अभिलेख बोगजगोई से मिला जो तुर्की या एशिया माइनर में है।
- अभिलेखों का अध्ययन एपिग्राफी कहलाता है।



## अभिलेख के प्रकार



## प्रमुख अभिलेख

- **हाथीगुफा अभिलेख ( उड़ीसा )**— इसे कलिंग राजा खारवेल द्वारा लिखवाया गया था। इसमें कलिंग युद्ध की चर्चा है। युद्ध के समय कलिंग का राजा नंदराज था। (गंगवंश)
- **ऐहोल अभिलेख ( राजस्थान )**— इनमें पुलकेशिन-II के हर्षवर्धन पर विजय की चर्चा की गई है। इसकी रचना रविकीर्ति ने की है।
- **जुनागढ़ अभिलेख ( गुजरात )**— इसमें रुद्रदामन ने सुदर्शन झील की चर्चा की है। उस झील को चन्द्रगुप्त मौर्य ने बनवाया था।
- **प्रयाग अभिलेख ( इलाहाबाद )**— इसमें समुद्रगुप्त ने अपने विजय अभियान की चर्चा की है।
- **नासिक अभिलेख ( महाराष्ट्र )**— यह अभिलेख गौतमी बलश्री द्वारा लिखवाया गया था। इसमें सातवाहन कालीन घटनाओं का विवरण मिलता है।
- **गवालियर अभिलेख ( मध्यप्रदेश )**— यह अभिलेख राजा भोज प्रतिहार के समय में बालादित्य द्वारा लिखा गया था। इसमें गुर्जर प्रतिहार शासकों के विषय में जानकारी मिलती है।
- **मंदसौर अभिलेख ( मध्यप्रदेश )**— यह अभिलेख मालवा नरेश यशोवर्मन के समय में वासुल द्वारा लिखा गया था। इसमें सैनिक उपलब्धियों का वर्णन मिलता है।
- **देवपाड़ा अभिलेख ( पं. बंगाल )**— यह अभिलेख बंगाल शासक विजय सेन द्वारा लिखवाया गया था। इसमें सेन राजवंश के शासन की महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन मिलता है।

## स्तम्भलेख (Pillar / Edicts)

- ☞ यह स्तम्भ के समान ऊँचे होते हैं।
- **हेलियोडोटस/गरुडध्वज स्तम्भलेख (M.P.)**— इसमें भागवद् धर्म की जानकारी दी है।
- ☞ चंद्रगुप्त विक्रमादित्य का महारौली (दिल्ली) में स्थित स्तंभलेख लोहे का है। जिसमें अभी तक जंग नहीं लगा है।

## विदेशी यात्रियों द्वारा भारत का वर्णन

- हेरोडोटस— हिस्टोरिका
- मेगास्थनीज— इण्डिका
- **Periplus of the Erythraean Sea**— अज्ञात
- टॉलमी— ज्योग्राफिका
- प्लिनी— नेचुरल हिस्ट्री
- अलबेरूनी— किताबुल-हिन्द/तहकीक -ए-हिन्द
- मार्कोपोलो— द बुक ऑफ सर मार्कोपोलो (काकतिय वंश)
- फाह्यान— फो-क्यु-की (चन्द्रगुप्त-II)
- ह्वेनसांग— सी-यू-की (हर्षवर्धन)
- तारानाथ— कंग्युर, तंग्युर
- **फाह्यान (399 ई. )**— “फो-क्यु-की” (पुस्तक) यह चन्द्रगुप्त-II (विक्रमादित्य) के दरबार में आया था। इसमें उस समय के भवन तथा कौड़ी की चर्चा है।
- **संयुगन (518 ई. )**— (चीन) इसने अपने तीन वर्ष की यात्रा में बौद्ध धर्म की प्रतियाँ एकत्रित की।
- **ह्वेनसांग (629 ई. )**— सी-यू-की यह हर्षवर्धन के दरबार में आया।
- ☞ इसने नालंदा विश्व विद्यालय में अध्ययन तथा अध्यापन दोनों किया। इसे यात्रियों का राजकुमार कहते हैं।
- **इत्सिंग (673 ई. )**— यह चीनी यात्री था। यह त्रिपिटक की 400 प्रतियाँ (Photocopy) अपने साथ चीन लेकर गया था।
- **इब्नबतूता**— यह मोरक्को का रहने वाला था। यह 7000 किमी. की यात्रा करके मुहम्मद-बिन-तुगलक के दरबार में आया। इसकी पुस्तक “रेहला” थी।
- **अब्दुल रज्जाक**— यह फारस का रहने वाला था। यह विजयनगर साम्राज्य में आया था। इसकी पुस्तक मतला-ए-साहिन है। यह कृष्णदेव राय के दरबार में आया था।

## साहित्यिक स्रोत

- ☞ लिखित स्रोत को साहित्यिक स्रोत कहते हैं। प्राचीन इतिहास की जानकारी का यह सबसे बड़ा स्रोत है।
- **गैर धार्मिक स्रोत**— इसका संबंध किसी भी धर्म से नहीं रहता है।
  1. **मनुस्मृति** — इसकी रचना मनु ने किया। यह राजनीति से संबंधित पहली पुस्तक है। इसमें महिला एवं दलितों को नीचे दिखाया गया है।
  2. **अर्थशास्त्र**— इसका संबंध राजनीति से है। इसकी रचना चाणक्य ने किया। अर्थशास्त्र मैकियावेली की रचना The Prince के समान है। चाणक्य को भारत का मैकियावेली कहते हैं। अर्थशास्त्र का प्रकाशन समाशास्त्री द्वारा किया गया। इसमें 15 अधिकरण हैं।

3. **पंचतंत्र**– विष्णुशर्मा की पुस्तक पंचतंत्र को 15 भारतीय तथा 40 विदेशी भाषा में अनुवादित किया गया है।
4. **मृक्षकटिकम्**– शूद्रक ने मृक्षकटिकम् पुस्तक लिखी। जिसका अर्थ है मिट्टी का खिलौना।
5. **राजतरंगिणी**– कल्हण की पुस्तक राजतरंगिणी में काश्मीर का इतिहास है।

#### 6. कादम्बरी तथा हर्षचरित– बाणभट्ट

- **धार्मिक स्रोत**– वैसी पुस्तक जिसका संबंध किसी-न-किसी धर्म से रहता है उसे धार्मिक स्रोत कहते हैं।
- **गैर-ब्राह्मण**– वैसे स्रोत जिसका संबंध हिन्दु धर्म से नहीं रहता, उसे गैर-ब्राह्मण कहते हैं।
- **जैन-साहित्य**– यह प्राकृत भाषा में मिले हैं, इन्हें आगम कहते हैं।

**उदाहरण**– 12 अंग, 12 उपांग, अचरांग सूत्र, भगवति सूत्र, कल्पसूत्र, आदि-पुराण।

**अचरांग सूत्र**– इनमें जैन भिक्षुओं के आचार नियम व विधि निषेधों का विवरण।

**भगवति सूत्र**– इसमें महावीर के जीवन की चर्चा है।

**न्यायधम्मकहा सूत्र**– महावीर के शिक्षाओं का संग्रह।

- **बौद्ध साहित्य**– इन ग्रंथों का संबंध बौद्ध धर्म से है। बौद्ध साहित्य पाली भाषा में मिले हैं। जातक ग्रन्थ में महात्मा बुद्ध के पूर्व जन्म की 200 कहानियाँ हैं।
- ☛ ललित विस्तार में महात्मा बुद्ध की पूरी जीवनी है।
- ☛ अंगुत्तर निकाय में 16 महाजनपद की चर्चा है।
- ☛ बौद्ध धर्म की सबसे पवित्र पुस्तक त्रिपिटक है, जो 3 पुस्तकों का समूह है।

1. **सूत पिटक**– यह सबसे बड़ा पिटक है। इसे बौद्ध धर्म का इंसाइक्लोपिडिया कहते हैं।
2. **विनय पिटक**– यह सबसे छोटा पिटक है। इसमें बौद्ध धर्म के प्रवेश की चर्चा है।
3. **अभिधम्म पिटक**– इसमें महात्मा बुद्ध के दार्शनिक विचारों की चर्चा है।

- **ब्राह्मण ग्रंथ**– वैसा ग्रंथ जिसका संबंध हिंदु धर्म से है उसे ब्राह्मण ग्रंथ कहते हैं।

- ☛ सभी ब्राह्मण ग्रंथों में सबसे विशाल शतपथ ब्राह्मण ग्रंथ है।

**Note** :– वैदिक काल में जौ को यव, गेहूँ को गोधून तथा चावल को ब्रीही कहा जाता था।

## वेद

- ☛ वेद का शाब्दिक अर्थ 'ज्ञान' होता है। यह सबसे प्रमुख ब्राह्मण ग्रंथ है।

|    | वेद      | ज्ञानी   | ब्राह्मण ग्रन्थ | उपवेद           | ज्ञानी      |
|----|----------|----------|-----------------|-----------------|-------------|
| 1. | ऋग्वेद   | होतृ     | कौशिकीय, एतरेय  | आयुर्वेद        | प्रजापति    |
| 2. | सामवेद   | उद्गाता  | पंचवीश          | गंधर्ववेद, नारद |             |
| 3. | यजुर्वेद | अध्वर्यु | तैत्तिरीय, शतपथ | धनुर्वेद        | विश्वामित्र |
| 4. | अथर्ववेद | ब्रह्मा  | गोपथ            | शिल्पवेद        | विश्वकर्मा  |

- ☛ वेद-वेदों की रचना ईश्वर ने की है। अतः वेद को अपौरुषेय कहा जाता है।
- ☛ गुप्तकाल में कृष्ण द्वैवायन व्यास ने वेदों का संकलन (Collection) किया।
- ☛ प्रारम्भ में वेदों की संख्या- 3 (ऋग्वेद, सामवेद तथा यजुर्वेद) थी, अतः वेद को त्रयी कहा जाता है।
- ☛ अथर्ववेद को बाद में शामिल किया गया इसलिए इसे वेदत्रयी में नहीं रखते हैं।

1. **ऋग्वेद**– इसका शाब्दिक अर्थ मंत्रों/ऋचाओं का संग्रह होता है। इसमें 10 मंडल, 1028 सुक्त तथा 10,580 ऋचाएँ हैं। ऋचाओं की अधिकता के कारण ही इसे ऋग्वेद कहते हैं।

- ☛ यह सबसे प्राचीन एवं सबसे बड़ा वेद है। इसमें गायत्री मंत्र की चर्चा है, जो सूर्य भगवान को समर्पित है।

- ☛ पहली बार शूद्र का प्रयोग ऋग्वेद में हुआ।

- ☛ ऋग्वेद का पहला तथा 10वाँ मंडल बाद में लिखा गया है जबकि सबसे पहले 7वाँ मंडल लिखा गया है।

- ☛ 9वें मंडल में सोम देवता की चर्चा है। यह जंगल के देवता थे।

- ☛ ऋग्वेद के ज्ञानी को होतृ कहते हैं।

- ☛ ऋग्वेद का उपवेद 'आयुर्वेद' है। जिसमें चिकित्सा की चर्चा है। इसके ज्ञानी को प्रजापति कहते हैं।

- ☛ इसमें दसराज्ञ युद्ध की चर्चा है।

2. **सामवेद**– साम का शाब्दिक अर्थ 'गान' होता है। इसमें 1549 मंत्र हैं। किन्तु वास्तव में 75 मंत्र ही सामवेद के हैं। बाकी मंत्रों को ऋग्वेद से ग्रहण कर लिया है।

- ☛ सामवेद में भारतीय संगीत के सात स्वर सा, रे, गा, मा, पा, धा, नी की चर्चा है।

- ☛ ये संगीत यज्ञ के समय गाये जाते हैं।

- ☛ सामवेद के ज्ञानी को 'उद्गाता' कहते हैं।

- ☛ सामवेद का उपवेद 'गंधर्ववेद' है।

- ☛ गंधर्ववेद के ज्ञानी को 'नारद' कहते हैं।

- ☛ भारतीय संगीत का जन्म 'सामवेद' से हुआ है।

3. **यजुर्वेद**– इसमें 1990 मंत्र हैं। इसमें युद्ध एवं कर्म-कांड की चर्चा है।

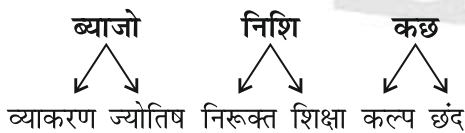
- ☞ यह एकमात्र वेद है जो गद्य और पद्य दोनों में है।
- ☞ इसे 2 भाग में बाँटते हैं—
  - (i) कृष्ण यजुर्वेद (गद्य)
  - (ii) शुक्ल यजुर्वेद (पद्य)
- ☞ इसके ज्ञानी को अध्वर्यु कहते हैं। यजुर्वेद का उपवेद धनुर्वेद है। धनुर्वेद के ज्ञानी को विश्वामित्र कहते हैं।
- 4. **अथर्ववेद**— इसकी रचना सबसे बाद में उत्तर वैदिक काल में हुई। इसमें 5849 मंत्र तथा 731 सूक्त हैं।
- ☞ इसमें जादू-टोना, वशीकरण, रोग-निवारक औषधि, इत्यादि की चर्चा है।
- ☞ अथर्ववेद का उपवेद शिल्पवेद है।
- ☞ अथर्ववेद के ज्ञानी को ब्रह्मा कहा जाता है।
- ☞ अथर्वा ऋषि ने इस वेद को लिखा है।
- ☞ अथर्ववेद में ही सर्वप्रथम मगध, अंग और राजा परिक्षित के बारे में उल्लेख किया गया है।

### उपवेद

- ☞ वेदों को अच्छी तरह से समझने के लिए उपवेद की रचना किया गया। सभी वेद के अपने-अपने उपवेद हैं।
- 1. **आयुर्वेद**— ऋग्वेद का उपवेद है।
- 2. **गंधर्ववेद**— सामवेद का उपवेद है।
- 3. **धनुर्वेद**— यजुर्वेद का उपवेद है।
- 4. **शिल्पवेद**— अथर्ववेद का उपवेद है।
- ☞ **आरण्यक**— वैसी पुस्तक जिसकी रचना जंगल में की गई हो, आरण्यक कहलाता है। इसकी संख्या 7 है।
- ☞ अथर्ववेद को छोड़कर सभी पुस्तक आरण्यक हैं।

### वेदांग

- ☞ वेदों को भलि-भाँति समझने के लिए वेदांग की रचना की गई।
- वेदांग की संख्या 6 हैं—



- व्याकरण** = व्याकरण (वेद के मुख)
- ज्योतिष** = खगोल विज्ञान (वेद की आंखें)
- निरुक्त** = निरुक्त शास्त्र (वेदों का कान)
- शिक्षा** = शिक्षा शास्त्र (वेद का मस्तिष्क) = उच्चारण का विज्ञान
- कल्प** = कल्प शास्त्र (कर्मकांड का प्रतिपादन)
- छंद** = छंद शास्त्र (वेद मंत्रों के सही-सही उच्चारण)
- ☞ व्याकरण की पहली पुस्तक पाणिनी की अष्टाध्यायी थी।

- ☞ ज्योतिष की सबसे बड़ी पुस्तक महाभाष्य है।
- ☞ निरुक्त की रचना यास्क महोदय ने किया। जिसका अर्थ निर्वचन होता है अर्थात् वैदिक शब्दों का अर्थ व्यवस्थित रूप से समझना ही निरुक्त का प्रयोजन है।
- ☞ गौतम ऋषि ने कल्प की रचना किया।
- ☞ वेद-वेदांग पढ़ाने वाले अध्यापक को उपाध्याय कहते हैं।

### पुराण

- ☞ इसकी रचना महर्षि लोमहर्ष तथा उग्रश्रवा ने किया। इसकी संख्या 18 है।
- ☞ इसे पाँचवा वेद या वेदों का वेद कहते हैं।
- ☞ इससे प्राचीन राजवंशों की जानकारी मिलती है।
- ☞ स्त्री और शूद्र को इसे पढ़ने की अनुमति नहीं थी। वे इसे सुन सकते थे।
- **विष्णु पुराण**— इससे मौर्य वंश की जानकारी मिलती है।
- **मत्स्य पुराण**— इससे सातवाहन वंश की जानकारी मिलती है। इसमें विष्णु भगवान के 10 अवतारों की चर्चा है।
- **वायु पुराण**— इसमें गुप्त वंश की जानकारी मिलती है। इसमें लिखा है कि समुद्रगुप्त का घोड़ा तीन समुद्र का पानी पीता था।

### उपनिषद्

- ☞ इसका अर्थ होता है, गुरु के समीप बैठकर ज्ञान प्राप्त करना। यह ब्राह्मणों के विरुद्ध राजपूतों की एक प्रक्रिया मानी जाती है।
- ☞ उपनिषद् 108 हैं, किन्तु 13 उपनिषद् को ही मान्यता प्राप्त है।
- **वृहद् नारायण उपनिषद्**— यह सबसे बड़ा तथा प्राचीन है।
- **कठोपनिषद्**— इसमें यम एवं नचिकेता की चर्चा है। इसमें 'ऊँ' शब्द के महत्व को दर्शाया गया है।
- **मुंडकोपनिषद्**— इसमें 'सत्यमेव जयते' की चर्चा है।
- **श्वेताश्वरूपनिषद्**— इसमें सत्यम् शिवम् और सुन्दरम् की चर्चा है।
- **जबालोपनिषद्**— इसमें ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश अर्थात् त्रिमूर्ति की चर्चा है। सर्वप्रथम 4 आश्रमों के बारे में उल्लेख इसी उपनिषद् में किया गया है।
- **अलोपनिषद्**— यह सबसे बाद का उपनिषद् है। इसकी रचना अकबर के साथ हुई।
- Note :** - उपनिषद् मूलतः दर्शन पर आधारित है।
- ☞ यजुर्वेद के प्रमुख उपनिषद्— कापोपनिषद्, मैत्रायनी और श्वेताश्वरूपनिषद्।
- ☞ सामवेद के प्रमुख उपनिषद्— छंदोग्य तथा जैमिनीय।
- ☞ अथर्ववेद के प्रमुख उपनिषद्— मुंडकोपनिषद्, प्रश्नोपनिषद् तथा मांडुक्योपनिषद्।

## प्रमुख साहित्य

- ☞ स्मृति साहित्य में प्राचीन राजवंशों की जानकारी मिलती है। स्मृति साहित्य की संख्या 36 हैं (विष्णु स्मृति + नारद स्मृति) से गुप्त काल की जानकारी मिलती है।
- ☞ मनुस्मृति तथा याज्ञवल्क्य स्मृति से मौर्य काल की जानकारी मिलती है।
- ☞ याज्ञवल्क्य स्मृति में जुआ खेलने को उचित बताया गया।
- ☞ मनुस्मृति को धर्म शास्त्र कहते हैं। इसमें ऊँची जाति को वरीयता दी गई है। दलित तथा महिला को नीचे दिखाया गया है।
- ☞ इसमें विवाह के लिए पुरुष की आयु 25 वर्ष तथा लड़की की आयु 12 वर्ष बताया गया है।
- ☞ इसमें 8 प्रकार के विवाह की चर्चा है।
- ☞ संस्कार की संख्या 16 होती है।
- ☞ गर्भाधान प्रथम संस्कार होता है।
- ☞ दाह संस्कार अंतिम संस्कार (अंत्येष्टि) होता है।
- ऋण तीन प्रकार के होते हैं—
  - (i) देवऋण— धार्मिक अनुष्ठान कर इससे मुक्ति मिलती थी।
  - (ii) ऋषिऋण— इसमें अपने पुत्र को शिक्षित कर इससे मुक्ति मिलती थी।
  - (iii) पितृऋण— संतान उत्पन्न कर इस ऋण से छुटकारा पाया जा सकता था।
- पुरुषार्थ 4 प्रकार के होते हैं—
  - (i) धर्म— सामाजिक नियम व्यवस्था
  - (ii) अर्थ— आर्थिक संसाधन
  - (iii) काम— शारीरिक सुख-भोग
  - (iv) मोक्ष— आत्मा का उद्धार

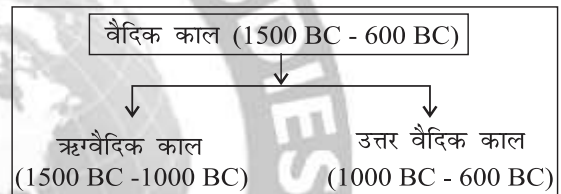
## महाकाव्य

- महाकाव्य की संख्या 2 है—
  1. रामायण
  2. महाभारत
- 1. **रामायण**— इसकी रचना महर्षि वाल्मीकि ने की। प्रारम्भ में इसमें 12000 श्लोक थे, किन्तु वर्तमान में 24000 श्लोक हैं। इसे गुप्तकाल में पूरा किया गया था।
  - ☞ अकबर के समय रामायण को फारसी भाषा में अनुवाद बदायुनी ने किया।
  - ☞ इसे आदिकाव्य की संज्ञा दी जाती है।
  - ☞ रामायण महाकाव्य महाभारत की अपेक्षा अधिक ठोस है।
- 2. **महाभारत**— यह विश्व का सबसे बड़ा महाकाव्य है। इसकी रचना वेदव्यास ने की। इसका प्रारम्भिक नाम जयसंहिता था। प्रारंभ में 8800 श्लोक थे।
  - ☞ वर्तमान में 1 लाख श्लोक है अब इसे शतसाहस्री संहिता अर्थात् महाभारत कहते हैं।

- ☞ महाभारत में कथोप कथाएँ के साथ उपदेश भी हैं।
- ☞ महाभारत के खंडों को पर्व कहा जाता है। इसमें कुल 18 पर्व हैं। सबसे महत्वपूर्ण पर्व भीष्म पर्व है। जिसमें अर्जुन तथा कृष्ण के वार्तालाप की चर्चा है। भीष्म-पर्व को भागवत् गीता या गीता कहा जाता है।
- ☞ अकबर के समय महाभारत को फारसी भाषा में रज्जनामा के नाम से अनुवाद किया गया था।

## वैदिक काल

- ☞ इस काल में वेदों की रचना की गई। अतः इसे वैदिक काल कहा गया। यह पूर्णतः ग्रामीण सभ्यता थी।
- ☞ वैदिक काल 1500 ई.पू. से 600 ई.पू. तक था।
- **संक्रमण काल**— सिंधु सभ्यता का पतन 1750 ई. तक हो गया। इसके बाद अगले 250 साल में धीरे-धीरे वैदिक सभ्यता का विकास प्रारंभ हुआ। इसी 250 साल को संक्रमण काल कहते हैं।
- **वैदिक काल को 2 भागों में बाँटते हैं—**

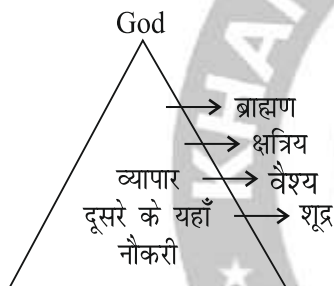


- **ऋग्वैदिक काल**— यह काल प्राचीन था। इस समय जाति का निर्धारण कर्म के आधार पर किया जाता था। यह काल 1500 ई.पू. से 1000 ई.पू. तक था।
- **उत्तर वैदिक काल**— इसका विकास 1000-600 ई. पू. तक हुआ। इस काल में जाति का निर्धारण वंश के आधार पर होने लगा।
  - ☞ उत्तर वैदिक काल में लोहे की खोज हुई।
  - ☞ भारत में लोहे का प्रचलन पहली बार 1000 ई. पूर्व में आरम्भ माना जाता है।
  - ☞ वर्तमान में भारत में लोहे का पहला साक्ष्य अतिरंजीखेरा में देखने को मिला है।
  - ☞ वैदिक समाज के निर्माता आर्य थे।
  - ☞ आर्य मध्य एशिया (मैक्समूलर) से आए थे और भारत में सप्त सैधव प्रदेश में (सात नदियों का प्रदेश या पंजाब, हरियाणा) बस गए।
  - ☞ आर्यों की भाषा संस्कृत थी जो देवताओं की भाषा थी, जिस कारण आर्य स्वयं को श्रेष्ठ कहते थे। जिन्हें संस्कृत नहीं आती थी, अर्थात् भारत में मूल निवासियों को अनार्य या निम्न कहा जाता था।
  - ☞ दक्षिण भारत का आर्यीकरण अगस्त ऋषि ने किया।



- ☞ उत्तर भारत का आर्यीकरण राजा विदेह के पुरोहित (पंडित) गौतम राहुगढ़ ने किया। किन्तु ये गंगा नदी को पार करके पटना नहीं पहुँच पाए जिस कारण अथर्ववेद में पाटलीपुत्र को अछूतों की भूमि कही गई है और यहाँ के गंगा जल को पवित्र नहीं माना गया है।
- ☞ इस समय सबसे प्रिय पशु गाय थी। जो समृद्धि का संकेत थी। गाय की हत्या करने पर मृत्युदंड दिया जाता था।
- ☞ राजा का मुख्य कार्य गाय के लिए युद्ध करना (गविष्टि) था। उस समय अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि था।
- ☞ परूषणी नदी (रावी) के तट पर आर्य तथा अनार्य राजाओं के बीच युद्ध हुआ। इस युद्ध में आर्य विजयी हुए। इस युद्ध को दशराज का युद्ध भी कहते हैं। इसकी चर्चा ऋग्वेद के 7वें मंडल में है।
- ☞ आर्यों के विजयी होने के कारण ही इस क्षेत्र का नाम आर्यावर्त पड़ा। आर्यों में सबसे महान राजा भरत था। जिसके नाम पर आर्यावर्त का नाम भारत रखा गया।

### वैदिक काल की वर्ण व्यवस्था



- ☞ वैदिक काल में समाज को चार वर्गों में बांटा गया।
- 1. **ब्राह्मण**- ये पूजा-पाठ तथा शिक्षा-दिक्षा का कार्य करते थे। इनकी संख्या सबसे कम थी।
- 2. **क्षत्रिय**- ये रक्षा का कार्य करते थे अर्थात् सैनिक होते थे। इनकी संख्या वैश्य से कम थी।
- 3. **वैश्य (व्यवसाय)**- ये व्यवसाय करते थे। इनकी संख्या शूद्र से कम थी।
- 4. **शूद्र**- ये दूसरों के यहाँ सेवा करते थे अर्थात् नौकरी करते थे। इनकी संख्या सर्वाधिक थी।

### वैदिक काल की सामाजिक जीवन

- ☞ वैदिक काल में जीवन को चार आश्रमों (अवस्थाओं) में बांटा गया था।
- ☞ जन्म से 5 वर्ष की अवस्था को बाल्यावस्था या शिशु अवस्था कहा गया। इसके बाद जीवन की चार अवस्थाएं प्रारंभ हुई।
- **अवस्थाओं की संख्या 4 हैं-**
- 1. **ब्रह्मचर्य (5-25 वर्ष)** - यह विद्यार्थी अवस्था था। इसमें जंगल में गुरु से शिक्षा ली जाती थी। विद्यार्थी गुरु के साथ ही रहता था।

2. **गृहस्थ जीवन (25-50 वर्ष)**- इसमें विवाह तथा पारिवारिक जीवन का निर्वहन किया जाता था।
3. **वानप्रस्थ (50-75 वर्ष)**- इसमें सामाजिक दायित्वों का निर्वहन किया जाता था।
4. **सन्यासी (75 वर्ष)**- यह 75 वर्ष के बाद की अवस्था थी। इसमें धार्मिक क्रियाकलापों को किया जाता था।

### वैदिक काल की नदियाँ

| प्राचीन नाम | आधुनिक नाम | प्राचीन नाम | आधुनिक नाम |
|-------------|------------|-------------|------------|
| सिन्धु      | इन्डस      | कुंभा       | काबुल      |
| वितस्ता     | झेलम       | दृषद्वती    | घग्घर      |
| सुवस्तु     | स्वात्     | परूषणी      | रावी       |
| गोमती       | गोमल       | शतुद्री     | सतलज       |
| सदानीरा     | गंडक       | आस्किनी     | चिनाब      |
| विपाशा      | व्यास      | सुषोमा      | सोहन       |
| कुमु        | कुर्रम     | विपाशा      | व्यास      |

- ☞ वैदिक साहित्य में सर्वाधिक चर्चा सिंधु नदी की है क्योंकि यह सबसे महत्वपूर्ण नदी थी।

### वैदिक काल के देवता

- (i) **इन्द्र**- यह सबसे महत्वपूर्ण थे। इसकी चर्चा 250 बार हुई है। इन्हें युद्ध तथा वर्षा का देवता कहते हैं। इन्हें पुरंदर भी कहते हैं।
- (ii) **अग्नि**- इसकी चर्चा 200 बार है।
- (iii) **वरुण**- वायु के देवता।
- (iv) **सोम**- जंगल के देवता।
- (v) **मारुत**- तूफान के देवता।
- (vi) **रौद्र**- यह सबसे क्रोध वाले देवता थे। इन्हें पशुओं की देवता कहते हैं।
- (vii) **विष्णु**- संरक्षक एवं पालनकर्ता।
- (viii) **पुषण**- पशुओं का देवता।
- **गविष्टि का अर्थ होता है-** गाय के लिए किया गया युद्ध।
- **सीता का अर्थ होता है-** हल से जोती गई जमीन पर पड़ा निशान।

### वैदिक काल की प्रमुख देवी

- (i) **ऊषा**- प्रभात की देवी
- (ii) **अरण्यणी**- जंगल की देवी
- (iii) **इला**- संकट हरने वाली
- (iv) **अदिति**- सभी देवताओं की देवी



## वैदिक काल की सामाजिक व्यवस्था

- ☞ इस समय सबसे बड़ा पद राजा का होता था। जिसे जनता चुनती थी। राजा किसी भी निर्णय को लेने से पहले विभिन्न समितियों में बैठकर इसकी चर्चा करता था।
- **वैदिक काल में तीन प्रमुख संगठन थी-**
  - (i) **सभा**- यह निम्न साधारण लोगों का संगठन था। इसकी चर्चा 8 बार की गई है।
  - (ii) **समिति**- यह उच्च वर्ग के लोगों का संगठन था। इसकी चर्चा 9 बार हुई है।
  - (iii) **विद्वथ**- यह सबसे महत्वपूर्ण संगठन था। इसकी चर्चा 122 बार हुई है।
- Note :-** सभा तथा विद्वथ में भाग लेने की अनुमति महिलाओं को भी थी।
- ☞ वैदिक समाज की सबसे छोटी इकाई गाँव थी, जिसके मालिक को ग्रामिक कहते थे।
- ☞ सबसे बड़ी इकाई जन होती थी, जिसके मालिक को राजन कहते थे।
- ☞ उत्तर वैदिक काल में लोहे की खोज हो जाने के कारण कृषि तथा अर्थव्यवस्था में तेजी से परिवर्तन होने लगा और समाज धीरे-धीरे ग्रामीण सभ्यता से नगरीय सभ्यता की ओर अग्रसर होने लगा। जन का आकार बढ़कर जनपद हो गया और यह जनपद आगे चलकर महाजनपद का रूप ले लिया।
- ☞ महाजनपद का काल सिन्धु सभ्यता के बाद दूसरी नगरीय सभ्यता थी।
- ☞ भारत में कुल 16 महाजनपद हुए हैं जिसकी चर्चा बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तर निकाय में है।
- ☞ 16 महाजनपद में सबसे समृद्ध तथा सबसे शक्तिशाली महाजनपद, मगध था।
- ☞ वैदिक काल में कर को बलि कहते थे। जबकि देवताओं को खुश करने के लिए पशु बलि दी जाती थी।
- **इस समय घड़ा, मनका, या मृद्भांड 4 प्रकार के होते थे-**
  1. धूसर मृद्भांड
  2. काला मृद्भांड
  3. लाल मृद्भांड
  4. मिश्रित मृद्भांड

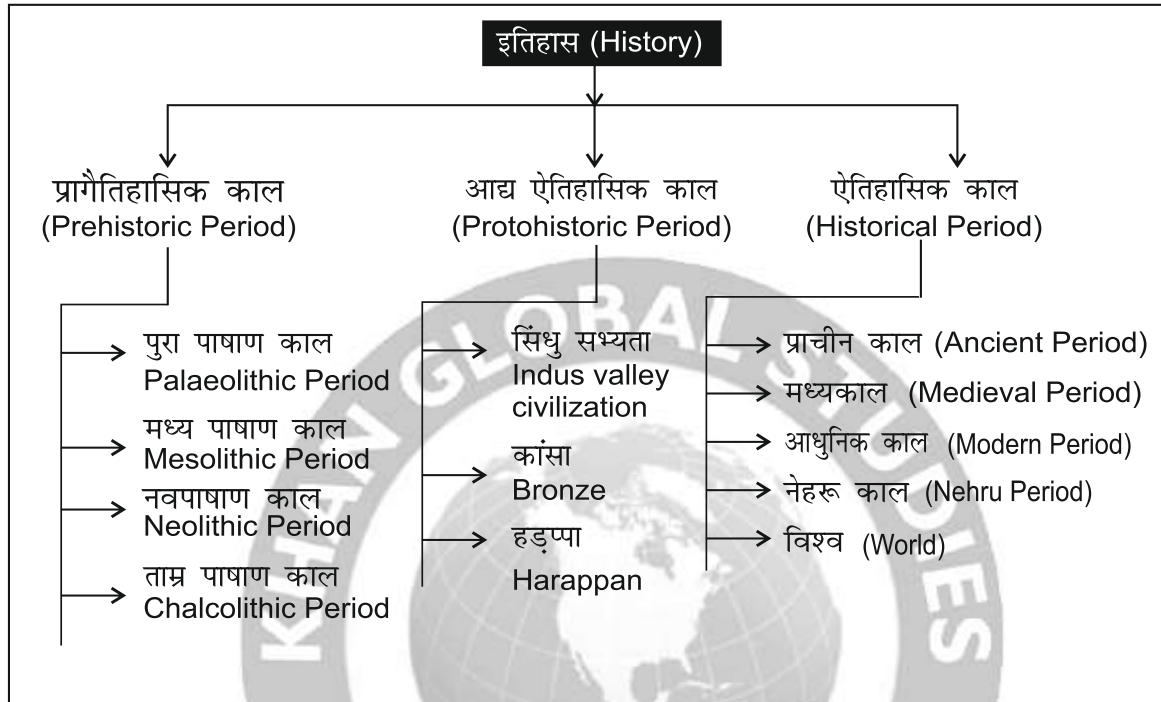
- ☞ सर्वाधिक प्रचलन धूसर मृद्भांड का था। जिस पर चित्र बने होते थे, जिसके कारण इसे चित्रित धूसर मृद्भांड भी कहते हैं।
- ☞ मिश्रित मृद्भांड लाल एवं काला दोनों का मिश्रण होता था।
- **इस समय 3 प्रकार के यज्ञ का प्रचलन था-**
  - (i) **अवशमेघ यज्ञ**- इसमें घोड़ा को यज्ञ करके छोड़ दिया जाता था। जहाँ तक घोड़ा जाता था वहाँ तक का क्षेत्र राजा ले लेता था। घोड़ा को रोकने वाले व्यक्ति को राजा से युद्ध करना पड़ता था।
  - (ii) **वाजपेय यज्ञ**- यह राजा के शक्ति प्रदर्शन के लिए होता था। इसमें रथों की रेस लगायी जाती थी।
  - (iii) **राजसूय यज्ञ**- राज्याभिषेक के समय इस यज्ञ को किया जाता था।
- ☞ उत्तर वैदिक काल में जब अति रंजीखेरी से लोहे की खोज हुई, तो उत्तर वैदिक काल की अर्थव्यवस्था पशुपालन के स्थान से कृषि पर आधारित हो गई।
- **वैदिक काल में षष्ठ दर्शन दिए गए-**
  - (i) **सांख्यदर्शन** - कपिल
  - (ii) **न्याय दर्शन** - गौतम
  - (iii) **योग दर्शन** - पतंजलि
  - (iv) **वैशेषिक दर्शन** - कणाद
  - (v) **उत्तर मिमांसा** - वादरायण
  - (vi) **पूर्वी मिमांसा** - जैमिनी
- Note :-** गौतम बुद्ध के अधिकतर उपदेश सांख्यदर्शन से लिए गए हैं।
- **सिंधु सभ्यता तथा वैदिक सभ्यता में अंतर-**

| सिंधु/हड़प्पा सभ्यता        | वैदिक सभ्यता             |
|-----------------------------|--------------------------|
| 1. नगरीय थी                 | ग्रामीण थी               |
| 2. मातृ सतात्मक             | पितृ सतात्मक             |
| 3. प्रमुख पशु बैल           | प्रमुख पशु गाय           |
| 4. नियोजन                   | सामाजिक नियोजन           |
| 5. युद्ध से परिचित नहीं थे  | गाय के लिए युद्ध होता था |
| 6. कांसे की खोज             | लोहे की खोज              |
| 7. कृषि + व्यापार           | कृषि + पशुपालन           |
| 8. शिव तथा मातृदेवी की पूजा | इन्द्र महत्वपूर्ण देवता  |

□□□

# 01.

## प्रागैतिहासिक काल (Prehistoric History)



- ☞ अतीत का अध्ययन **इतिहास** कहलाता है।
- ☞ इतिहास के जनक **हेरोडोटस** को कहते हैं।
- ☞ मानवजाति का पालना **अफ्रीका महादेश** को कहते हैं।
- ☞ जबकि सभ्यता का पालना **एशिया महादेश** को कहते हैं।
- ☞ **इतिहास को 3 खण्डों में बाँटते हैं-**

**1. प्रागैतिहासिक काल (Prehistoric History)-** इतिहास का वह समय जिसमें मानव लिखना पढ़ना नहीं जानता था। इसकी जानकारी केवल पुरातात्विक साक्ष्य से मिली है। इसके अंतर्गत पाषाण काल को रखते हैं।

### पाषाण काल (Stone Age)

- ☞ वह समय जब मानव पत्थर के औजार एवं हथियार को उपयोग करता था, पाषाण काल कहलाता है।
- ☞ भारत में सर्वप्रथम 1863 ई० में **रॉबर्ट ब्रुस फ्रुट** ने पाषाणकालीन सभ्यता की खोज की।
- ☞ भारतीय पुरातत्व का पिता सर **अलेक्जेंडर कनिंघम** है।
- ☞ भारत का पुरातात्विक संग्रहालय **इंदिरा गांधी मानव संग्रहालय** है जो संस्कृति मंत्रालय के अधीन है।
- ☞ मिलने वाले धातु के आधार पर नामकरण **क्रिश्चियन थॉमस** ने किया।

- ☞ लिखावट के आधार पर नामकरण **जॉन ब्रूस** ने किया।

☞ **पाषाण काल को 4 भागों में बाँटा गया है-**

**1. पुरापाषाण काल (Palaeolithic Period) ( 20 लाख ई०पू० से 12,000 ई०पू० तक )-**

यह इतिहास का सबसे प्रारम्भिक समय था। इस समय के मानव को आदि मानव कहा जाता है। इस समय का मानव खानाबदोश (खाद्य संग्राहक) अर्थात् उसके जीवन का मुख्य उद्देश्य जानवरों की भाँति ही अपना पेट भरना था। इस समय के मानव की सबसे बड़ी उपलब्धी आग की खोज थी।

- ☞ इस समय मानव पत्थर के बड़े-बड़े औजारों का इस्तेमाल शिकार करने के लिए करते थे। इसी समय मानव ने चित्रकारी करना प्रारंभ किया।

☞ भिम्बेटका के गुफाओं में **पुरा पाषाण काल** के चित्र देखने को मिलते हैं। जो मध्यप्रदेश के अब्दुलागंज (रायसेन) में स्थित है।

**2. मध्य पाषाण (Mesolithic Period) ( 12,000 ई०पू० से 10,000 ई०पू० तक )-**

- ☞ इस काल के बारे में सर्वप्रथम जानकारी **करसाइल** ने 1867 ई० में दिया।

- ☞ यह पुरापाषाण के बाद का काल था। इस समय मानव के हथियार छोटे आकार के थे, इसलिए इन्हें **माइक्रोलिथ** कहते हैं। इस समय के मानव की सबसे प्रमुख कार्य अंत्योष्टि (अंतिम संस्कार) कार्यक्रम था।
- ☞ इसी काल में मानव के अस्थिपंजर का सबसे पहला अवशेष प्रतापगढ़ (UP) के **सराय नाहर** तथा **महदहा** नामक स्थान से प्राप्त हुआ।
- 3. नव या उत्तर पाषाण काल (Neolithic Period) ( 10,000 ई०पू० से 3000 ई०पू० तक )-**
- ☞ इस काल के बारे में सर्वप्रथम जानकारी सर जॉन लुबाक ने 1865 ई० में प्रस्तुत किया।
- ☞ इस काल में मानव ने स्थायी आवास बना लिया था। साथ ही कृषि तथा पशुपालन भी प्रारम्भ कर दिया। मानव ने इस काल में **पहिया** तथा **मनका ( घड़ा )** की खोज की।
- ☞ कर्नाटक के मैसूर के पास संगनकल्लू नामक नवपाषाण कालीन पुरास्थल से **राख के टीले** प्राप्त हुए हैं।
- ☞ पशुपालन का साक्ष्य भारत में आदमगढ़ (MP) तथा बागौर (राजस्थान) से प्राप्त हुआ है।

**Note :-**

- 1. मेहरगढ़-** यह पाकिस्तान के ब्लूचिस्तान में स्थित है। यहाँ से सर्वप्रथम 7000 ई० पू० सुलेमान और किर्थर पहाड़ियों के बीच कृषि के साक्ष्य जौ एवं गेहूँ मिली थी।

- 2. बुर्जहोम-** यह काश्मीर में अवस्थित है। यहाँ गर्तावास का प्रमाण मिला है। यहाँ से मालीक के साथ कुत्ते को दफनाने का साक्ष्य मिला है।
- 3. गुफकराल-** यहाँ से मृदभांड का पहला प्रमाण प्राप्त हुआ।
- 4. कोल्डिहवा-** यह उत्तरप्रदेश के बेलनघाटी में स्थित है। यहाँ पर चावल का प्राचीनतम साक्ष्य ( 6000 ई० पू० ) मिला है।
- 5. चिरांद-** यह बिहार के सारण जिले में स्थित है। यहाँ से प्रचूर मात्रा में हड्डी के उपकरण प्राप्त हुए।
- 6. लेहुरादेह-** यहाँ से नवीनतम सबसे प्राचीन चावल का साक्ष्य (9000 ई० पू०-7000 ई० के बीच) प्राप्त हुआ।
- 7. दमदमा-** यहाँ एक ही कब्र से तीन मानव कंकाल मिले हैं।

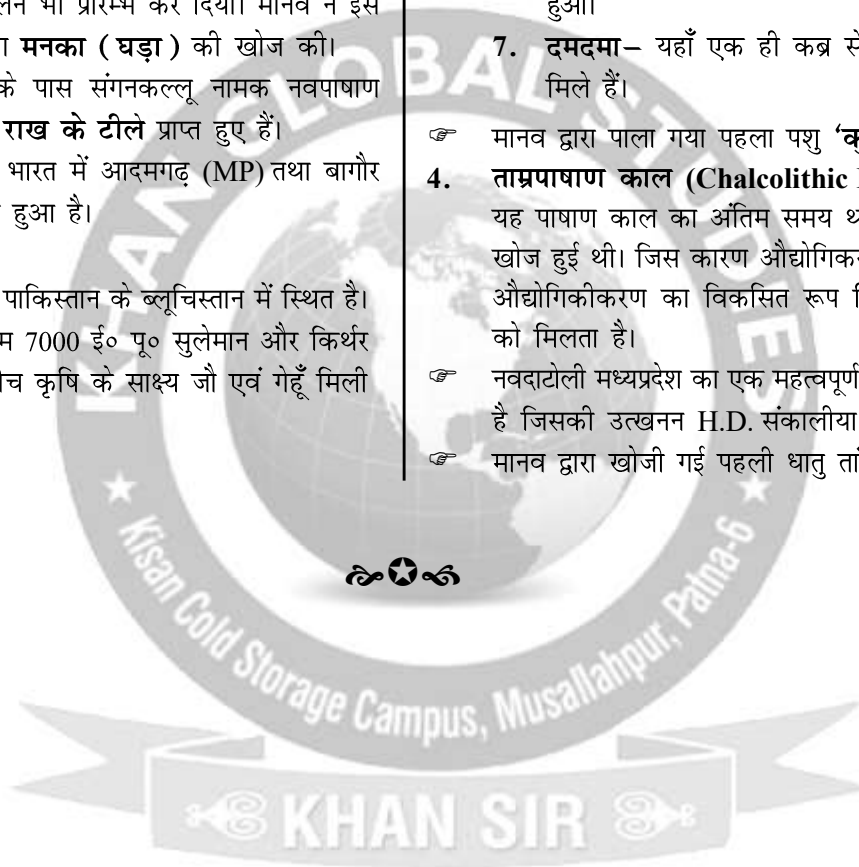
☞ मानव द्वारा पाला गया पहला पशु 'कुत्ता' था।

**4. ताम्रपाषाण काल (Chalcolithic Period)-**

यह पाषाण काल का अंतिम समय था। इस समय तांबे की खोज हुई थी। जिस कारण औद्योगिकरण शुरू हो गया। इसी औद्योगिकीकरण का विकसित रूप सिंधु सभ्यता में देखने को मिलता है।

☞ नवदाटोली मध्यप्रदेश का एक महत्वपूर्ण ताम्रपाषाणिक पुरास्थल है जिसकी उत्खनन H.D. संकालीया ने कराया था।

☞ मानव द्वारा खोजी गई पहली धातु तांबा थी।

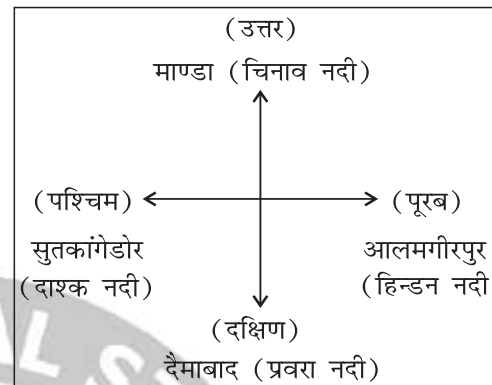


## आद्य-ऐतिहासिक काल (Proto Historic History)

- इस काल में मानव द्वारा लिखी गई लिपि को पढ़ा नहीं जा सकता है, किन्तु लिखित साक्ष्य मिले हैं। इस काल के जानकारी के स्रोत भी पुरातात्विक साक्ष्य ही हैं। इसमें सिंधु सभ्यता को रखते हैं।

### सिंधु सभ्यता (Indus Valley Civilization)

- यह सभ्यता सिंधु नदी के तट पर मिली थी, इसलिए इसे सिंधु सभ्यता कहते हैं। इसकी जानकारी के लिए पहली खुदाई हड़प्पा से हुई थी। अतः इसे हड़प्पा सभ्यता भी कहते हैं।
- सिंधु सभ्यता की जानकारी (Message) चार्ल्स मैशिन ने (1826 ई०) में दिया था।
- सिंधु सभ्यता सर्वेक्षण जेम्स कनिंघम ने (1853 ई०) में किया।
- सिंधु सभ्यता 13 लाख वर्ग किमी. में फैली है।
- लॉर्ड कर्जन ने 1904 ई० में पुरातत्व विभाग की स्थापना किया था। जिसके महानिर्देशक सर जॉन मार्शल थे।
- सिंधु सभ्यता का नामकरण जॉन मार्शल ने किया था।
- सिंधु सभ्यता की पहली खुदाई दयाराम साहनी ने की।
- सिंधु सभ्यता का आकार त्रिभुजाकार है।
- सिंधु सभ्यता विश्व की सबसे पहली शहरी सभ्यता थी।
- इसका विकास 2500 ई० पूर्व से 1750 पूर्व तक हुआ।



1. इसकी पश्चिमी सीमा पाकिस्तान के सुतकांगेडोर में थी, जो दाशक नदी के तट पर थी।
2. इसकी उत्तरी सीमा कश्मीर के मांडा में चिनाव नदी के तट पर थी। इसकी खुदाई जगपति जोशी ने 1982 ई० में किया।
3. इसकी पूर्वी सीमा उत्तर-प्रदेश के आलमगीरपुर में थी। जो हिन्दन नदी के किनारे थी। यज्ञदत्त शर्मा के नेतृत्व में इसका उत्खनन हुआ।
4. इसकी दक्षिणी महाराष्ट्र के दैमाबाद में प्रवरा नदी के तट पर थी। यहाँ से धातु का एक रथ (इक्का गाड़ी) का प्रमाण मिला है।

### सिंधु सभ्यता के प्रमुख स्थल

|     | प्रमुख स्थल       | अवस्थिति                                  | उत्खननकर्ता                     | उत्खनन वर्ष     | नदी             |
|-----|-------------------|-------------------------------------------|---------------------------------|-----------------|-----------------|
| 1.  | हड़प्पा           | मोंटगोमरी जिला, पंजाब (पाकिस्तान)         | दयाराम साहनी और माधोस्वरूप वत्स | 1921 ई०         | रावी            |
| 2.  | मोहनजोदड़ो        | लरकाना जिला, सिंध प्रांत (पाकिस्तान)      | राखालदास बनर्जी                 | 1922 ई०         | सिन्धू          |
| 3.  | कालीबंगा/कालीबंगन | हनुमानगढ़ जिला, राजस्थान (भारत)           | बी०बी० लाल और बी०के० थापर       | 1961-69 ई०      | घग्घर (सरस्वती) |
| 4.  | धौलावीरा          | कच्छ जिला, गुजरात (भारत)                  | रवीन्द्र सिंह विष्ट             | 1990-91 ई०      |                 |
| 5.  | चन्हूदड़ो         | सिंध प्रांत (पाकिस्तान)                   | गोपाल मजुमदार                   | 1931 ई०         | सिन्धु          |
| 6.  | लोथल              | अहमदाबाद जिला, गुजरात (भारत)              | रंगनाथ राव                      | 1955 ई०/1962 ई० | भोगवा           |
| 7.  | कोटदीजी           | सिंध प्रांत का खैरपुर स्थान (पाकिस्तान)   | फजल अहमद खान                    | 1953 ई०         | सिन्धु          |
| 8.  | बनवाली            | हिसार जिला, हरियाणा (भारत)                | रवीन्द्र सिंह विष्ट             | 1974 ई०         | सरस्वती (रंगोई) |
| 9.  | रोपड़             | रोपड़ जिला, पंजाब (भारत)                  | यज्ञदत्त शर्मा                  | 1953-56 ई०      | सतलज            |
| 10. | रंगपुर            | काठियावाड़ जिला, गुजरात, अहमदाबाद (भारत)  | रंगनाथ राव                      | 1953-54 ई०      | मादर            |
| 11. | आलमगीरपुर         | मेरठ जिला, उत्तर प्रदेश (भारत)            | यज्ञदत्त शर्मा                  | 1958 ई०         | हिन्दन          |
| 12. | सुतकांगेडोर       | मकरान में समुद्र तट के किनारे (पाकिस्तान) | ऑरिल स्टार्इन (आर०एल०स्टार्इन)  | 1927 ई०         | दाशक            |
| 13. | सुत्काकोह         | मकरान के समुद्र तट पर (पाकिस्तान)         | जॉर्ज डेल्स                     | 1962 ई०         | शादीकोर         |

### हड़प्पा (1921)

- इसकी खुदाई दयाराम साहनी ने की। यह रावी नदी के तट पर पाकिस्तान के “माऊण्ट गोमरी” जिला में स्थित है।
  - पिग्गट में हड़प्पा और मोहनजोदड़ों को एक विस्तृत साम्राज्य की जुड़वा राजधानी कहा।
  - यहाँ से निम्नलिखित वस्तुएँ मिली हैं—
 

|                          |                         |
|--------------------------|-------------------------|
| (i) कुम्हार का चाक       | (ii) अन्नागार           |
| (iii) श्रमिक आवास        | (iv) मातृदेवी की मूर्ति |
| (v) लकड़ी की ओखली        | (vi) लकड़ी का ताबूत     |
| (vii) R.H. 37 कब्रिस्तान | (viii) हाथी का कपाल     |
| (ix) स्वास्तिक चिन्ह।    |                         |
- Note :-** चाँदी का सर्वप्रथम प्रयोग हड़प्पा सभ्यता के लोगों ने ही किए थे।

### मोहनजोदड़ो (1921)

- इसकी खुदाई सन् 1921 ई. में राखलदास बनर्जी ने की। यह पाकिस्तान के लरकाना जिले में स्थित है। यह सिंधु नदी के तट पर है।
  - यह सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा शहर है।
  - यहाँ मृतकों का एक बहुत बड़ा टिला मिला है।
  - यहाँ से निम्नलिखित वस्तुएँ मिली हैं—
 

|                       |                       |
|-----------------------|-----------------------|
| (i) पुरोहित आवास      | (ii) घर में कुँआ      |
| (iii) विशाल स्नानागार | (iv) अन्नागार         |
| (v) सूती वस्त्र       | (ix) स्वास्तिक चिन्ह। |
| (vi) सबसे चौड़ी सड़क  | (vii) सभागार          |
| (viii) पशुपति शिव     | (ix) काँसे की नर्तकी  |
| (x) ताँबे का ढेर।     |                       |
- Note :** मोहनजोदड़ों का अन्नागार सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा भवन या इमारत है।
- Remark :-** स्वास्तिक मुहर सर्वाधिक मोहनजोदड़ों से मिला है। जिसका निर्माण शिलखड़ी से हुआ था।

### चन्हुदड़ों (1931)

- इसकी खुदाई सन् 1931 ई. में गोपाल मजूमदार ने की।
- यह पाकिस्तान में सिंधु नदी के तट पर स्थित है।
- यह एक मात्र शहर है, जो दुर्ग रहित है।
- यही एक औद्योगिक शहर है।
- यहाँ से निम्नलिखित वस्तुएँ मिली हैं—
 

|                                        |                |
|----------------------------------------|----------------|
| (i) मेक-अप सामग्रियाँ                  | (ii) लिपिस्टिक |
| (iii) शीशा                             | (iv) मनका      |
| (v) गुड़िया                            | (vi) सुई       |
| (vii) अलंकृत ईंट                       |                |
| (viii) बिल्ली का पीछा करता हुआ कुत्ता। |                |

### रोपड़ (1553)

- इसकी खुदाई यज्ञदत्त शर्मा ने 1953 ई. में की। यह पंजाब के सतलज नदी के किनारे स्थित है।
  - यहाँ मानव के साथ-साथ उसके पालतू जानवरों का भी शव मिला है।
- Note :** ऐसा ही शव नव-पाषाण काल में जम्मू-कश्मीर के बुर्जहोम में मिला था।

### बनवाली

- इसकी खुदाई रविन्द्र सिंह ने की। यह हरियाणा में स्थित है। इसके समीप रंगोई नदी है। यहाँ जल-निकासी की व्यवस्था नहीं थी जिस कारण घरों में सोखता मिला है।
- यहाँ की सड़क टेढ़ी-मेढ़ी थी।

### कालीबंगा

- इसका अर्थ होता है “काली मिट्टी की चूड़ी”।
- यहाँ से अलंकृत ईंट, चूड़ी, जोता हुआ खेत हल एवं हवन कुंड मिले हैं।
- यह राजस्थान में सरस्वती (घग्घर) नदी के किनारे हनुमानगढ़ जिले में स्थित है।
- इसकी खोज अलमानंद घोष द्वारा की गई।
- इसकी खुदाई B.K. थापड़ तथा B.B. लाल ने की।

### धौलावीरा

- यह गुजरात में स्थित है। यह सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल है।
- इसकी खुदाई रविन्द्र सिंह बिस्म ने की।

### सुरकोटदा

- यह गुजरात में स्थित है। यहाँ से कलश शवाधान तथा घोड़ों की हड्डी मिली है।
- इसकी खुदाई जगपति जोशी ने करवाया।

### लोथल

- इसकी खुदाई S.R. Rao ने भोगवा नदी के किनारे अहमदाबाद गुजरात में किया।
- यह सिंधु सभ्यता का बंदरगाह स्थल है।
- यहाँ से गोदीवाड़ा का साक्ष्य मिला है।
- यहाँ घर के दरवाजों सड़कों की ओर खुलते थे।
- यहाँ फारस की मुहर मिली है, जो विदेशी व्यापार का संकेत है।
- यहाँ से युगल शवाधान मिला है, जो सतीप्रथा का प्रतीक है।

### रंगपुर

- यह गुजरात में स्थित है।
- यहाँ से धान की भूसी मिली है।
- सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल धौलावीरा है (गुजरात + पाकिस्तान)।
- भारत में सबसे बड़ा स्थल राखीगढ़ी (हरियाणा में) है।
- सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा शहर मोहनजोदड़ो है।

### कृणाल

- यह हरियाणा के हिसार जिला में स्थित है।
- यहाँ से चाँदी के दो मुकूट मिला है।

### सिंधु सभ्यता की विशेषताएँ

- सिंधु सभ्यता एक नगरीय (शहरी) सभ्यता थी।
- यहाँ की सड़क एक-दूसरे को समकोण पर काटती है, तथा ये पूरब-पश्चिम दिशा में थी, जिससे हवा द्वारा सड़क स्वतः



साफ हो जाती थी।

- ☞ नलियाँ ढकी हुई थी।
- ☞ अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि था।
- ☞ इसका व्यापार विदेशों से होता था।

| वस्तुओं का आयात | किस प्रदेश से?             | वस्तुओं का आयात | किस प्रदेश से? |
|-----------------|----------------------------|-----------------|----------------|
| सोना            | अफगानिस्तान, ईरान, कर्नाटक | गोमेद           | सौराष्ट्र      |
| चाँदी           | अफगानिस्तान, ईरान          | लाजवर्द         | मोसोपोटामिया   |
| ताँबा           | ब्लूचिस्तान, खेतड़ी, ओमान  | सीसा            | ईरान           |
| टिन             | ईरान, अफगानिस्तान          |                 |                |

- ☞ **सिंधु सभ्यता का समाज 4 वर्गों में बँटा हुआ था—**
  - विद्वान
  - योद्धा
  - व्यापारी एवं शिल्पकार
  - श्रमिक
- ☞ इनका समाज मातृ सत्तात्मक था।
- ☞ इनकी लिपि भाव चित्रात्मक थी, जिसे पढ़ा नहीं गया। इस लिपि को दाएँ से बाएँ कि ओर लिखी जाती थी।
- ☞ इनके मुहरों पर सर्वाधिक 1 सिंग वाले जानवर का चित्र था।
- ☞ इनके मुहरों पर गाय तथा सिंह का चित्र नहीं मिला है।
- ☞ हड़प्पा सभ्यता के मुहरों में सेलखरी का मुख्य रूप से किया गया था।
- ☞ सिंधु घाटी सभ्यता के लोग लोहे से परिचित नहीं थे।
- ☞ यहाँ माप-तौल के लिए न्यूनतम बाट 16 kg का था।
- ☞ सिंधु सभ्यता के लोग युद्ध या तलवार से परिचित नहीं थे।
- ☞ सिंधु सभ्यता में मिट्टी के बर्तनों में लाल रंग का उपयोग होता था।
- ☞ सिंधुवासी विश्व में कपास के प्रथम उत्पादक थे।
- ☞ सिंधु सभ्यता के विनाश का सबसे बड़ा कारण बाढ़ को माना जाता है।
- ☞ सिंधु घाटी सभ्यता के लोग कृषि भी करते थे, पशुपालन भी करते थे परंतु उनका मुख्य व्यवसाय व्यापार था।
- ☞ **सिन्धु सभ्यता के पतन के कारण—**

| विद्वान                           | पतन के कारण                       |
|-----------------------------------|-----------------------------------|
| गार्डन चाइल्ड एवं व्हीलर          | बाह्य एवं आर्यों के आक्रमण        |
| जॉन मार्शल अर्नेस्ट एवं एस.आर.राव | बाढ़                              |
| आरेल स्ट्रेन, अमलानंद घोष         | जलवायु परिवर्तन                   |
| एम.आर. साहनी                      | भूतात्विक परिवर्तन/जलप्लावन       |
| जॉन मार्शल                        | प्रशासनिक शिथिलता                 |
| के.यू.आर. कनेडी                   | प्राकृतिक आपदा (मलेरिया, महामारी) |

#### मेसोपोटामिया की सभ्यता (10,000 ई.पू.)

- ☞ इसका विकास इराक में टिग्रस एवं यूफ़र्ट्स नदी (दजला-फरात) नदियों के मध्य में हुआ है।
- ☞ यहाँ की मिट्टी अत्यधिक उपजाऊ थी। यह सभ्यता ग्रामीण थी। इसके अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि था।
- ☞ इस समय के मंदिरों को जिगुरद कहा जाता था।

#### मेसोपोटामिया की सभ्यता के 4 भाग थे—

- (i) सोमेरियन की सभ्यता
- (ii) बेबीलोन की सभ्यता
- (iii) सिरिया की सभ्यता
- (iv) कैलिडिया की सभ्यता
- ☞ **झूलता हुआ बगीचा** बेबीलोन में स्थित है।
- ☞ सिकंदर ने इस सभ्यता का विनाश कर दिया और इसके स्थान पर ग्रीक सभ्यता को थोप दिया।
- ☞ विश्व की सबसे पहली सभ्यता मेसोपोटामिया की सभ्यता थी। जबकि विश्व की पहली नगरीय सभ्यता सिंधु सभ्यता थी।

#### मिस्र की सभ्यता (2100 ई.पू.)

- ☞ यह मिस्र के रेगिस्तानों में स्थित थी।
- ☞ इसे नील नदी की देन कहते हैं।
- ☞ इस सभ्यता की विकास फिरौन के नेतृत्व में किया गया था।
- ☞ इस सभ्यता में पिरामिड, सूर्य कैलेण्डर तथा ममी का विकास हुआ था। अर्थात् इस सभ्यता का रसायन शास्त्र सृष्ट था।
- ☞ गिजा का पिरामिड सबसे प्रसिद्ध है।

#### रोम की सभ्यता (600 ई.पू.)

- ☞ इसे इटली में विकसित किया गया था।
- ☞ इन्होंने पूरे भू-मध्यसागर पर अधिकार कर लिया था।
- ☞ प्राचीन सभ्यता के यह सबसे विकसित सभ्यता थी। आज भी इस सभ्यता के अवशेष सुरक्षित बचे हुए हैं। जो पर्यटन का आकर्षण केन्द्र हैं।
- ☞ इस सभ्यता के दो सबसे बड़े राजा जुलीयस सीजर एवं आगस्टस थे।
- ☞ **Note :-** जुलियस सीजर की हत्या धोखे से उसके मंत्रिण्डल द्वारा कर दी गई।
- ☞ जूलियस सीजर नामक नाटक (William Shakespear) ने लिखा है।

#### फारस की सभ्यता (500 ई.पू.)

- ☞ यह वर्तमान ईरान में थी। इस सभ्यता का विकास तेजी से हुआ था। इन्होंने पूरे अरब प्रायद्वीप पर अधिकार कर लिया था।
- ☞ इनकी भाषा फारसी थी तथा पारसी धर्म को मानते थे।
- ☞ सिकंदर ने इस धर्म का अंत कर दिया।

#### स्पार्टा

- ☞ स्पार्टा अपने बहादुर सैनिकों के लिए विख्यात है। यह ग्रीस के पास का एक छोटा सा क्षेत्र था।
- ☞ स्पार्टा के मात्र 300 सैनिकों ने लियोनाइड्स के नेतृत्व में ग्रीस के 20000 सैनिकों को मात दे दी थी।
- ☞ ग्रीस की विशाल सेना का नेतृत्व जर्कसीज कर रहा था।
- ☞ जर्कसीज ने धोखे से Spartans को हरा दिया।
- ☞ **पीली नदी की सभ्यता—** यह चीन में 5000 ई.पू. विकसित थी। ह्वांगहो नदी के तट पर इसका विस्तार था। यह सभ्यता अपने उपजाऊ भूमि के लिए प्रसिद्ध थी।

- 6वीं शताब्दी में भारत कुल 72 संप्रदायों का विकास हुआ, जिसमें जैन धर्म, बौद्ध धर्म, आजीवक संप्रदाय लिंगायत, कापालिक, शैव धर्म और वैष्णव धर्म प्रमुख हैं।
- जैन शब्द संस्कृत के 'जीन' शब्द से बना है। जिसका अर्थ विजेता होता है।
- जैन धर्म का मुख्य केन्द्र बिन्दु 'अहिंसा' था।
- इस धर्म के संस्थापक ऋषभदेव थे।
- जैन धर्म के प्रवर्तक को तीर्थंकर कहा जाता है।
- तीर्थंकर का अर्थ होता है, दुःख से परे संसार रूप सागर को पार कराने वाला।
- ऋषभदेव जैन धर्म के पहले तीर्थंकर थे।
- ऋषभदेव हिमालय पर्वत पर निर्वाण को प्राप्त किए थे।
- जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर तथा 22 तीर्थंकर अरिष्टनेमी का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।
- जैन धर्म में कुल 24 तीर्थंकर माने जाते हैं जिन्होंने समय-समय पर जैन धर्म का प्रचार-प्रसार किए।
- जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर पारसनाथ थे।
- इनका जन्म वाराणसी के राजा अश्वसेन के यहाँ हुआ था जो इच्छवाकु वंश से संबंधित थे।
- इन्हें झारखण्ड के सम्मेट शिखर पर ज्ञान की प्राप्ति हुई, जिस कारण सम्मेट शिखर का नाम पारसनाथ की चोटी हो गया।
- ज्ञान प्राप्ति के बाद इन्होंने चतुरायण धर्म दिया जो निम्नलिखित है—
  - (i) झूठ न बोलना। (Non Lying) = सत्य
  - (ii) धन संग्रह न करना। (Non Possession) = अपरिग्रह
  - (iii) चोरी न करना। Astey (Non Stealing) = अस्तेय
  - (iv) हिंसा न करना। (Non Injury) = अहिंसा
- जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर एवं अंतिम तीर्थंकर महावीर स्वामी हैं। इन्हें जैन धर्म का वास्तविक संस्थापक कहते हैं।
- इनके पिता सिद्धार्थ थे, जो ज्ञातृकुल के राजा थे।
- इनकी माता त्रिशला थी। जो लिच्छिवी नरेश चेतक की बहन थी। इनके बड़े भाई नंदीवर्धन थे।
- इनके बचपन का नाम वर्धमान था।
- इनका जन्म 540 ई.पू. वैशाली के निकट कुंडग्राम में हुआ था।
- इनकी पत्नी यशोदा थी।
- इनकी बेटी प्रियदर्शनी (अन्नोज्जा) थी तथा दामाद जमालि था।
- 30 वर्ष की आयु में इन्होंने अपने बड़े भाई नंदीवर्धन से आज्ञा लेकर गृह त्याग दिए।
- 12 वर्ष के कठोर तपस्या के बाद जाम्बिक ग्राम में एक साल वृक्ष (बरगद) के नीचे ऋजुपालिका नदी के तट पर इन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई। ज्ञान प्राप्ति को "कैवल्य" कहते हैं।
- ज्ञान प्राप्ति के बाद इन्हें कैवलीन, जीन या निग्रोथ कहा गया। जीन का अर्थ होता है, विजेता जबकि निग्रोथ का अर्थ होता है, बंधन से मुक्त।
- वर्तमान में जाम्बिक ग्राम की पहचान हजारीबाग के समीप पारसनाथ की पहाड़ी तथा ऋजुपालिका नदी की पहचान दामोदर नदी की सहायक नदी बराकर नदी के रूप में किया जाता है।
- इन्होंने पहला उपदेश राजगीर में बितुलाचल पहाड़ी पर बराकर नदी के तट पर प्राकृत (अर्द्धमगही) भाषा में दिया था। जबकि अंतिम उपदेश पावापुरी में दिया।
- महावीर स्वामी का पहला भिक्षु उनका दमाद जमाली बना।
- प्रथम जैन भिक्षुणी चम्पा थी। जो राजा दधीवाहन की बहन थी।
- ज्ञान प्राप्ति के बाद इन्होंने पारसनाथ द्वारा प्रारंभ चतुरायण धर्म में ब्रह्मचर्य शब्द जोड़कर पंचायन धर्म दिया जो निम्नलिखित हैं—

| जैन धर्म के पंचायन धर्म |            |                                                                                    |
|-------------------------|------------|------------------------------------------------------------------------------------|
| 1.                      | अहिंसा     | ज्ञान-वृद्धकर या अनजाने में भी किसी प्रकार की हिंसा नहीं करना।                     |
| 2.                      | सत्य       | सदा सत्य बोलना।                                                                    |
| 3.                      | अस्तेय     | किसी व्यक्ति की कोई वस्तु बिना उसकी इच्छा के ग्रहण नहीं करना न ऐसी कोई इच्छा करना। |
| 4.                      | अपरिग्रह   | किसी प्रकार का संग्रह नहीं करना।                                                   |
| 5.                      | ब्रह्मचर्य | ब्रह्मचर्य व्रत का सख्ती से पालन करना।                                             |

| जैन धर्म की पाँच श्रेणियाँ |          |                                            |
|----------------------------|----------|--------------------------------------------|
| 1.                         | तीर्थंकर | वह जिसने मोक्ष की प्राप्ति की हो।          |
| 2.                         | अर्हत    | वह जो निर्वाण की प्राप्ति की ओर अग्रसर हो। |
| 3.                         | आचार्य   | जैन-भिक्षुओं के समूह का प्रमुख             |
| 4.                         | उपाध्याय | जैन धर्म का शिक्षक                         |
| 5.                         | साधु     | सारे जैन-भिक्षु                            |

➤ **महावीर स्वामी ने त्रिरत्न दिए जो निम्नलिखित हैं—**

- (i) सम्यक् ज्ञान (Right knowledge)
- (ii) सम्यक् दर्शन (Right believe)
- (iii) सम्यक् आचरण (Right action)

- ☞ भगवान महावीर ने ज्ञान प्राप्ति के बाद अपने मतों के प्रचार-प्रसार के लिए एक संघ की स्थापना की जिसमें 11 अनुयायी थे।
- ☞ महावीर स्वामी ने ईश्वर के अस्तित्व को नहीं माना जिस कारण वे मूर्तिपूजा और कर्मकांड का विरोध किए। अतः इन्हें अनेश्वरवादी भी कहा जाता है।
- ☞ इन्होंने पुनर्जन्म को माना और पुनर्जन्म का सबसे बड़ा कारण आत्मा को बताया। आत्मा को सताने के लिए इन्होंने कहा कि मोक्ष प्राप्ति के बाद पुनर्जन्म से मुक्ति मिल जाएगी।
- ☞ महावीर स्वामी ने अहिंसा पर सर्वाधिक बल दिया, जिस कारण उन्होंने कृषि तथा युद्ध पर प्रतिबंध लगा दिए।
- ☞ महावीर स्वामी के दिए गए उपदेशों को चौदह पूर्वी नामक पुस्तक में रखा गया जो जैन धर्म की सबसे प्राचीन पुस्तक है।
- ☞ महावीर स्वामी ने अपने उपदेश प्राकृत भाषा में दिए।
- ☞ महावीर ने अपने उपदेश में अनेकांतवाद की चर्चा की।
- ☞ 72 वर्ष की अवस्था में 468 ई.पू. पावापुरी में मल्ल राजा सुस्तिपाल के दरबार में इनकी मृत्यु (निर्वाण) हो गई।
- ☞ पावापुरी उस समय मल्ल गणराज्य के अधीन था। जिसका शासक हस्तपाल था।
- ☞ महावीर स्वामी के बाद प्रथम उपदेश देने वाला आर्यसूधर्मा को घोषित किया गया था।
- ☞ भद्रबाहु तथा स्थूलभद्र इनके दो सबसे प्रिय अनुयायी थे।
- ☞ मौर्य काल में मगध पर 12 वर्षीय भीषण अकाल पड़ा जिस कारण भद्रबाहु अपने अनुयायियों के साथ दक्षिण भारत में कर्नाटक चले गए। इन्हीं के साथ चन्द्रगुप्त मौर्य आये थे। जिसने कर्नाटक के श्रवण बेलगोला में संलेखना (संधारा) से प्राण त्याग दिये।
- ☞ इस भीषण अकाल में भी स्थूलबाहु तथा उसके अनुयायी मगध में ही रुके रहे। जब अकाल खत्म हो गया तो भद्रबाहु मगध लौट आया। किन्तु इन दोनों में विवाद हो गया।
- ☞ भद्रबाहु के नेतृत्व वाले लोग निर्वस्त्र रहते थे, जिन्हें दिगम्बर कहा गया।
- ☞ जबकि स्थूलभद्र के नेतृत्व वाले लोग श्वेत वस्त्र धारण करने लगे। जिसे श्वेताम्बर कहा गया।
- ☞ जैन धर्म के विस्तृत प्रचार के लिए 2 जैन संगीतियाँ हुई हैं।
- **पहली जैन संगीति—** यह 300 ई.पू. पाटलीपुत्र में हुई जिसकी अध्यक्षता स्थूलभद्र ने किया। उसी में भद्रबाहु ने 12 अंग नामक पुस्तक की रचना की।

**Note :-** दक्षिणी जैन दिगम्बर ने इस सम्मेलन का बहिष्कार किया।

- **द्वितीय जैन संगीति—** यह छठी शताब्दी में गुजरात के वल्लभी में हुई। उसकी अध्यक्षता देवाधिक्षमाश्रमण ने किया। उसी संगीति में 12 उपांग की रचना की गई।
- ☞ जैन साहित्य को आगम कहते हैं।
- ☞ जैन भिक्षु के निवास को वसदे कहा गया है।
- ☞ जैन तीर्थंकरों के जीवणी भद्रबाहु द्वारा रचित कल्पसूत्र में है। जो संस्कृत भाषा में है।
- ☞ अनुव्रत सिद्धांत जैन धर्म से संबंधित है।
- ☞ स्यादवाद, अनेकांतवाद, सप्तभृंगी ज्ञान, जीन, निग्रोथ, तीर्थंकर, कैवल्य सभी का संबंध जैन धर्म से है।
- ☞ महावीर के संकालीन शासक बिम्बिसार, चन्द्रप्रद्योत, अजातशत्रु, दधिवाहन तथा चेटक थे।
- ☞ जैन धर्म मानने वाला प्रमुख राजा— अजातशत्रु, उदयिन, वादराज, चंद्रगुप्त मौर्य, खारवेल, राष्ट्रकूट, अमोघवर्ष, चंदेल शासक।
- ☞ जैन मंदिर हाथी सिंह गुजरात राज्य में स्थित है।
- ☞ प्रसिद्ध जैनी जलमंदिर बिहार राज्य के पावापुरी में स्थित है।
- ☞ मथुरा कला का संबंध जैन धर्म, बौद्ध धर्म तथा हिंदू धर्म से है।
- ☞ जैन धर्म सर्वाधिक व्यापारी वर्ग के बीच फैला था।
- ☞ महावीर के अनुयायियों को निग्रंथ के रूप में जाना जाता था।
- ☞ महावीर के मुख्य शिष्य को गंधर कहा जाता था।
- ☞ महावीर के धार्मिक उपदेशों का संकलन पूर्वा नामक पुस्तक में है।
- ☞ जियो और जीने दो महावीर स्वामी का कथन है।
- ☞ जैन धर्म को अन्तिम राजकीय संरक्षक गुजरात के चालुक्य वंश के राजाओं ने दिया था।
- ☞ महावीर एक गाँव में एक दिन से अधिक तथा एक शहर में 5 दिन से अधिक नहीं रहते थे।

➤ **जैन धर्म के प्रमुख गंध**

- ☞ यह प्राकृत भाषा में मिले हैं, इन्हें आगम कहते हैं।
- उदाहरण—** 12 अंग, 12 उपांग, अचरांग सूत्र, भगवति सूत्र, कल्पसूत्र, आदि-पुराण।
- ☞ **अचरांग सूत्र—** इनमें जैन भिक्षुओं के आचार नियम व विधि निषेधों का विवरण।
- ☞ **भगवति सूत्र—** इसमें महावीर के जीवन की चर्चा है।
- ☞ **न्यायधम्मकहा सूत्र—** महावीर के शिक्षाओं का संग्रह।

**प्रमुख जैन मंदिर**

1. मौर्यकाल में मथुरा जैन धर्म का प्रमुख केन्द्र था।
2. कर्नाटक में चामुंड शासकों ने गोमटेश्वर का जैन मंदिर बनवाया जिसे बाहुबली का मंदिर कहते हैं।
3. मध्यप्रदेश में चंदेल शासकों ने खजुराहों में जैन मंदिर बनवाया। जिसमें बाहुबली की मूर्ति (गोमटेश्वर की मूर्ति) है।

**Note :-** खजुराहों हिन्दु और जैन दोनों का पवित्र स्थल है। जबकि अजंता बौद्ध, जैन और हिन्दु तीनों का पवित्र स्थल है।

4. राजस्थान में माऊंट आबु पहाड़ी पर दिलवाड़ा का प्रसिद्ध जैन मंदिर, विमलशाह के सामंत (अधिकारी) वस्तुपाल तथा तेजपाल के द्वारा बनाया गया है।

➤ श्वेताम्बर एवं दिगम्बर में अन्तर

| श्वेताम्बर                               | दिगम्बर                                |
|------------------------------------------|----------------------------------------|
| 1. इसे स्थूलभद्र ने प्रारम्भ किया        | इसे भद्रबाहु ने प्रारम्भ किया।         |
| 2. ये सफेद वस्त्र पहनते थे               | ये निर्वस्त्र रहते थे                  |
| 3. महिलाओं को मोक्ष मिल सकता है          | महिलाओं को मोक्ष नहीं मिल सकता है।     |
| 4. 19वें तीर्थंकर मल्लिनाथ महिला थी।     | 19वें तीर्थंकर मल्लिनाथ पुरुष थे।      |
| 5. इसके अनुसार महावीर स्वामी विवाहित थे। | इसके अनुसार महावीर स्वामी अविवाहित थे। |

➤ जैन धर्म के पीछड़ने के कारण

- (1) कठिन भाषा

- (2) कठोर नियम

- (3) महिलाओं का बराबरी न होना

- (4) राजाओं का संरक्षण न प्राप्त होना।

- (5) निवस्त्र रहना

- (6) ब्रह्मचर्य रहना

➤ प्रमुख जैन तीर्थंकर एवं उनके प्रतीक चिन्ह

| क्र.सं. | प्रमुख जैन तीर्थंकर | चिह्न     |
|---------|---------------------|-----------|
| 1.      | ऋषभदेव              | बैल       |
| 2.      | अजीतनाथ             | हाथी      |
| 3.      | संभवनाथ             | अश्व      |
| 6.      | पद्मप्रभू           | कमल       |
| 7.      | सुपाश्वनाथ          | स्वास्तिक |
| 19.     | मल्लिनाथ            | कलश       |
| 21.     | नेमिनाथ             | नीलकमल    |
| 22.     | अरिष्टनेमि          | शंख       |
| 23.     | पारसनाथ             | सर्प      |
| 24.     | महावीर स्वामी       | सिंह      |

□□□

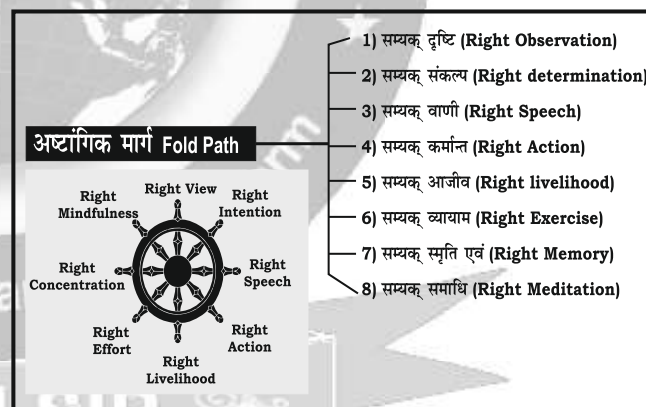


- ☞ बौद्ध धर्म का प्रारंभ महात्मा बुद्ध ने किया था।
- ☞ महात्मा बुद्ध के बचपन का नाम सिद्धार्थ था।
- ☞ इनका जन्म 563 ई.पू. में नेपाल के लुम्बिनी कपिलवस्तु में हुआ।
- ☞ इनके पिता सुद्धोधन क्षत्रिय (शाक्य गण के प्रधान) थे।
- ☞ इनकी माता महामाया कोलीय वंश की थी।
- ☞ जन्म के सात दिन बाद महामाया की मृत्यु हो गई।
- ☞ इनकी मौसी गौतमी ने इनका पालन पोषण किया। गौतमी इनकी सौतेली माँ भी थी।
- ☞ इनका विवाह 16 वर्ष की अवस्था में यशोधरा (गोपा/ बिम्बा/ भद्रकच्छना) नामक अति सुंदर स्त्री से हुआ।
- ☞ इनके पुत्र का नाम राहुल था।
- ☞ सिद्धार्थ को तथागत, कनकमुनि, शाक्यमुनि भी कहते हैं।
- ☞ इन्हें एशिया का ज्योतिपुंज (Light of Asia) भी कहा जाता है।
- ☞ एक दिन इन्होंने अपने राज्य में नगर भ्रमण के दौरान वे चार अवस्थाओं- गरीब, बीमार व्यक्ति, वृद्ध व्यक्ति, शव तथा एक सन्यासी को देखा। जिसके कारण इनके मन में वैराग्य (गृह त्याग) की इच्छा उत्पन्न हो गई और ये 29 वर्ष की आयु में अपना गृह त्याग दिए। जिसे बौद्ध धर्म में महाभिनिक्रमण कहा गया।
- ☞ इन्होंने अलारकलाम से सांख्य दर्शन (वैशाली में) तथा रूद्रकराम (राजगृह में) से योग दर्शन की शिक्षा ग्रहण किए।
- ☞ महात्मा बुद्ध अपने पाँच मित्रों के साथ सारनाथ के मृगदाब वन में तपस्या करने लगे। 6 वर्ष तक कठोर तपस्या किए।
- ☞ वहाँ एक कन्या ने इनसे कहा कि- वीणा को इतना न खींचो कि वह टूट जाए और इतना कम भी न खींचो कि वह बजे ही नहीं। इस बात को सुनकर महात्मा बुद्ध सारनाथ से गया (उरुबेला) चले आए और तपस्या करने लगे।
- ☞ यहाँ इन्हें निरंजना (फाल्गु) नदी के तट पर पीपल वृक्ष के नीचे वैशाख पूर्णिमा के दिन ज्ञान की प्राप्ति हुई।
- ☞ ज्ञान प्राप्ति के बाद वह वृक्ष महाबोधि वृक्ष कहलाया तथा यह स्थान बोधगया कहलाया।
- ☞ ज्ञान प्राप्ति के बाद इन्हें महात्मा बुद्ध कहा गया।
- ☞ बुद्ध का शाब्दिक अर्थ “ज्ञान संपन्न व्यक्ति” होता है।
- ☞ इन्होंने अपना पहला उपदेश सारनाथ में अपने मित्रों को दिया। जिसे बौद्ध धर्म में महार्थ चक्रप्रवर्तन कहते हैं।
- ☞ इन्होंने सर्वाधिक उपदेश कौशल देश की राजधानी श्रावस्ती में दिया जोकि पाली भाषा में निहित है।

- ☞ इन्होंने श्रावस्ती में अंगुलीमाल डाकू को शिक्षा दी।
- ☞ महात्मा बुद्ध के सबसे प्रिय शिष्य आनंद तथा उपालि थे।
- ☞ आनंद के कहने पर महात्मा बुद्ध ने महिलाओं को बौद्ध संघ में प्रवेश की अनुमति वैशाली में दिए और उन्होंने कहा कि अब बौद्ध धर्म ज्यादा दिन तक नहीं चलेगा।
- ☞ बौद्ध धर्म अपनाने वाली पहली महिला गौतमी और दूसरी महिला आम्रपाली थी।
- ☞ बौद्ध धर्म अपनाने वाला पहला पुरुष तपस्सु तथा मल्लि था।
- ☞ महात्मा बुद्ध ने कहा कि मेरे उपदेशों को अंधविश्वास के रूप में मत मानो बल्कि इसे तर्क के आधार पर अपनाओ।

### महात्मा बुद्ध के चार सत्य वचन

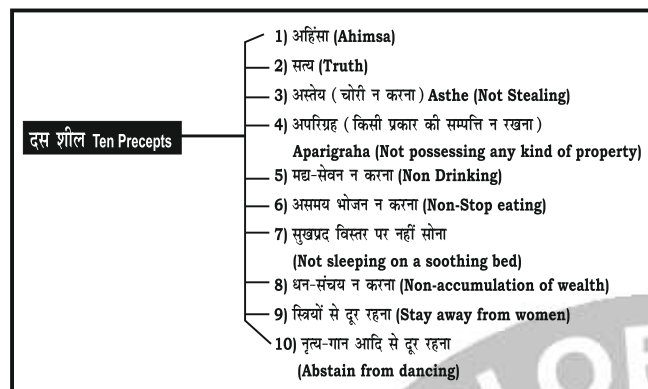
1. संसार दुखों से भरा है।
2. सभी के दुखों का कोई न कोई कारण अवश्य है।
3. दुःख का सबसे बड़ा कारण इच्छा है।
4. इच्छा पर नियंत्रण पाया जा सकता है।



- ☞ महात्मा बुद्ध ने इच्छा पर नियंत्रण पाने के लिए अष्टांगिक मार्ग (मध्य मार्ग, बीच का रास्ता) दिया और कहा कि व्यक्ति की इच्छा इतनी बड़ी नहीं होनी चाहिए कि वह पूरी नहीं हो सके और इच्छा इतनी भी छोटी नहीं होनी चाहिए कि पूरा होने पर भी संतुष्टि न हो।
- ☞ महात्मा बुद्ध ने कहा कि यदि कोई इच्छा अधूरी रहेगी तो वह पुर्नजन्म का कारण बनेगी।
- ☞ पुर्नजन्म से छुटकारा पाने के लिए इच्छा को मारना पड़ेगा। इस क्रिया को उन्होंने मोक्ष कहा।
- ☞ महात्मा बुद्ध अपना उपदेश पाली भाषा में देते थे।



- ☛ महात्मा बुद्ध ने निर्वाण प्राप्ति को सरल बनाने हेतु 10 शीलों पर बल दिया जो निम्न हैं—



- ☛ मगध के राजा बिम्बिसार ने बुद्ध के निवास के लिए बेलुवन नामक महाविहार बनवाया।
- ☛ लिच्छिवियों ने बुद्ध के निवास के लिए कुटाग्रशाला का निर्माण करवाया।
- ☛ गौतम बुद्ध उदायिन के शासनकाल में कौशाम्बी आए थे।

➤ **बुद्ध के अनुयायी दो भागों में विभाजित थे—**

1. **भिक्षुक**— बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु सन्यास ग्रहण करने वाले व्यक्ति भिक्षुक कहलाए।
2. **उपासक**— गृहस्थ जीवन जीते हुए भी बौद्ध धर्म अपनाने वाले व्यक्ति उपासक कहलाए।

➤ **महात्मा बुद्ध ने 3 दर्शन दिए—**

1. **अनेश्वरवाद**— अर्थात् ईश्वर का कोई अस्तित्व नहीं।
2. **शून्यवाद**— कोई भी व्यक्ति सर्वोपरी नहीं है न ही सर्वशक्तिमान है।
3. **क्षणिकवाद**— संसार की सभी वस्तुएँ कुछ ही समय के लिए हैं। इनका विनाश निश्चित है अर्थात् ये सभी वस्तुएँ क्षणिक हैं।

➤ **बौद्ध धर्म के तीन प्रमुख सिद्धांतों को त्रिरत्न कहते हैं—**

1. बुद्ध
2. संघ
3. धम्म

- ☛ महात्मा बुद्ध का सबसे पहले शिक्षा का संकलन त्रिपिटक में किया गया।

**बौद्ध धर्म के त्रिपिटक**

1. विनयपिटक
2. सुतपिटक
3. अभिधम्म पिटक

- ☛ त्रिपिटक का अर्थ— ज्ञान भरा टोकरी होता है।
- ☛ त्रिपिटक श्रीलंका में सिंहली भाषा में लिखा गया।

- ☛ बौद्ध धर्म में प्रवेश की न्यूनतम आयु 15 वर्ष थी।
- ☛ बुद्ध अपने जीवनकाल में ही संघ का प्रमुख देवदत्त को बनाना चाहते थे।
- ☛ महात्मा बुद्ध ने अपना अंतिम उपदेश कुशीनगर में सुभद्ध को दिया।
- ☛ महात्मा बुद्ध उपदेश देते हुए पावापुरी पहुंच गए जहाँ एक जैन भिक्षु चन्द्र ने इन्हें सुकरमास (सुअर का मांस या जहरीली मशरूम) खिला दिया।
- ☛ महात्मा बुद्ध की तबीयत बिगड़ने लगी और उन्हें डायरिया हो गया।
- ☛ UP के मल्ल महाजनपद में स्थित कुशीनगर में उनकी मृत्यु हो गई जिसे महापरिनिर्वाण के नाम से जानते हैं।
- ☛ इनके अंतिम संस्कार को मल्ल महाजनपद के राजाओं ने धूम-धाम से किया।
- ☛ महात्मा बुद्ध के मृत्यु के बाद उनकी अस्थियों को 8 अलग-अलग स्थानों पर दफनाया गया। जिन्हें अष्ट महास्थान कहते हैं।
- ☛ गौतम बुद्ध ने अपने जीवन की अंतिम वर्षा ऋतु वैशाली में बिताया।
- ☛ महात्मा बुद्ध के समकालीन शासक बिम्बिसार, उदयन, प्रसेनजीत तथा प्रद्योत थे।
- ☛ महात्मा बुद्ध की मृत्यु 483 ई.पू. में हुई और इनके मृत्यु के बाद बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए चार बौद्ध संगीति का आयोजन किया गया।

| संगिति | वर्ष                | स्थान             | राजा             | पुरोहित                                |
|--------|---------------------|-------------------|------------------|----------------------------------------|
| I.     | 483 BC              | राजगीर            | आजातशत्रु        | महाकश्यप                               |
| II.    | 383 BC              | वैशाली            | कालाशोक          | साबकमीर                                |
| III.   | 250 BC              | पाटलिपुत्र        | अशोक             | मोग्गलीपुत्त तिसस                      |
| IV.    | प्रथम शताब्दी 72 ई. | कुण्डलवन (कश्मीर) | कनिष्क (II अशोक) | वसुमित्र (अध्यक्ष) अश्वघोष (उपाध्यक्ष) |

➤ **चौथी बौद्ध संगीति के बाद बौद्ध धर्म दो भागों में बँट गया—**

1. **हिनयान**

- ☛ यह महात्मा बुद्ध के उपदेशों में कोई परिवर्तन नहीं किए।
- ☛ हिनयान मुर्ती पूजा और भक्ति में विश्वास नहीं करता था।
- ☛ इस सम्प्रदाय का ग्रंथ पाली भाषा में था।
- ☛ आगे चलकर हिनयान दो भाग में विभक्त हो गया।
  1. वैभाषिक
  2. सौतांत्रिक

- ☛ हिनयान का आदर्श है अहर्त पद की प्राप्ति।
- ☛ हिनयान के भारत के दक्षिणी भाग में, श्रीलंका, जावा, वर्मा, आदि देश में फैला हुआ है।
- ☛ हिनयान अवस्था का विशालतम एवं सर्वाधिक विकसित शैल्यकृति चैत्य गृह काले (पुणे) में स्थित है।

## 2. महायान

- ☛ यह महात्मा बुद्ध के उपदेशों में परिवर्तन करके उसे आधुनिक रूप दे दिए।
- ☛ बुद्ध ईश्वर मानकर उनकी उपासना भी करते थे तथा मूर्ति पूजा भी करते थे।
- ☛ इस सम्प्रदाय का ग्रंथ संस्कृत भाषा में था।
- ☛ महायान आगे जाकर ब्रजयान शाखा में टूट गई।
- ☛ ब्रजयान शाखा ही बौद्ध धर्म के विनाश का कारण बनी। क्योंकि इन लोगों ने मूर्ति पूजा, मध्यपान, वैश्यावृत्ति को अपना लिया।
- ☛ इस सम्प्रदाय का प्रमुख ग्रंथ गुहय समाज तथा मंजुश्री मुलकल्प।
- ☛ चीन तथा थाइलैंड में ब्रजयान शाखा की अधिकता है।
- ☛ बिहार के भागलपुर स्थित विक्रमशिला विश्वविद्यालय में ब्रजयान शाखा की शिक्षा दी जाती थी। इसे धर्मपाल ने बनवाया था।
- ☛ नालंदा विश्वविद्यालय में महायान की शिक्षा दी जाती थी। जिसके संस्थापक कुमारगुप्त थे। जिसे बख्तियार खिलजी ने ध्वस्त कर दिया।
- ☛ ओदंतपुरी विश्वविद्यालय बौद्ध धर्म के महायान से संबंधित है। जिसके संस्थापक गोपाल थे।
- ☛ कान्हेरी की शैल्यकृत गुफा में 11 सिर और 4 भुजाओं के बोधिसत्व का अंकन मिलता है।
- ☛ सारनाथ की भूमि स्पर्श मुद्रा वाले बुद्ध की प्रतिमा गुप्तकाल में बनाई गई थी।
- ☛ बुद्ध की खड़ी प्रतिमा कुषाण काल में बनाई गई थी।
- ☛ गौतम बुद्ध को देवता का स्थान कनिष्क के समय में दिया गया।
- ☛ भारत में सबसे पहले जिस मानव प्रतिमा की पूजा किया गया वह बुद्ध की प्रतिमा थी और इसी के साथ मूर्ति पूजा की नींव रखी गयी।
- ☛ बुद्ध की 80 फूट की प्रतिमा जो बोधगया में है उसे जापानीयों द्वारा निर्मित की गयी है।
- ☛ 30 फीट ऊँचा और 10 फीट लम्बा गौतम बुद्ध का शयनमुद्रा में मूर्ति बोधगया में बन रहा है।
- ☛ बुद्ध की प्रथम मूर्ति शैली मथुरा शैली थी।
- ☛ बुद्ध का सर्वाधिक मूर्ति गांधार शैली में मिला।
- ☛ धार्मिक जुलूस का प्रारंभ बौद्ध धर्म से हुआ।
- ☛ बौद्ध धर्म का रामायण अश्वघोष की पुस्तक बुद्धचरितम् को कहा जाता है।

- ☛ भारत तथा एशिया का सबसे बड़ा मठ तवांगमठ अरुणाचल प्रदेश में है जो विश्व का दूसरा सबसे बड़ा बौद्ध मठ है।
- ☛ विश्व का सबसे बड़ा बौद्ध मठ पोतलामहल, लहासा (तिब्बत) में है।
- ☛ बौद्ध धर्म का शब्दकोश (Dictionary) महाविभाष्य सूत्र को कहा जाता है।
- ☛ बौद्ध धर्म को अपनाने वाले शासक- अशोक, कनिष्क (महायान), नागार्जुन, अश्वघोष, वसुमित्र थे।
- ☛ अशोक बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए अपने पुत्र महेंद्र तथा पुत्री संघमित्रा को श्रीलंका भेजा था।

## ➤ बौद्ध साहित्य

- ☛ इन ग्रंथों का संबंध बौद्ध धर्म से है। बौद्ध साहित्य पाली भाषा में मिले हैं। जातक ग्रन्थ में महात्मा बुद्ध के पूर्व जन्म की 200 कहानियाँ हैं।
  - ☛ ललित विस्तार में महात्मा बुद्ध की पूरी जीवनी है।
  - ☛ अंगुत्तर निकाय में 16 महाजनपद की चर्चा है।
  - ☛ बौद्ध धर्म की सबसे पवित्र पुस्तक त्रिपिटक है, जो 3 पुस्तकों का समूह है।
1. **सूत पिटक**— यह सबसे बड़ा पिटक है। इसे बौद्ध धर्म का इंसाइक्लोपिडिया कहते हैं।
  2. **विनय पिटक**— यह सबसे छोटा पिटक है। इसमें बौद्ध धर्म के प्रवेश की चर्चा है।
  3. **अभिधम्म पिटक**— इसमें महात्मा बुद्ध के दार्शनिक विचारों की चर्चा है।

## बौद्ध धर्म से जुड़े चिन्ह

- (i) गर्भ — हाथी
- (ii) जन्म — कमल
- (iii) गृहत्याग — घोड़ा (महाभिनिष्क्रमण)
- (iv) युवा अवस्था — सांड
- (v) ज्ञान प्राप्ति — पीपल (बौद्ध वृक्ष)
- (vi) प्रथम उपदेश — चक्र (धर्मचक्र प्रवर्तन)
- (vii) समृद्धि — शेर
- (viii) निर्वाण — पद्मिनी
- (ix) मृत्यु — स्तूप (महापरिनिर्वाण)

**Note :-** महात्मा बुद्ध का जन्म, ज्ञान प्राप्ति तथा मृत्यु वैशाख (अप्रैल) महीने में पूर्णिमा के दिन हुई। वैशाख पूर्णिमा को बुद्ध पूर्णिमा कहते हैं।

## बौद्ध तथा जैन धर्म में समानता

- ☛ दोनों ने मोक्ष प्राप्ति तथा पुर्नजन्म में विश्वास किया।
- ☛ दोनों ने मूर्तिपूजा तथा भगवान के अस्तित्व का विरोध किया।
- ☛ दोनों ने कर्मकाण्ड का विरोध किए।
- ☛ दोनों ही हिन्दु धर्म से टूटे थे।

### बौद्ध तथा जैन धर्म में अन्तर

- ☞ जैन धर्म ने पुर्नजन्म का कारण आत्मा को बताया जबकि बौद्ध धर्म ने इच्छा को बताया।
- ☞ जैन धर्म ने मोक्ष प्राप्ति के लिए संलेखना विधि अपनाया जबकि बौद्ध धर्म ने अष्टांगिक मार्ग अपनाया।
- ☞ जैन धर्म में ज्ञानप्राप्ति को कैवल्य कहा गया जबकि बौद्ध धर्म में मोक्ष कहा गया।

### बौद्ध धर्म के आगे बढ़ने के कारण

1. जैन धर्म की भाषा प्राकृत थी, जो बहुत ही कठिन थी। जबकि बौद्ध धर्म की भाषा पाली थी, जो उस समय की सबसे लोकप्रिय भाषा थी।
2. जैन धर्म में बहुत की कठोर नियम थे। जबकि बौद्ध धर्म के नियम सरल थे।
3. जैन धर्म में महिलाओं को सम्मान नहीं दिया गया जबकि बौद्ध धर्म में महिलाओं को बराबरी का अधिकार दिया गया।
4. जैन धर्म में ब्रह्मचर्य तथा अहिंसा पर बहुत अधिक ध्यान दे दिया जबकि बौद्ध धर्म ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया।
5. जैन धर्म में निर्वस्त्र रहने का प्रावधान था, जो असभ्य प्रतीत होता था, जबकि बौद्ध धर्म में निर्वस्त्र रहने का प्रावधान नहीं था।

6. जैन धर्म में केवल दो ही संगीतियाँ हुई, और वो भी 900 वर्ष के अंतराल पर, जबकि बौद्ध धर्म में चार संगीतियाँ हुई वो भी 100 वर्ष के अंतराल पर।
7. जैन धर्म को बड़े-बड़े राजाओं का समर्थन नहीं मिल सका। जैन धर्म को मानने वाला प्रमुख राजा चन्द्रगुप्त मौर्य तथा खारवेल थे, जबकि बौद्ध धर्म को बड़े-बड़े राजाओं का संरक्षण मिला। बौद्ध धर्म मानने वाले प्रमुख राजा अशोक, कनिष्क, पालवंश, चीन एवं पूर्वी एशिया आदि।

### जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म दोनों के पिछड़ने के कारण

- ☞ दोनों ही धर्म हिन्दु धर्म के कुरितियों के विरुद्ध आवाज उठाकर आगे बढ़े हुए थे। इन लोगों ने मूर्तिपूजा तथा कर्मकांड का विरोध किया। किन्तु कालांतर में इन लोगों में भी कुरितियाँ आ गई। इन लोगों ने भी मूर्तिपूजा तथा कर्मकांड प्रारम्भ कर दिये।
- ☞ दोनों धर्मों ने हिन्दु धर्म के वर्ण (जाति) प्रथा का विरोध किया, किन्तु कालांतर में इनमें भी जाति व्यवस्था आ गई।
- ☞ बौद्ध तथा जैन मठों के मठाधीश धार्मिक बिन्दुओं पर कम ध्यान देने लगे तथा भोग-विलास में लग गए।
- ☞ जैन तथा बौद्ध धर्म की कमजोर स्थिति का फायदा उठाकर शंकराचार्य ने हिन्दु लोगों को जागरूक किया साथ ही गुप्त काल के राजाओं ने हिन्दु धर्म में अनेक त्योहार इत्यादि जोड़कर हिन्दुओं को एकत्रित कर दिया।

□□□

Most Trusted Learning Platform



KHAN SIR



## भारत के प्रमुख धर्म (Major Religions of India)

### आजीवक सम्प्रदाय

- इस संप्रदाय के संस्थापक मक्खलिपुत्र गोसाल थे।
- अशोक के पिता बिन्दुसार आजीवक संप्रदाय को मानते थे। अशोक ने आजीवक संप्रदाय के भक्तों को बहुत से गुफा (नागार्जुन या बराबर पहाड़ी के गुफा, सुदामा गुफा, दशरथ गुफा, कर्ण गुफा, चौपाड़ गुफा, विश्व झोपड़ी) दान में दिया था।

### भागवत धर्म

- इसके संस्थापक/प्रवर्तक वासुदेव (कृष्ण) थे। इस धर्म में सबसे अधिक जोर भक्ति पर दिया गया। भागवत संप्रदाय वाले बलि, कर्मकाण्ड तथा पशु हत्या के विरोध में थे।
- जैन परम्परा के अनुसार वासुदेव कृष्ण जैन धर्म के 22वें तीर्थंकर अरिष्टनेमि के समकालिन थे।
- इस धर्म में मुख्य रूप से कृष्ण की पूजा होती है।
- इस धर्म का सबसे लोकप्रिय स्वरूप 'वैष्णव धर्म' है।
- इनका निवास स्थान मथुरा है।
- इस धर्म का उदय मौर्योत्तर काल में हुआ था। इसकी प्रारंभिक जानकारी उपनिषद् में मिलती है। परंतु मेगास्थनीज द्वारा रचित इंडिका नामक पुस्तक में बताया गया है कि मौर्य काल में भागवत धर्म का प्रचलन था। उन्होंने इंडिका में लिखा है कि शूर सैन यानि मथूरा के लोग हेराक्लीज (कृष्ण) के उपासक थे।
- हेराक्लीज कृष्ण का यूनानी रूपान्तरण था।
- शुंग वंश के नौवें शासक भागभद्र के दरबार में हेलियोडोटस आया था और वह भागवत धर्म अपना लिया। हेलियोडोटस भगवान विष्णु के सम्मान में मध्य प्रदेश के विदिशा (बेसनगर) में एक स्तम्भ लेख का निर्माण कराया जिसे गरुडस्तम्भ लेख कहा गया।
- इस स्तम्भ लेख पर उसने "ओम नमो भगवते वासुदेवाय" लिखवाया।
- इस धर्म का वर्णन सबसे पहले छन्दोग्य उपनिषद् में देवकीपुत्र एवं अंगीरस के शिष्य के रूप में कृष्ण का वर्णन मिलता है।
- भागवत धर्म के सिद्धांत श्रीमद्भागवत गीता में लिखा गया है। भागवतगीता के रचयिता वेदव्यास है।
- श्रीमद्भागवत गीता में मोक्ष प्राप्ति के लिए जन्म, कर्म, तथा भक्ति को समान महत्व दिया गया है। भागवतगीता की मुख्य शिक्षा निष्काय कर्मयोग (कर्म करो फल की चिन्ता मत करो) को बताया गया है।

- भागवत सम्प्रदायों में भक्ति के रूपों की संख्या 9 है।
- कृष्ण के समर्थक को भागवत कहा जाता है।
- पंचरात्र, व्यूहवाद एवं चतुर्व्यूह सिद्धांत भागवत धर्म से संबद्ध थे।

### शैव धर्म

- शिव को मानने वाले को शैव धर्म कहा जाता है और उसके उपासक को शैव कहा जाता है।
- इसमें भगवान शिव की उपासना की जाती है। इसमें शिवलिंग की पूजा की जाती है।
- शिवलिंग का पहला साक्ष्य सिंधु सभ्यता में मिला है। किन्तु यह प्रमाणिक नहीं है।
- शिवलिंग को पहला प्रमाणिक साक्ष्य मत्स्य पुराण में मिलता है।
- शैव धर्म को दक्षिण भारत में मानने वाले अधिक हैं।
- शैव धर्म को मानने वाले लोकप्रिय वंश- पल्लव वंश, चोल वंश, राष्ट्रकूट वंश तथा चालुक्य वंश थे।
- गुप्तकाल में शैव धर्म अपने चर्मोत्कर्ष पर थे।
- शैव धर्म में परमात्मा, जिवात्मा और बंधन के परिकल्पना की गई है।
- नयनारों ने पल्लव काल में शैव धर्म का प्रचार किया था।
- शैव सिद्धांत के चार पद - विद्या, योग, कर्म और चर्चा।
- शैव सिद्धांत के तीन पदार्थ - पशु, पाश और पति।

### शैव धर्म का प्रमाण-

1. प्रारंभिक प्रमाण- हड़प्पा सस्कृति
  2. ऋग्वेद में शिव को रुद्र (शिव) कहा गया।
  3. अथर्ववेद में शिव को भव, शर्व, पशुपति एवं भूपति कहा गया।
  4. मत्स्य पुराण में लिंग पूजा का पहला स्पष्ट वर्णन है।
  5. तैत्तिरेय अरण्यक में रुद्र की पत्नी पार्वती को पद्मा, उमा, गौरी एवं भैरवी कहा गया।
- दक्षिण भारत में शैव आंदोलन 63 नयनार संतों ने चलाया था।
  - मेगास्थनीज ने अपनी यात्रा वृत्तांत में डायनोसिस नाम से शिव का उल्लेख करते हुए भारत में शिव पूजा का विवरण किया है।
- ### वामन पुराण के अनुसार शैव धर्म को मुख्यतः 4 भागों में बांटते हैं-
1. पशुपतिक
- ये शैव धर्म की सबसे प्राचीन शाखा है। इन्हें पंचार्थीक भी कहते हैं।



- पशुपतिक संप्रदाय के संस्थापक लकुलिश थे। इसमें शिव के 18 अवतार का वर्णन मिलता है।
- लकुलिश को शिव भगवान के 18 अवतारों में से एक माना जाता है।
- पशुपत संप्रदाय का प्रमुख सैद्धांतिक ग्रंथ पशुपत सूत्र है।

## 2. कापालिक

- ये नर खोपड़ी में भोजन तथा जल ग्रहण करते हैं। ये मदिरापान करते हैं।
- अस्थि के भस्म को पूरे शरीर में लगाते हैं।
- कापालिक संप्रदाय के इष्टदेव भैरव माने जाते हैं।
- इस संप्रदाय का मुख्य केन्द्र श्रीशैल नामक स्थान था। Ex. नागा साधु कापालिक होते हैं।

## 3. लिंगायत

- शैव धर्म की इस शाखा का विकास कर्नाटक में अधिक हुआ।
- इसका प्रारम्भ अल्लभ प्रभु तथा उनके शिष्य वासव ने किया।
- इसमें शिव की उपासना की जाती है।
- ये शिवलिंग की पूजा करते हैं। इस शाखा के लोग शव को जलाते नहीं थे, बल्कि दफनाते थे।
- लिंगायत संप्रदाय दक्षिण भारत में बहुत लोकप्रिय था।
- लिंगायत संप्रदाय को जंगम/विरशिव संप्रदाय भी कहा जाता है।

## 3. कालामुख

- शिव महापुराण में कालामुख संप्रदाय के मतावलंबियों को महाव्रतधर कहकर पुकारा गया है।
- महाव्रत लोग अपने शरीर पर चिता की भस्म लपेटकर रहा करते थे।
- दसवीं शताब्दी में मत्स्येन्द्र नाथ ने नाथ संप्रदाय की स्थापना की।
- इस संप्रदाय का व्यापक प्रचार-प्रसार बाबा गोरखनाथ ने किया।
- शुद्ध संप्रदाय के संस्थापक श्रीकांताचार्य थे।
- राष्ट्रकूटों ने ऐलोरा में स्थित शैवों के कैलाशनाथ मंदिर का निर्माण करवाया था।
- प्रसिद्ध राजराजेश्वर शैव मंदिर तंजौर में स्थित है। इसे वृहदेश्वर मंदिर के नाम से जाना जाता है। इस मंदिर का निर्माण चोल शासक राजराज प्रथम ने करवाया था।
- शिव के महान उपासक कुषाण राजा ने सर्वप्रथम अपने राजमुद्रा पर शिव एवं नंदी का अंकन करवाया था।

## वैष्णव धर्म

- भगवत धर्म से ही वैष्णव धर्म का विकास छठी शताब्दी में हुआ था।
- इसमें भगवान विष्णु का अधिक महत्व है। इसकी चर्चा पुराणों तथा उपनिषदों में मिलती है।

- इसके उपासक को पंचरात्र कहते हैं।
- विष्णु का उल्लेख सर्वोच्च देवता के रूप में एतरेय ब्राह्मण में किया गया है।
- भगवान विष्णु को अपना ईस्ट देव मानने वाले उपासकों को वैष्णव के रूप में जाना जाता है।
- **मत्स्य पुराण में भगवान विष्णु के 10 अवतारों की चर्चा है—** 1. मत्स्य 2. कूर्म 3. वराह 4. नृसिंह 5. वामन 6. परशुराम 7. राम 8. बलराम 9. बुद्ध 10. कल्कि।
- परशुराम, कृष्ण तथा बौद्ध विष्णु के प्रमुख अवतार थे।
- विष्णु के अवतारों में सर्वाधिक लोकप्रिय वराह अवतार है। जिसका प्रथम उल्लेख ऋग्वेद में है।
- वायु पुराण में कृष्ण सहित वृष्णि वीरों का भी उल्लेख है।

### वृष्णि वीर

| वृष्णि वीर       |                  |
|------------------|------------------|
| 1. वासुदेव कृष्ण | देवकी के पुत्र   |
| 2. संकर्षण       | रोहिणी पुत्र     |
| 3. प्रद्युम्न    | रूक्मिणी पुत्र   |
| 4. अनिरुद्ध      | प्रद्युम्न पुत्र |
| 5. साम्ब         | जाम्बवती पुत्र   |

- इस धर्म को अवतारवाद भी कहते हैं। इसे मानने वाले पूर्णतः शाकाहारी होते थे।
- अवतारवाद का सर्वप्रथम उल्लेख श्रीमद्भगवत गीता में मिलता है।
- वैष्णव धर्म में ईश्वर प्राप्ति का मार्ग भक्ति को बताया गया है।
- वल्लभाचार्य, चैतन्य महाप्रभु, रामानन्द, कबीर दास, रामानुजाचार्य आदि वैष्णव धर्म के प्रसिद्ध भक्त थे।
- स्कंदगुप्त के जूनागढ़ अभिलेख की शुरुआत भगवान विष्णु के स्तुति से होती है।
- देवगढ़ के दशावतार मंदिर का निर्माण गुप्त काल में भगवान विष्णु के सम्मान में किया गया।
- कालांतर में कृष्ण को विष्णु का रूप महाभारत काल में माने जाने के कारण भागवत धर्म वैष्णव धर्म में परिवर्तित हो गया।
- वैष्णव धर्म का सर्वाधिक विकास गुप्त काल में चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय में हुआ। इनके दरबार में नौ विद्वान रहते थे। जिसे नवरत्न कहा जाता था।
- गुप्तकाल में वैष्णव धर्म का प्रचार-प्रसार जोरो पर था। यहाँ तक कि इण्डोनेशिया, मलाया, कम्बोडिया दक्षिण पूर्व एशिया और हिन्द-चीन जैसे विदेशी स्थलों पर भी इस धर्म का खूब प्रचार-प्रसार हुआ।
- वैष्णव धर्म का विकास दक्षिण भारत में बहुत तेजी से हुआ। दक्षिण भारत में इस धर्म को मानने वाले को अलवर कहा गया। दक्षिण भारत में 12 अलवार संतो को विवरण मिलता है।
- भारत में वैष्णव धर्म का केन्द्र तमिल प्रदेश था।
- इन सब में तीरुमंगई सर्वाधिक प्रसिद्ध एवं अंडाल एक मात्र महिला संत थी।



| प्रमुख सम्प्रदाय, मत व उनके आचार्य |               |                 |
|------------------------------------|---------------|-----------------|
| प्रमुख सम्प्रदाय                   | मत            | आचार्य          |
| वैष्णव सम्प्रदाय                   | विशिष्टाद्वैत | रामानुज         |
| ब्रह्म सम्प्रदाय                   | द्वैतवाद      | मध्वाचार्य      |
| रूद्र सम्प्रदाय                    | शुद्धाद्वैत   | वल्लभाचार्य     |
| सनक सम्प्रदाय                      | द्वैताद्वैत   | निम्बार्काचार्य |

### यहुदी धर्म

➤ **संस्थापक**— मुसा (अब्राहम)

➤ **प्रमुख केन्द्र**— जेरुसेलम

- ☞ एकमात्र यहुदियों का देश— इजरायल है।
- ☞ यह विश्व के प्राचीनतम धर्मों में से एक माना जाता है।
- ☞ इसे दुनिया का प्रथम एकेश्वरवादी धर्म माना जाता है।
- ☞ इस धर्म की उत्पत्ति स्थान फिलिस्तीन है।
- ☞ इसके धार्मिक स्थल को सिनेगार कहते हैं।
- ☞ इसे इब्राहिमी धर्म भी कहा जाता है।

➤ **प्रमुख धार्मिक पुस्तक**

- ☞ तोरह/ओल्डटेस्टामेंट या मुसा संहिता

### ईसाई धर्म

- ☞ इस धर्म के संस्थापक ईसा मसिह थे।
- ☞ इनका जन्म वेथलेहम नामक गांव में हुआ था। जो जेरुसेलम में पड़ता है। इनके पिता जोसेफ तथा माता मैरी थी।
- ☞ ईसा मसिह को जीसस भी कहा जाता था।
- ☞ मसिहा का शाब्दिक अर्थ— परमपिता के पुत्र होता है।
- ☞ प्रमुख धार्मिक ग्रंथ → बाइबिल
- ☞ प्रमुख धार्मिक पूजा स्थल → चर्च या गिरजाघर
- ☞ प्रमुख शिष्य → एड्रस और पिटर (मछुआरा)
- ☞ जाति → बढ़ई/Carpenter
- ☞ पूरे विश्व में ईसाई धर्म के मानने वाले की संख्या सबसे अधिक है। इस धर्म की उत्पत्ति फिलिस्तीन में हुई।
- ☞ इसका प्रमुख दिन रविवार होता है।
- ☞ ईसा मसिह का शिष्य सेंट टॉमस भारत के केरल में आकर ईसाई धर्म का प्रचार प्रसार किया था।
- ☞ ईसाई धर्म के धार्मिक नेता या प्रमुख को पोप या पादरी कहा जाता है।
- ☞ पोप के कार्यालय को पापेसी कहा जाता है।
- ☞ पोप का निवास स्थल रोम (इटली) में है।
- ☞ ईसा मसिह द्वारा चुने गए 12 अनुयायियों को देवदूत माना गया।
- ☞ इस धर्म की दो मुख्य शाखाएँ हैं— कैथोलिक और प्रोटेस्ट।

- ☞ इनके मृत्यु तथा पुनर्जन्म को इस्टर के रूप में मनाया जाता है।
- ☞ इनके जन्म दिवस को क्रिसमस के रूप में मनाया जाता है तथा मृत्यु पर Good friday मनाया जाता है।
- **बाईबिल को दो भागों में बांटा गया है—**
  1. ओल्ड टेस्टामेंट – यह यहुदी इतिहास से संबंधित है।
  2. न्यू टेस्टामेंट – इसमें ईसाइयों का धर्म संबंधित विचार है।
- ☞ इनका प्रतिक चिन्ह क्रॉस है।
- ☞ इनको शूली पर चढ़ाने वाला रोमन गवर्नर पॉण्टियस (33 ई०) था।

### इस्लाम धर्म

- ☞ इस्लाम अरबी भाषा का शब्द है। जिसका शाब्दिक अर्थ अल्लाह को समर्पण होता है।
- ☞ इनके धार्मिक स्थान को मस्जिद कहा जाता है।
- ☞ इस धर्म के संस्थापक पैगम्बर हजरत मुहम्मद साहब को माना जाता है।
- ☞ इनका जन्म 570 ई० में मक्का में हुआ था।
- ☞ इनके पिता का नाम अब्दुल्लाह तथा माता का नाम अमीना था।
- ☞ इनकी पत्नी का नाम खदीजा, पुत्री का नाम फातिमा थी।
- ☞ इनको ज्ञान की प्राप्ति 610 ई० में हीरा नामक गुफा में हुआ था। जो मक्का में स्थित है।
- ☞ मक्का से मदीना के यात्रा को ही मुस्लिम संवत् के नाम से जाना जाता है। जो 622 ई० में प्रारंभ हुआ। इसे हिजरी संवत् भी कहते हैं।
- ☞ हिजरी संवत् के एक वर्ष में 354 दिन होता है और 12 महीना होता है।
- ☞ इनके द्वारा कुरान की शिक्षा का उपदेश दिया गया। जो इस धर्म की सबसे प्रमुख धार्मिक ग्रंथ है।
- ☞ इनकी मृत्यु 632 ई० में मदीना में हुई और वही इनको दफना दिया गया।
- ☞ मक्का और मदीना दोनों धार्मिक स्थल सऊदी अरब में स्थित है।
- ☞ अली मुहम्मद साहब के दामाद थे। जो मुहम्मद साहब के उत्तराधिकारी थे। जिनकी हत्या 661 ई० में कर दी गई।
- ☞ अली के बेटे हासन हुसैन की हत्या करबला (ईरान) में 680 ई० कर दी गई।
- ☞ मुहम्मद साहब के उत्तराधिकारी को खलीफा कहा जाता था।
- ☞ खलीफा का पद 1924 तक रहा। खलीफा पद 1925 ई० में तुर्की के शासक मुस्तफा कमाल पासा द्वारा समाप्त कर दिया गया।
- ☞ मुहम्मद साहब का जीवन चरित्र इब्न ईशाक द्वारा लिखा गया।
- ☞ इनके जन्म दिवस को ईद ए मिलाद उन नवी के नाम से मनाया जाता है।

- ☞ इनका प्रमुख दिन शुक्रवार होता है।
- ☞ कुरान मूल रूप से अरबी भाषा में लिखा गया था।
- ☞ मुहम्मद साहब के मृत्यु के बाद इस्लाम दो भागों में बँट गया सुन्नी और शिया।
- ☞ सुन्नी मुहम्मद साहब के विश्वास पर आधारित था तथा शिया उनके दामाद अली के शिक्षा पर विश्वास करता था।
- ☞ मक्का की ओर की दिशा को किबला कहा जाता है। जो नमाज पढ़ने के समय पश्चिम दिशा की ओर खड़े होते हैं।
- ☞ भारत में मुस्लिम पश्चिम दिशा में पूजा करते हैं। उसका कारण है कि भारत के पश्चिम में मक्का और मदीना है।
- ☞ भारत में मुस्लिम धर्म का प्रवेश अरबों द्वारा 712 ई० में हुआ जब अरबों ने सिंध पर आक्रमण किया था। वहाँ का शासक राजा दाहिर था। जो मुहम्मद बिन काशिम द्वारा आक्रमण किया गया था और उसी समय से इस धर्म का प्रचार प्रसार हुआ और मजबूती के साथ फैलता गया।
- **इस धर्म के मानने वालों को 5 अनिवार्य कर्तव्य मानना पड़ता है—**
  1. बकरीद के अवसर पर बकरे की कुर्बानी देना चाहिए।
  2. प्रतिदिन पाँचों वक्त (फजर, जूहर, असर, मगरीब, ईसा) नमाज पढ़ना चाहिए।

3. जरूरतमंदों को दान (जकात) देना चाहिए।
4. रमजान के महीने में सूर्योदय के पहले से लेकर सूर्यास्त तक रोजा (उपवास) रखना चाहिए।
5. हर मुसलमान को जीवन में कम-से-कम एक बार हज करना चाहिए यानी मक्का स्थित काबा की यात्रा करनी चाहिए।

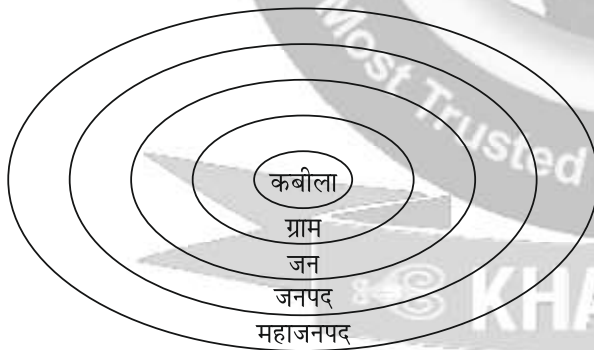
### पारसी धर्म

- ☞ पारसी धर्म के पैगम्बर जर थुस्ट्र (ईरानी) थे।
- ☞ इनका पवित्र धार्मिक ग्रंथ जेन्दा अवेस्ता है।
- ☞ इनके अनुयायी को अग्निपूजक कहा जाता है।
- ☞ इनके देवता को अहुर कहा जाता है।
- ☞ इनका धार्मिक स्थल अग्निमंदिर होता है।
- ☞ पारसी मंदिरों को आतिश बेहराम कहा जाता है।
- ☞ इनपर अरबों द्वारा आक्रमण कर जबरन मजबूर करके जरथुस्ट्र को इस्लाम धर्म स्वीकार करने पर मजबूर कर दिया गया जिस कारण वहाँ से आदमी भागकर भारत आकर गुजरात में बस गए।
- ☞ पारसी धर्म की उत्पत्ति ईरान में हुआ था।



## महाजनपद (Mahajanapada)

- 6वीं शताब्दी ई.पू. अखंड भारत में द्वितीय नगरीकरण प्रारम्भ हो गई। जिसे महाजनपद कहते हैं।
- प्राचीन भारत में राज्य के प्रशासनिक इकाईयों को महाजनपद कहा जाता है।
- कुछ जनपदों का वर्णन उत्तरवैदिक काल से मिलता है।
- इसका समय अवधि 600 ई.पू. से 340 ई.पू. तक माना जाता है।
- इसका प्रमुख भाषा संस्कृत एवं प्राकृत है।
- इसका शासन व्यवस्था गणराज्य राज्यतंत्र था।
- इस समय पूर्वी उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बिहार में लोहे का व्यापक प्रयोग होने से बड़े-बड़े प्रदेशिक या जनपद राज्यों के निर्माण के लिए उपयुक्त परिस्थिति बन गई।
- लोहे के हथियारों के कारण योद्धा वर्ग महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने लगे।
- खेती के नये औजार और उपकरणों से किसान अपनी आवश्यकता से अधिक अनाज पैदा करने लगे। अब राजा अपने सैनिक और प्रशासनिक प्रयोजनों के लिए इस अतिरिक्त अनाज को एकत्रित करवा सकते थे।
- लोगों की जो प्रवल निष्ठा अपने जन या कबीले के प्रति थी वह अब अपने जनपद या महाजनपद के प्रति हो गए।



### ➤ वर्तमान में 16 महाजनपद स्थिति—

|              |           |
|--------------|-----------|
| उत्तरप्रदेश  | 8 महाजनपद |
| बिहार        | 3 महाजनपद |
| राजस्थान     | 1 महाजनपद |
| मध्यप्रदेश   | 1 महाजनपद |
| दक्षिण भारत  | 1 महाजनपद |
| भारत के बाहर | 2 महाजनपद |

- बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तर निकाय तथा जैन ग्रंथ भगवती सूत्र में 16 महाजनपद की चर्चा है, जो निम्नलिखित हैं—

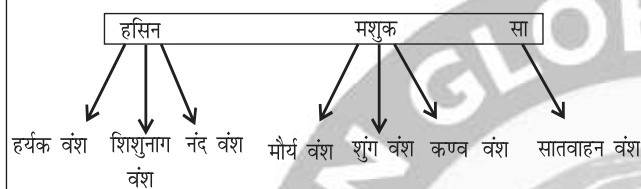
| क्र. सं. | महाजनपद        | राजधानी               | महत्वपूर्ण नगर (आधुनिक नामों के अनुसार)                      |
|----------|----------------|-----------------------|--------------------------------------------------------------|
| 1.       | गान्धार        | तक्षशिला              | रावलपिंडी व पेशावर (पाकिस्तान)                               |
| 2.       | कम्बोज         | हाटक/राजपुर           | राजौरी व हजारा क्षेत्र (कश्मीर)                              |
| 3.       | मत्स्य/मच्छ    | विराटनगर              | जयपुर का समीपवर्ती क्षेत्र (राजस्थान)                        |
| 4.       | कुरु           | इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) | दिल्ली, मेरठ और हरियाणा के आस-पास का क्षेत्र                 |
| 5.       | शूरसेन         | मथुरा                 | मथुरा (उत्तर प्रदेश)                                         |
| 6.       | कोशल           | श्रावस्ती             | फैजाबाद, गोंडा, बहराइच (उत्तर प्रदेश)                        |
| 7.       | पांचाल         | अहिच्छत्र, काम्पिल्य  | बरेली, बदायूँ, फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश)                     |
| 8.       | चेदि           | शक्तिमती              | बुंदेलखंड (उत्तर प्रदेश)                                     |
| 9.       | वत्स या वंश    | कौशाम्बी              | इलाहाबाद एवं मिर्जापुर जिला (उत्तर प्रदेश)                   |
| 10.      | काशी           | वाराणसी               | वाराणसी के आसपास के क्षेत्र (उत्तर प्रदेश)                   |
| 11.      | मल्ल           | कुशावती/कुशीनारा      | देवरिया (उत्तर प्रदेश)                                       |
| 12.      | अश्मक या अस्मक | पाटन/पोतन             | गोदावरी नदी का दक्षिणी क्षेत्र (दक्षिण भारत का एकमात्र जनपद) |
| 13.      | अवन्ति         | उज्जैन/महिष्मति       | मालवा (मध्य प्रदेश)                                          |
| 14.      | वज्जि/वुज्जि   | वैशाली/विदेह/मिथिल    | वैशाली, मुजफ्फरपुर, दरभंगा (बिहार)                           |
| 15.      | अंग            | चम्पा                 | भागलपुर, मुंगेर (बिहार)                                      |
| 16.      | मगध            | गिरिवज्र (राजगृह)     | पटना, गया, नालंदा (बिहार)                                    |

- गंधार महाजनपद पाकिस्तान में था। इसकी राजधानी तक्षशिला विश्व की प्राचीनतम विश्वविद्यालय का केन्द्र था।
- अस्मक दक्षिण भारत का एकमात्र महाजनपद था, जो गोदावरी नदी के तट पर था।
- उत्तरप्रदेश का मल्ल महाजनपद गणराज्य था।
- बिहार का वज्जि महाजनपद एक गणराज्य था।
- वज्जि की राजधानी वैशाली में लिच्छिवी गणराज्य का शासन था। जो पूरे विश्व का सबसे पुराना गणराज्य था। यह 8 कुलों का एक संघ था।
- सबसे शक्तिशाली महाजनपद मगध महाजनपद था। इसके दक्षिण में विंध्याचल पर्वत/पश्चिमी में सोन नदी, उत्तर में गंगा तथा पूरब में फल्गू जैसी नदियाँ इस महाजनपद के प्राकृतिक दुर्ग का कार्य करती हैं।
- राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्र में स्थित एक मात्र महाजनपद मत्स्य था।
- महाभारत तथा पुराणों में चंपा का प्राचीनतम नाम मालिनी था।
- महात्मा बुद्ध ने अपना सर्वाधिक उपदेश कौशल की राजधानी श्रावस्ती में दिये।
- मल्ल की राजधानी कुशीनगर में महात्मा बुद्ध का महापरिनिर्वाण हुआ।
- कान्यकुब्ज (कन्नौज) पांचाल राज्य के अंतर्गत ही आता था।
- अंग की पहली चर्चा अथर्ववेद में किया गया है।

## मगध

- 16 महाजनपदों में मगध जनपद प्रारंभ में तो छोटा था। जो पाटलीपुत्रा से राजगीर तक फैला हुआ था। किन्तु मगध के शासकों ने मगध के सीमा को बंगाल से लेकर अफगानिस्तान तक तथा हिमालय से लेकर सतपुड़ा तक फैला दिया।
- इसका विस्तार उत्तर में गंगा नदी से दक्षिण में विन्ध्य पर्वत तक तथा पूर्व में चंपा से पश्चिम में सोन नदी तक विस्तृत था।
- मगध महाजनपद पर कुल 7 राजवंशों ने शासन किया।

Trick:-



## हर्यक वंश ( 544-412 ई.पू. )

### बिम्बिसार ( 544-492 ई.पू. )

- इस वंश के संस्थापक बिम्बिसार थे। यह पहला ऐतिहासिक राजवंश था।
- इसकी राजधानी राजगृह या गिरिव्रज थी।
- बिम्बिसार 52 वर्षों तक मगध पर राज्य किया। यह प्रथम राजा था जिसने प्रशासनिक राज्य पर बल दिया। यह स्थायी सेना रखता था।
- बिम्बिसार बौद्ध धर्म का अनुयायी था।
- बिम्बिसार ने अंग राज्य के शासक ब्रह्मदत्त को हराकर अपने पुत्र अजातशत्रु को वहाँ का शासक बना दिया।
- बिम्बिसार ने विवाह के माध्यम से दहेज के रूप में लिए गए क्षेत्र से अपने साम्राज्य का विस्तार किया।
- बिम्बिसार की पहली पत्नी महाकोशला थी। जो कोशल राज की पुत्री और प्रसेनजीत की बहन थी। इनके साथ दहेज में काशी प्रांत मिला था। जिससे एक लाख की वार्षिक आय आती थी।
- बिम्बिसार की दूसरी पत्नी वैशाली (लिच्छवी) नरेश चेतक की पुत्री राजकुमारी चेल्लना थी। जिससे अजातशत्रु का जन्म हुआ था।
- बिम्बिसार की तीसरी पत्नी पंजाब के मद्र कुल की राजकुमारी छेमा थी।
- बिम्बिसार की चौथी पत्नी आम्रपाली थी। जो वैशाली की गणीका थी।
- बिम्बिसार अपनी पत्नी रानी चेल्लेना से प्रवाहित होकर जैन धर्म अपना लिया था।

- यह जैन तथा बौद्ध दोनों धर्मों के समकालीन थे।
- बिम्बिसार के पिता का नाम भाट्टीया था।
- पुराण में बिम्बिसार को श्रेणीक कहा जाता है।
- इसके समय अवन्ति के राजा चन्द्र प्रद्धोत को एक असाध्य रोग (लाइलाज बीमारी) हो गई। अतः इन्हें ठीक करने के लिए बिम्बिसार ने अपने राज वैद्य जीवक को भेजा। जीवक के इलाज से चन्द्र प्रद्धोत स्वस्थ हो गए। उन्होंने अवन्ति को मगध के अधीन कर दिया और अंग राज्य को जीतकर मगध सम्राज्य का विस्तार किया।
- बिम्बिसार छोटे राज्यों को युद्ध करके जीत लेता था। इसने वैशाली पर भी आक्रमण किया था, किन्तु सफल नहीं हो पाया।
- इसकी हत्या इसी के पुत्र अजातशत्रु ने 492 ई. पू. में कर दी।

## अजातशत्रु ( 492-460 ई.पू. )

- इसका अर्थ होता है, शत्रुओं का नाश करने वाला। इसे कुणिक भी कहते हैं। इसने अपनी पिता की हत्या कर दी थी। अतः इसे पितृहन्ता कहते हैं।
- यह अपने मामा प्रसेनजीत की पुत्री वजीरा से प्रेम करता था।
- इसने सुरक्षा की दृष्टि से राजगीर को किलाबंदी करा दी थी।
- राजगीर पांच पहाड़ियों से घिरा हुआ है।
- इसके समय सबसे बड़ी घटना महात्मा बुद्ध की मृत्यु थी।
- अजातशत्रु के काल में ही सत्यणी गुफा में राजगीर से पहली बौद्ध संगीति हुई।
- इसने अपने सहयोगी वर्षकार के सहयोग से वैशाली पर आक्रमण किया और उसे जीत लिया।
- इस युद्ध में उसने दो नए हथियार रथमूसल तथा महाशिला कंटक का प्रयोग किया।
- जैन धर्म के पहले उपांग में महावीर और अजातशत्रु के रिश्ते के बारे में बताया है।
- यह प्रारंभ में जैन तथा बाद में बौद्ध धर्म को अपना लिया।
- इसने 16 वर्ष तक मगध पर शासन किया था।
- इसके दो पुत्र उदयभद्र तथा उदायिन था।
- इसके पुत्र उदायिन ने इसकी हत्या कर दी।

## उदायिन ( 460-444 ई.पू. )

- इसने अपनी राजधानी कुसुमपुर ( पुरुषपुर ) बनाया था। यही कुसुमपुर ( पुरुषपुर ) आगे चलकर पाटलीपुत्र कहलाया था।
- इनकी माता का नाम पद्मावती था।
- इसने अपने पिता की हत्या की थी। इसलिए बौद्ध धर्म में इसे पितृहन्ता कहते हैं।
- इसका अन्य नाम उदायी या उदयभद्र था। यह चंपा का उप राजा था।



- पुराणों एवं जैन ग्रंथों में के अनुसार उदायिन ने गंगा एवं सोन के संगम के समीप एक शहर की स्थापना की, जिसका नाम **पाटलीपुत्र** रखा। इसके पुत्र ने पाटलीपुत्र को **पटना** रख दिया।
- इसने अपने राजधानी में **जैन चैत्य** का निर्माण करवाया था।
- इसकी हत्या किसी अनजान व्यक्ति द्वारा **चाकू से गोदकर** कर दी।
- उदायिन का पुत्र **नागदशक** एक **आयोग्य शासक** था। इसकी हत्या इसी के सेनापति **शिशुनाग** ने कर दी और एक **नया वंश शिशुनाग वंश** की स्थापना किया।
- महाभारत एवं पुराण में यह जानकारी मिलती है कि मगध पर सबसे पहले **वृहद्रथ वंश** का शासन था। जिसके संस्थापक **वृहद्रथ** थे।
- इसकी राजधानी गिरिब्रज (राजगृह) था।
- इस वंश का सबसे प्रतापी शासक **जरासंध** था। इसकी राजधानी गृहब्रज थी। जरासंध ने अपनी साम्राज्य विस्तार का पूरे उत्तर भारत में करना चाहते थे। पर **पाण्डव** और **कृष्ण** के विरोध में उसे अपने उद्देश्य में सफल नहीं होने दिया।
- भीम के हाथों **मल्ल युद्ध** में **जरासंध** मारा गया। जरासंध का पुत्र उसके बाद मगध का शासक बना।
- रिपुंजय वृहद्रथ वंश का अंतिम शासक था। उसकी हत्या उसके मंत्री **कुलीक** ने कर दी और अपने पुत्र को शासक बना दिया।
- घाटिया नामक सामंत ने कुलीक के पुत्र की हत्या कर अपने पुत्र बिम्बिसार को **मगध की गद्दी** पर बैठा दिया।
- किन्तु इस वंश के बारे में ऐतिहासिक **साक्ष्य** बहुत ही कम है। अतः **हर्यक वंश** को ही पहला **ऐतिहासिक वंश** मानते हैं।

### **शिशुनाग वंश ( 412-344 ई.पू. )**

- **शिशुनाग ( 412- 394 ई.पू. )**
- इस वंश के संस्थापक **शिशुनाग** थे।
- इन्होंने **अवंती तथा वत्सराज** पर अधिकार कर उसे मगध साम्राज्य में मिलाया।
- इन्होंने अपनी राजधानी पाटलीग्राम से हटाकर **वैशाली** को बनाया।
- इसके शासन के समय मगध साम्राज्य के अंतर्गत **बंगाल** से लेकर **मालवा** तक का क्षेत्र था।
- इस वंश का अगला शासक **कालाशोक** था।
- **कालाशोक ( 394-366 ई.पू. )**
- शिशुनाग के मृत्यु के पश्चात् **कालाशोक** मगध की गद्दी पर बैठा।
- इसका नाम पुराण तथा दिव्यावदान में **काक वर्ण** मिलता है।
- इसने वैशाली के स्थान पर **पाटलीपुत्र** को पुनः अपना राजधानी बनाया।
- इसके समय द्वितीय **बौद्ध संगीति** वैशाली में हुई थी।
- यह **ब्राह्मण वंश** का प्रथम संस्थापक माना जाता था।
- पुराण के अनुसार यह **क्षत्रीय** था।
- इस वंश का अंतिम शासक **नंदीवर्धन** था, जिसकी हत्या **महापद्म नंद** ने कर दी और **शिशुनाग वंश** के स्थान पर **नंद वंश** की स्थापना किया।

### **नंद वंश ( 344-323 ई.पू. )**

- इस वंश का सर्वाधिक महाशक्तिशाली संस्थापक **महापद्म नंद** थे। जो जाति के शूद्र थे। इन्होंने राजपूतों का विनाश करके **सर्वक्षत्रांतक ( क्षत्रीयों का नाश करने वाला )** की उपाधि धारण कर ली।
- महापद्म नंद को **भार्गव ( दूसरा परशुराम का अवतार )** भी कहा जाता था।
- इस वंश की जाति नाई (नापिथ) थी।
- राजानंद के प्रधानमंत्री का नाम राक्षस था।
- राक्षस का असली नाम विष्णुगुप्त था।
- केंद्रीय शासन पद्धति का जनक या पिता महापद्म नंद को माना जाता है।
- इस वंश के धन-दौलत के बारे में वर्णन चीनी यात्री ह्वेनसांग द्वारा की गई थी।
- व्याकरण के आचार्य पाणिनी महापद्म नंद के परम् मित्र थे।
- इस वंश के शासनकाल में उपवर्ष, वर्ष, रुचि, वर, कात्यायन जैसे विद्वान जन्म लिया था।
- इसी वंश के शासक ने एकराष्ट्र की विचार-धारा दिया था।
- इस वंश की राजधानी पाटलिपुत्र थी।
- इस वंश के समय मगध राजनैतिक दृष्टि से अत्यंत शक्तिशाली साम्राज्य बन गया।
- सम्राट महापद्म नंद पहले शासक थे। जिन्होंने गंगा घाटी की सीमाओं का अतिक्रमण कर विंध्य पर्वत के दक्षिण तक विजय पताका लहराई थी।
- इसने कलिंग जीतकर **एकराट** तथा **एकक्षत्र** की उपाधि हासिल की।
- यह कलिंग जीतकर पूरी तरह मगध में नहीं मिला पाया।
- इस वंश का द्वितीय शासक पण्डुक था।
- इस वंश का अगला शासक **घनानंद** था। यह बहुत ही क्रूर शासक था। इसने कलिंग में नहर निर्माण का कार्य किया था।
- इस वंश का सबसे लालची एवं धनसंग्रही शासक में घनानंद को गिना जाता था।
- जब सिकंदर भारत पर आक्रमण किया उस समय नंद वंश का अंतिम शासक घनानंद था।
- विश्व विजेता सिकंदर के भारत पर आक्रमण के समय सम्राट घनानंद की विशालतम सेना देखकर के हौसला पस्त हो गया। इतनी विशालतम शक्ति के सामने सिकंदर जैसे महान विश्व विजेता भी नतमस्तक होकर वापस लौटने में ही अपनी भलाई समझी।
- सिकंदर के भारत से जाने के बाद मगध साम्राज्य में अव्यवस्था और अशांति फैल गई। प्रजा घनानंद के अत्याचार से ग्रस्त थे। पूरे राज्य में अराजकता फैली हुई थी।
- इसने अपने दरबार से चाणक्य को अपमान करके निकाल दिया, जिस कारण चाणक्य अपने प्रिय शिष्य चन्द्रगुप्त मौर्य के सहयोग से मगध में फैली अराजक और विस्फोटक स्थिति का लाभ उठाकर घनानंद की हत्या कर दी और मौर्य वंश की स्थापना कर दी।

## मौर्य वंश की स्थापना से पूर्व भारत पर विदेशी आक्रमण (फारसी आक्रमण)

- ☛ भारत के पूर्वी क्षेत्र में मगध एक शक्तिशाली राज्य था।
- ☛ ये अगल-बगल के छोटे राजाओं को हराकर भारत के पूर्वी क्षेत्र में राजनीतिक स्थिरता ला दी थी। किन्तु भारत के पश्चिमोत्तर क्षेत्र (पंजाब) में छोटे-छोटे राजाओं का शासक था, जो कमजोर शासक थे। जिस कारण विदेशी आक्रमणकारी पश्चिमोत्तर क्षेत्र पर ही आक्रमण किया।
- ☛ भारत पर प्रथम विदेशी आक्रमण ईरान (फारस) के हखमनी वंश के राजा ने किया। हखमनी वंश के संस्थापक साइरस-II थे।
- ☛ इस वंश का शासक डेरियस-I (दायबर) ने भारत पर आक्रमण करने वाला पहला विदेशी राजा था। इसने गांधार तथा कम्बोज के शासक को हरा दिया।
- ☛ इसने भारत में फारसी शासन का विस्तार किया।
- ☛ डेरियस प्रथम के बाद फारस का शासन जेरेक्स प्रथम बना।
- ☛ जेरेक्स प्रथम के बाद डेरियस-III फारस का शासक बना।
- ☛ इस वंश के अंतिम शासक डेरियस-III को सिकंदर ने पराजित कर दिया और हखमनी वंश का अंत कर दिया और फारस पर अपना राज्य स्थापित कर दिया।

## मकदूनिया/यूनानी आक्रमण

- ☛ ईरान आक्रमण के बाद भारत पर दूसरा महत्वपूर्ण आक्रमण यूनानियों का हुआ।
- ☛ यूनान के राजा फिलिप द्वितीय का पुत्र सिकंदर था।
- ☛ इनके माता का नाम ओलम्पिया था।
- ☛ यह अपने पति को जहर देकर हत्या कर दी थी।
- ☛ सिकंदर का मूल नाम एलेक्जेंडर मेसेडोनियन था।
- ☛ इसका जन्म मेसिडोनिया (पेला) में 356 ई.पू. में हुआ।
- ☛ इसकी पत्नी रूखसाना/रेक्सोना थी। रूखसाना के पिता फारसी शासक शाहदारा थे।
- ☛ इसके घोड़े का नाम बुफेकराल/ब्यूसेफेलरू/बऊकेफला था।
- ☛ इसके गुरु का नाम अरस्तु था। जिसके नाम पर उसने झेलम नदी के तट पर एक नगर भी बसाया था।
- ☛ अरस्तु के गुरु प्लेटो थे, जिनको अफलातून कहा जाता था।
- ☛ प्लेटों के गुरु सुकरात थे, जिन्हें जहर का प्याला देकर मार दिया गया।
- ☛ भारत में सिकंदर का सबसे पहला सामना तक्षशिला के राजकुमार आम्बिक से हुआ था। वहाँ के राजा आम्बिक ने सिकंदर की अधीनता स्वीकार ली। गांधार की राजधानी तक्षशिला थी।
- ☛ 328 ई.पू. में सिकंदर ने ईरान और अफगानिस्तान पर विजय प्राप्त किया।

- ☛ पंजाब के राजा पोरस (पुरु) और सिकंदर के बीच झेलम नदी के तट पर युद्ध हुआ था।
- ☛ इस युद्ध में पोरस हार गए, किन्तु पोरस की वीरता को देखकर सिकंदर ने उन्हें मित्र बना लिया, और सिकंदर की पत्नी रेक्सोना ने पोरस की कलाई पर राखी बांधी।
- ☛ 326 ई.पू. में हुए इस युद्ध को झेलम, वितस्ता या हाइडेस्पीज का युद्ध कहते हैं।
- ☛ सिकंदर स्थल मार्ग से 325 ई० में वह अपनी सेना के साथ भारत से लौट गया था।
- ☛ 323 ई.पू. में ईराक के बेबिलोन में (डायरिया) होने के कारण सिकंदर की 33 वर्ष की अवस्था में मृत्यु हो गई।
- ☛ सिकंदर का मकबरा बेबीलोन में है।
- ☛ बेबीलोन का झूलता हुआ बगीचा 7 अजूबों में से एक है।
- ☛ सिकंदर भारत से कुशल बढ़ई प्राप्त करना चाहता था।
- ☛ सिकंदर भारत में 19 महीने तक रहा था।
- ☛ सिकंदर के साथ भारत आनेवाला लेखक निर्याकस, आने सिक्रेटस, ऑस्टिबुलस थे।
- ☛ सिकंदर हिन्दकुश पर्वत (खैबर दर्रा) को पार करके भारत आया था।
- ☛ सिकंदर की सेना ने व्यास नदी (हाईफेनिया) को पार करने से मना कर दिया।
- ☛ सिकंदर अपनी सेना को नदी पार करने के लिए बहुत प्रेरित किया, लेकिन उसकी सेना ने व्यास नदी के रौद्र रूप को देख कर भारत से युद्ध के लिए आगे बढ़ने से इनकार कर दिया। अतः स्थल मार्ग से 325 ई० पू० सिकंदर अपनी सेना के साथ भारत से लौट गया।
- ☛ सिकंदर का थल सेना के सेनापति सेल्युकस निकेटर था। जबकि जल सेना का सेनापति निर्याकस था।
- ☛ सिकंदर का पुत्र सिकंदर चतुर्थ था जो पत्नी रूखसाना का पुत्र था।
- ☛ सिकंदर लड़ाई में खुद सेना से आगे होकर लड़ने लगता था जिससे सेना का मनोबल और बढ़ जाता था।
- ☛ सिकंदर को विश्व विजेता इसलिए कहा जाता है कि उस समय यूनान के लोगों को विश्व की जितनी जानकारी थी उन सभी क्षेत्रों को जीत लिया था।
- ☛ सिकंदर पूरी दुनिया के 60% भाग को जीत लिया था।
- ☛ सिकंदर ने एशिया माइनर (तुर्की), सीरिया, मिश्र, इराक, इरान, सिन्ध, गंधार, कंबोज जीत लिया था।
- ☛ सिकंदर को पूरी दुनिया जीतने का सपना उसके गुरु अरस्तु ने दिखाया था।



## मौर्य वंश (Maurya Dynasty)

➤ मौर्य वंश के बारे में जानकारी के कई स्रोत हैं—

- (i) **पुरातात्विक स्रोत** : जूनागढ़ अभिलेख, साहगौर अभिलेख, अशोक के अभिलेख, भवन स्तूप एवं गुफा, मुद्रा (आहत/पंचमार्क), मृदभांड (काली पॉलिस वाले)।
- (ii) **विदेशी यात्री का विवरण** : इण्डिका (मेगास्थनीज), आस्टिन और जस्टिन।
- (iii) **साहित्यिक स्रोत** : पुराण, अर्थशास्त्र, राजतरंगिणी, मुद्रा-राक्षस (विशाखदत्त), जैन तथा बौद्ध ग्रन्थ, कथा सरिता सागर, वृहत्कथा मंजरी (जैन ग्रंथ), कल्पसूत्र।

### चन्द्रगुप्त मौर्य (322 - 298 ई.पू.)

- प्राचीन भारत का राजवंश जिसने 137 वर्ष तक भारत में राज्य किया। इसके स्थापना का श्रेय चंद्रगुप्त मौर्य और उसके प्रधानमंत्री चाणक्य (कौटिल्य) को दिया जाता है। जिन्होंने नंद वंश के राजा घनानंद को पराजित किया।
  - चन्द्रगुप्त मौर्य के गुरु और प्रधानमंत्री चाणक्य थे।
  - इन्होंने अपना राजधानी पाटलीपुत्र को बनाया।
  - 322 ई.पू. में चन्द्रगुप्त गद्दी पर बैठा।
  - इनकी माता का नाम मोरा था। जिसका संस्कृत में अर्थ मौर्य होता है इसलिए इस वंश का नाम मौर्य वंश पड़ा।
  - इनकी शिक्षा तक्षशिला में हुई थी।
  - मौर्यकाल में शिक्षा का सबसे प्रसिद्ध केन्द्र तक्षशिला था।
  - विशाखदत्त ने चंद्रगुप्त मौर्य के लिए बृषल (निम्न जाति) शब्द का प्रयोग किया।
  - चंद्रगुप्त मौर्य का साम्राज्य उत्तर में काश्मीर से लेकर दक्षिण में कर्नाटक (मैसूर) तक तथा उत्तर-पश्चिम में इरान (फारस) से लेकर पूरब में बंगाल तक फैला था।
  - चन्द्रगुप्त मौर्य जब मगध का शासक था तब यूनानी आक्रमणकारी सेल्युकस निकेटर ने (305 ई.पू. में) आक्रमण कर दिया, किन्तु चन्द्रगुप्त मौर्य ने उसे पराजित कर दिया और उसकी बेटी कॉर्नेलिया (हेलेना) से विवाह कर लिया और दहेज में एरिया (हेरात), आराकोसिया (कंधार), जेड्रोसिया (ब्लूचिस्तान) तथा पेरिपनिसडाई (काबुल) ले लिया।
  - इस बात का उल्लेख एप्पियानस नामक यूनानी ही देता है।
  - चन्द्रगुप्त मौर्य ने भी सेल्युकस निकेटर को 500 हाथी उपहार में दिए थे।
  - भारतीय इतिहास का प्रथम महान सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य को कहा जाता है।
  - सेल्युकस निकेटर ने अपना एक राजदूत मेगास्थनीज को चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में भेजा। यूनानी लेखक पाटलीपुत्र को पोलिब्रोथा कहते थे।
  - विशाखदत्त की पुस्तक मुद्राराक्षस में नंद वंश के पतन तथा मौर्य वंश के उदय की चर्चा है।
  - इनके अनुसार चाणक्य के सहयोग से चन्द्रगुप्त मौर्य ने घनानंद का अंत कर लिया और घनानंद की पुत्री दुर्धरा से विवाह कर लिया।
  - मेगास्थनीज की पुस्तक इंडिका से मौर्य वंश की जानकारी मिलती है। इंडिका में लिखा है कि मौर्य काल में समाज 7 भागों में बंटा था—
1. दार्शनिक, 2. अहिर (पशुपालक), 3. सैनिक, 4. किसान, 5. निरीक्षक, 6. कारीगर तथा 7. सभासद (मंत्री)।
- इनमें से सर्वाधिक संख्या किसानों की थी तथा भारतीयों को लिखने में रूची नहीं थी।
  - चाणक्य ने अर्थशास्त्र नामक ग्रंथ की रचना की है। इससे हमें मौर्य साम्राज्य के राजनितिक गतिविधि की जानकारी मिलती है।
  - मौर्य वंश के बारे में सर्वाधिक जानकारी चाणक्य की पुस्तक अर्थशास्त्र से मिलती है। जो एक राजनैतिक एवं प्रशासनिक पुस्तक है। इस पुस्तक के 15 अधिकरण (Lesson) हैं। इस पुस्तक में राजा के राजत्व सिद्धांत की चर्चा है, और कहा गया है कि एक मजबूत राजा को संप्राप्त सिद्धांत पालन करना होगा।
  - चन्द्रगुप्त मौर्य ने बंगाल अभियान भी किया था, जिसकी जानकारी माहस्थान अभिलेख से मिलती है।
  - चंद्रगुप्त मौर्य के दक्षिण विजय के बारे में जानकारी तमिलग्रंथ 'अहनानूर' एवं 'मूरनानून' तथा अशोक के अभिलेख से मिलती है।
  - गोरखपुर में स्थित साहगौर ताम्र अभिलेख से अकाल के दौरान चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा किए गए राहत कार्यों की चर्चा है।
  - जैन ग्रंथ रजावली में उल्लेख मिलता है कि चंद्रगुप्त मौर्य अपने पुत्र बिन्दुसार को गद्दी सौंप दिया था।
  - चन्द्रगुप्त मौर्य को जैन धर्म की शिक्षा भद्रबाहु के नेतृत्व से मिली थी। भद्रबाहु के साथ ही चन्द्रगुप्त मौर्य कर्नाटक के श्रवण बेलगोला चला गया। जहाँ 298 ई.पू. संलेखना (संधारा) विधि से प्राण त्याग दिया।
  - रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख (गिरनार) गुजरात से जानकारी मिलती है, कि चन्द्रगुप्त मौर्य के राज्यपाल पुष्यगुप्त ने सरकारी खर्च से गुजरात के सौराष्ट्र में सुदर्शन झील बनवायी थी।



- ☞ इस अभिलेख ने चन्द्रगुप्त मौर्य के पश्चिमी विस्तार की जानकारी मिलती है।
- **शरीर के अंगों के समान राज्य के 7 अंग होते हैं। जो निम्नलिखित हैं-**
  - (i) राजा → स्वामी → शीर्ष (Head)
  - (ii) मंत्री → अमात्य → आँख (Eye)
  - (iii) जनपद → क्षेत्र और जनसंख्या → पैर (Leg)
  - (iv) दुर्ग → किला → बांह (Arm)
  - (v) कोष → धन → मुख (Mouth)
  - (vi) दंड/सेना → न्याय → मस्तिष्क (Brain)
  - (vii) मित्र → सहयोगी → कान (Ear)
- ☞ चाणक्य को विष्णुगुप्त या कौटिल्य भी कहते हैं। यह तक्षशिला विश्वविद्यालय के आचार्य थे।
- ☞ महावंश टिका में उल्लेख मिलता है कि चाणक्य तक्षशिला के एक ब्राह्मण थे।
- ☞ चाणक्य को भारत का **मैक्यावेली** कहा जाता है।
- ☞ इसके पिता का नाम गुणी था।
- ☞ प्लूटार्क ने चन्द्रगुप्त मौर्य के लिए ऐंड्रॉकोटस शब्द का प्रयोग किया है।
- ☞ जस्टिन ने भी चन्द्रगुप्त मौर्य के लिए सेण्ड्रेकोटस शब्द का प्रयोग किया है।
- ☞ Willian Jones ने यह पहचान कराया कि सेण्ड्रेकोटस ही चन्द्रगुप्त मौर्य हैं।
- ☞ प्लूटार्क के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य ने 6 लाख की सेना लेकर चाणक्य की सहायता से संपूर्ण भारत पर रौंद डाला था।

### बिन्दुसार (298-269 BC)

- ☞ यह चन्द्रगुप्त मौर्य का उत्तराधिकारी था।
- ☞ इसकी माता दुरधरा थी।
- ☞ इसके राज्य का संचालक चाणक्य करते थे।
- ☞ इसके पत्नी का नाम चारुमित्रा और शुभद्रांगी थी।
- ☞ इसके पुत्र का नाम सुशीम, अशोक और तिष्य था।
- ☞ इसके दरबार में सीरिया के नरेश एण्टियोक्स ने अपना राजदूत डायमेक्स को भेजा।
- ☞ इसे मेगास्थनीज का उत्तराधिकारी माना जाता है।
- ☞ स्ट्रैबो के अनुसार बिन्दुसार ने सीरिया के नरेश से अंजीर मीठी शराब तथा दार्शनिक मांगा था।
- ☞ वहाँ के राजा एण्टिओक्स प्रथम ने अंजीर तथा मीठी शराब दिया किन्तु दार्शनिक देने से मना कर दिया क्योंकि सीरिया में दार्शनिक का व्यापार नहीं होता है।
- ☞ बिन्दुसार के दरबार में मित्र के राजा टॉलमी द्वितीय ने अपना राजदूत डायनोसियस को भेजा।
- ☞ बिन्दुसार के समय तक्षशिला (कश्मीर) में दो बार विद्रोह हुए।

- ☞ उस समय तक्षशिला का राजकुमार बिन्दुसार का बड़ा बेटा सुशीम था, जो इस विद्रोह को दबाने में असफल रहा।
- ☞ बिन्दुसार ने अपने छोटे पुत्र अशोक, जो उस समय अवन्ति का राज्यपाल था, उसे विद्रोह दबाने के लिए तक्षशिला भेजा।
- ☞ अशोक ने क्रूरता पूर्वक विद्रोह को दबा दिया।
- ☞ बिन्दुसार आजीवक संप्रदाय को मानने वाला था। जिसके स्थापना मोखलीपुत्र गोशाल ने किया था।
- ☞ बिन्दुसार को **अमित्रघात** एवं **शत्रुविनाशक** भी कहते हैं।
- ☞ वायु पुराण में इसे **भद्रसार** भी कहा गया है।
- ☞ जैन धर्म में इसे **सिंहसेन** कहा गया है।
- ☞ यह अपने शासनकाल में कोई नया प्रदेश नहीं जीता था।
- ☞ भारतीय इतिहास में इसको **पिता का पुत्र और पुत्र का पिता** की उपमा से जाना जाता है।

### सम्राट अशोक (269-232 BC)

- ☞ इसका जन्म 304 ई.पू. पाटलीपुत्र में हुआ।
- ☞ इसके पिता का नाम **बिन्दुसार** तथा माता का नाम **शुभद्रांगी** था। जिसे **धर्मा** के नाम से जाना जाता था।
- ☞ बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार अशोक ने राजा बनने के लिए अपने 99 भाईयों की हत्या करके एक कुआँ में डाल दी थी वह कुआँ आज भी पटना के अगमकुआँ नामक स्थान पर स्थित है।
- ☞ 269 ई.पू. में अशोक ने अपना **राज्याभिषेक** कराया।
- ☞ राज्याभिषेक के 8वें वर्ष अर्थात् 261 ई.पू. में अशोक ने **कलिंग** पर आक्रमण किया तथा कलिंग के राजधानी **तोशली** पर अधिकार कर लिया।
- ☞ कलिंग आक्रमण की जानकारी खारवेल के **हाथीगुफा** अभिलेख से मिलती है।
- ☞ इस अभिलेख के अनुसार कलिंग आक्रमण के समय कलिंग का राजा **नंद राज** था।
- ☞ कलिंग में हुए **भीषण नरसंहार** को देखकर अशोक का **हृदय परिवर्तित** हो गया और अशोक ने युद्ध नीति को सदा के लिए त्याग दिया और **भैरिघोष** के स्थान पर **धम्मघोष** की स्थापना किया।
- ☞ ऐसा माना जाता है कि अशोक ने **हाथियों** को प्राप्त करने के लिए **कलिंग** आक्रमण किया था।
- ☞ कलिंग आक्रमण के बाद अशोक ने **बौद्ध धर्म** अपना लिया।
- ☞ इसे बौद्ध धर्म अपनाने की प्रेरणा इसके **भतीजे निग्रोथ** से मिली जबकि **बौद्ध धर्म** की शिक्षा उपगुप्त ने दी थी।
- ☞ अशोक शुरूआत में **ब्राह्मण धर्म** मानता था। परंतु बाद में **बौद्ध धर्म** अपना लिया।
- ☞ अशोक का बौद्ध धर्म उसका **व्यक्तिगत धर्म** था। उसने कभी भी बौद्ध धर्म को राजकीय धर्म घोषित नहीं किया। किन्तु अशोक बौद्ध धर्म को संरक्षण देता था।
- ☞ अशोक ने **बौद्ध धर्म** के प्रचार के लिए अपने बेटे **महेन्द्र** एवं बेटी **संघमित्रा** को **श्रीलंका** भेजा।



| अशोक द्वारा भेजे गए धर्मप्रचारक |                       |
|---------------------------------|-----------------------|
| धर्मप्रचारक                     | देश                   |
| महेन्द्र और संघमित्रा           | श्रीलंका              |
| महाधर्मरक्षित                   | महाराष्ट्र            |
| सोना तथा उत्तरा                 | सुवर्ण भूमि(म्यांमार) |
| महारक्षित                       | यवण देश               |
| महादेव                          | मैसूर                 |
| मज्झिम                          | हिमालयी क्षेत्र       |
| मज्झान्तिक                      | काश्मीर एवं गंधार     |

- ☞ बौद्ध धर्म ग्रहण करने के बाद अशोक ने अपने राज्याभिषेक के आठवें वर्ष से ही धर्म यात्रा प्रारंभ की जिसका क्रम इस प्रकार है— बोधगया, कुशीनगर, लुम्बिनी नगर, कपिल वस्तु, शारनाथ तथा श्रावस्ती।
- ☞ अशोक ने अपने शासन के दसवें वर्ष सर्वप्रथम बोध गया की यात्रा की। उसके बाद बीसवें वर्ष लुम्बिनी नामक ग्राम की यात्रा की और कर (Tax) घटा कर केवल 1/8 भाग ही कर लेने की घोषणा की।
- ☞ अशोक के काल में तीसरी बौद्ध संगीति 255 ई.पू. में पाटलीपुत्र में हुई थी। जिसका अध्यक्ष **मोग्गलीपुत्त तिस्स** था।
- ☞ श्रीलंका के राजा ने सिंघली संप्रदाय को छोड़कर बौद्ध धर्म अपना लिया। अशोक धार्मिक रूप से सहिष्णु था अर्थात् वह किसी भी धर्म के साथ भेद-भाव नहीं करता था।
- Note :-** श्रीलंका का राजा अशोक के उपदेशों का पालन करते थे, किन्तु श्रीलंका अशोक के अधीन नहीं था।
- ☞ अशोक के समय मुद्राएं सोने (स्वर्ण), चाँदी (कार्षापण) एवं ताँबे (काकणी) आदि के होते थे।
- **अशोक ने आजीवक संप्रदाय के लोगों को गया में स्थित बराबर की पहाड़ियों में 4 गुफा दान में दिया—**
  - (i) सुदामा
  - (ii) कर्ण
  - (iii) चोपाड़
  - (iv) विश्व झोपड़ी
- ☞ आजीवकों के लिए नागार्जुन गुफा दशरथ द्वारा प्रदान किया गया था। इसका उत्तराधिकारी कुणाल था।
- ☞ अशोक की 5 पत्नियाँ (असंधिता, देवी, करुआती, पदमावती, नित्यारक्षक) थी, जिसमें अशोक पर सर्वाधिक प्रभाव **कारुवाकी** का था।
- ☞ **कारुवाकी** के कहने पर ही अशोक ने युद्ध त्याग दिया था।
- ☞ कल्हण के पुस्तक राजतरंगिणी से पता चलता है कि उसका अधिकार काश्मीर पर भी था। अशोक ने काश्मीर में झेलम नदी के तट पर श्रीनगर की स्थापना किया तथा नेपाल में ललीतपतनम्/ देवपतनम् नामक नगर बसाया था।
- ☞ अशोक भारत का पहला ऐसा शासक था, जिसने अपने संदेशों को अभिलेख के माध्यम से जनता तक पहुँचाया।

- ☞ अशोक को अभिलेख लिखने की प्रेरणा ईराक के राजा डेरियस (दारा) या दायबाहु से मिली।
- **अशोक के अभिलेखों की भाषा प्राकृत थी, जिसे 4 लिपियों में लिखा गया था—**
  - (i) **ब्राह्मी लिपी** : यह सर्वाधिक भारत में मिले हैं। इसे बाईं से दाईं ओर लिखा जाता था।
  - (ii) **खरोष्ठी लिपी** : यह पाकिस्तान के उत्तर-पश्चिम में मिले हैं। इसे दाईं से बाईं ओर लिखा जाता था।
  - (iii) **अरमाइक लिपी** : यह अफगानिस्तान से मिली हैं।
  - (iv) **ग्रीक लिपी** : यह अफगानिस्तान के उत्तरी सीमा से मिली है।
- ☞ अशोक के शिलालेख को पहली बार टी. फेन्थैलर ने 1750 ई. में खोजा।
- ☞ अशोक के अभिलेख को पढ़ने और समझने की पहली सफलता 1837 ई. में जेम्स प्रिंसेप को मिली।
- ☞ अशोक ने अपने अधिकतर अभिलेखों में अपना नाम देवनाम प्रियदर्शी (देवताओं का पसंद) लिखा है।
- ☞ मध्य प्रदेश के गुर्जरा तथा कर्नाटक की मास्की, नेदर तथा उद्गोलान अभिलेखों में अशोक का स्पष्ट नाम अशोक लिखा हुआ है।
- ☞ भाबु अभिलेख में अशोक के लिए मगध सम्राट नाम का प्रयोग हुआ।
- ☞ असम से अशोक की कोई भी साक्ष्य नहीं मिला है। जिससे यह पता चलता है कि यह क्षेत्र अशोक के सम्राज्य से बाहर था।
- ☞ अशोक 84000 स्तूपों का निर्माण कराया था।
- **अशोक के शिलालेखों को 3 भागों में बांटा गया है—**
  - (1) **शिलालेख**— इसे वृहदशिलालेख तथा लघुशिलालेख में विभाजित किया गया है।
  - (2) **स्तंभलेख**— इसमें दीर्घ स्तंभलेख एवं लघुस्तंभलेख में विभाजित किया गया है।
  - (3) **गुहालेख**— ये गुफाओं में लिखे जाते थे।

### अशोक के चतुर्दश शिलालेख

1. **प्रथम शिलालेख** : इसमें अहिंसा पर बल दिया गया है और पशुबली पर रोक लगाया गया है। सभी मनुष्य मेरे बच्चे हैं।
2. **द्वितीय शिलालेख** : इसमें पशु चिकित्सा की चर्चा है साथ ही दक्षिण भारतीय राज्य जैसे— चेर, पाण्ड्य, श्रीलंका, केरलपुत्र, सतीयपुत्र की चर्चा है, किन्तु चोल वंश की चर्चा नहीं है।
3. **तृतीय शिलालेख** : इसमें अशोक ने 3 अधिकार राजुक, युक्तक तथा प्रदेशक का चर्चा किया है। जो धम्म के प्रचार के लिए थे। अशोक ने इस शिलालेख में राजकीय अधिकारियों को आदेश जारी किया कि वे हर पांचवें वर्ष दौरे पर जाय। इसमें धर्म संबंधित कुछ नियम भी निर्देशित हैं।
4. **चतुर्थ शिलालेख** : इसमें भैरिघोष (युद्ध) के स्थान पर धम्मघोष (बौद्ध) के नीति का चर्चा है।
5. **5वाँ शिलालेख** : इसमें धम्म महामात्र नामक अधिकारी की चर्चा है, जो धार्मिक जीवन की देख-रेख करता है। इसमें समाज तथा वर्ण व्यवस्था उल्लेख है।

6. **6वाँ शिलालेख** : इसमें अशोक ने कहा है कि मेरा अधिकारी जनकल्याण के लिए जब चाहे मुझसे मिल सकते हैं। इसमें आत्म नियंत्रण संबंधित शिक्षा दी गई है।
7. **7वाँ शिलालेख** : इसमें अशोक ने विभिन्न धर्मों के आपसी समन्वय की बात कही है। यह सबसे बड़ा शिलालेख है। इसमें तीर्थ यात्रा की चर्चा है।
8. **8वाँ शिलालेख** : इसमें अशोक के धर्म यात्रा की चर्चा है, जो इसके राजाभिषेक से 8वें वर्ष से प्रारंभ होती है। बोध गया के भ्रमण का उल्लेख।  
राज्याभिषेक के 10वें वर्ष - गया  
राज्याभिषेक के 20वें वर्ष - लुम्बिनी।
9. **9वाँ शिलालेख** : इसमें अशोक ने छोटे-मोटे त्योहारों पर प्रतिबंध लगा दिया। इस शिलालेख में सच्ची शिष्टाचार और सच्ची भेंट का उल्लेख है।
10. **10वाँ शिलालेख** : इसमें धम्म के महत्व के बारे में चर्चा है। इसमें सम्राट अशोक ने आदेश जारी किया कि राजा तथा उच्च राज्य अधिकारी हमेशा ही प्रजा के हित के बारे में सोचें। इसमें धम्म नीति का व्याख्या की चर्चा की गई है।
11. **11वाँ शिलालेख** : अशोक ने कहा है, कि मेरे अधिकारी ब्राह्मणों को न सताएं।
12. **12वाँ शिलालेख** : इसमें स्त्रियों के स्थिति में सुधार के लिए स्त्री महामात्र नामक अधिकारी की चर्चा है एवं हर प्रकार के विचारों के सम्मान की बात कही गयी है।
13. **13वाँ शिलालेख** : इसमें कलिंग युद्ध की चर्चा है तथा साथ ही सम्राट अशोक के हृदय परिवर्तन की बात भी वर्णित है। साथ ही पड़ोसी राजाओं के संबंध का भी उल्लेख है।
14. **14वाँ शिलालेख** : अशोक ने कहा है, कि मैंने ऊपर लिखे गए शिलालेख के अतिरिक्त बहुत से काम किए हैं, जो इसमें नहीं लिखे गए हैं। इसके लिए लिखने वाला जिम्मेदार है, मैं नहीं। इसमें जनता को धार्मिक जीवन बिताने के लिए प्रेरित किया गया है।

|     | शिलालेख      | लिपि     | स्थान                              |
|-----|--------------|----------|------------------------------------|
| 1.  | शाहबाजगढ़ी   | खरोष्ठी  | पेशावर (पाकिस्तान)                 |
| 2.  | मनसेहरा      | खरोष्ठी  | हजारा जिला (पाकिस्तान)             |
| 3.  | सासाराम      | ब्राह्मी | रोहतास जिला (बिहार, भारत)          |
| 4.  | धौली         | ब्राह्मी | पुरी (उड़ीसा)                      |
| 5.  | येरागुड़ी    | ब्राह्मी | चितल दुर्ग (मैसूर)                 |
| 6.  | पालिकगुण्डु  | ब्राह्मी | आविमठ (कर्नाटक)                    |
| 7.  | वैराट (भाबू) | ब्राह्मी | जयपुर (राजस्थान)                   |
| 8.  | कलसी         | ब्राह्मी | देहरादून (उत्तरांचल)               |
| 9.  | गिरिनार      | ब्राह्मी | जूनागढ़ के पास काठियावाड़ (गुजरात) |
| 10. | धौली         | ब्राह्मी | पुरी (उड़ीसा)                      |
| 11. | सोपारा       | ब्राह्मी | थाने के पास (महाराष्ट्र)           |
| 12. | जौगढ़        | ब्राह्मी | गंजाम जिला (उड़ीसा)                |
| 13. | रूपनाथ       | ब्राह्मी | जबलपुर (मध्य प्रदेश)               |
| 14. | एरागुड़ी     | ब्राह्मी | कुर्नूल (आन्ध्र प्रदेश)            |

## अशोक के स्तंभलेख (लघु अभिलेख)

- **भाबू अभिलेख**
  - ☛ राजस्थान के भाबू अभिलेख में अशोक ने खुद को मगध का सम्राट बताया है।
  - ☛ भाबू अभिलेख में इसने बौद्ध धर्म के त्रिरत्न बुद्ध, धम्म और संघ की चर्चा है।
- **अशोक के 7 स्तंभलेख (लघु अभिलेख) मिले हैं-**
  - (i) **रूमनदेई अभिलेख (नेपाल)** : यह नेपाल के लुम्बिनी में है। यह आरमाईक लिपी में है। यह सबसे छोटा अभिलेख है। यह एक मात्र अभिलेख है जिसमें अशोक ने प्रशासनिक चर्चा न करके आर्थिक क्रियाकलाप की चर्चा की है।
  - (ii) **कौशांबिक अभिलेख (UP)** : इसमें अशोक ने अपनी पत्नी कारुवाकी द्वारा दिए गए दान की चर्चा की है। अतः इसे रानी की अभिलेख कहते हैं। अकबर ने इसे इलाहाबाद स्थापित कर दिया।
  - (iii) **टोपरा अभिलेख (हरियाणा)** : फिरोजशाह तुगलक ने इसे दिल्ली के तुगलकाबाद में स्थापित करा दिया।
  - (iv) **मेरठ अभिलेख (UP)** : पहले यह मेरठ में था। फिरोजशाह तुगलक ने इसे दिल्ली के तुगलकाबाद में स्थापित कर दिया।
  - (v) **रामपूर्वा अभिलेख** : यह बिहार के चंपारण में है। इसकी खोज 1872 ई. में कारलायल ने की।
  - (vi) **लौरिया नंदन गढ़** : यह बिहार के चंपारण में है।
  - (vii) **लौरिया अरेराज** : यह बिहार के चंपारण में है।
- **निगाली सागर स्तंभलेख (नेपाल)**
  - ☛ इस स्तंभलेख से पता चलता है कि अशोक अपने राज्याभिषेक के बारहवें वर्ष निगाली सागर आया तथा यहाँ कनकमुनि के स्तूप का संवर्धन किया।
- **सर-ए-कुना अभिलेख**
  - ☛ यह अफगानिस्तान के कांधार से मिला है। जो ग्रीक तथा अरमाईक भाषा में है।
  - ☛ कलिंग अभिलेख में अशोक ने कहा है, कि संसार के सभी मानव मेरी संतान (पुत्र) हैं। मैं एक माँ की भाँति उसके सांसारिक तथा प्रलौकिक जीवन की कामना करता हूँ। अशोक ने कहा है, कि जिस प्रकार एक माँ अपने बच्चे को योगाधाम को देकर निश्चित हो जाती है। उसी प्रकार मैं भी समाज की देख-रेख के लिए राजूक को नियुक्त किया है।
  - ☛ राजूक अच्छे व्यक्ति को पुरस्कृत कर सकते हैं और गलत व्यक्ति को दंडित कर सकते हैं।
  - ☛ अशोक के गुहालेखों की संख्या 3 हैं। जो बिहार में गया के निकट बराबर की पहाड़ी की गुफा में स्थित है। यहाँ 3 गुफाएं हैं। इनमें स्थित गुहालेखों में आजीवकों को दिए गए दान का उल्लेख मिलता है।

- अशोक को अभिलेख लिखने के लिए पत्थर उत्तरप्रदेश के चुनार से मिले हैं।

### अशोक की धम्म यात्रा

- अशोक ने लोगों को नैतिकता सिखाने के लिए जो नियम कानून की संहिता बनाई उसे ही धम्म कहते हैं। अशोक का धम्म स्वनिर्णय पर आधारित था।
- अशोक की धम्म की परिभाषा राहुलोवादसुत्र से ली गई है।
- अपने आप को नियंत्रित करना धम्म नीति का मूल सिद्धांत है।
- अशोक ने अपने दूसरे एवं सातवें स्तम्भ लेखों में धम्म के गुणों (सत्यवादीता, पवित्रता, साधुता, मृदुता, दान, दया, कल्याण) को बताया है।
- अशोक ने कहा है कि व्यक्ति अपने माता-पिता की आज्ञा मानें। व्यक्ति ब्राह्मण तथा भिक्षुक का आदर करें।
- व्यक्ति-दास तथा सेवकों के प्रति उदार रहें।
- व्यक्ति को जिओ-और-जिने-दो का पालन करना चाहिए।

### मौर्यकालीन आर्थिक व्यवस्था

- इस समय अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि, पशुपालन तथा कारखाना था।
- सरकारी भूमि को सीता भूमि कहा जाता था।
- निजी भूमि को भाग कहा जाता था।
- बिना वर्षा के अच्छी खेती को आदेवमातृक कहा जाता था।
- इस समय भूमि का उत्पादन का 1/6 (कौटिल्य के अनुसार) या 1/4 (मेगास्थनीज के अनुसार) लिया जाता था।
- बिक्री कर मूल्य का 10वां भाग होता था।
- भूमि माप वाले कर को रज्जू कहा जाता था।
- बलि एक प्रकार का अतिरिक्त उपज 'कर' था।
- चारागाह कर को विवीत कहा जाता था।
- अकाल के समय कोई कर नहीं लिया जाता था।

### मौर्यकालीन मुद्राएँ

- मौर्यकाल के राजकीय मुद्रा पण थी। जो चांदी का सिक्का हुआ करता था। इस काल में मुद्रा के रूप में **आहत मुद्रा** का प्रचलन रहा था।
- मुद्राओं का परीक्षण करने वाला अधिकारी को **रुद्रदर्शक** कहा जाता था।
- इस समय चांदी के मुद्रा को कार्षापण कहा जाता था।
- इस समय सोने के सिक्के को स्वर्ण एवं निष्क कहा जाता था।
- तांबे के सिक्के को इस समय माष्क या काकनी कहा जाता था।

### मौर्यकालीन संगठन

- (i) **श्रेणी** : यह शिल्पकारों का संगठन था।
- (ii) **निगम** : यह व्यापारियों का संगठन था।
- (iii) **सार्थवाह** : यह कारवां (काफिला) का संगठन था।

### मौर्यकालीन सैन्य व्यवस्था

- मौर्य कालीन सैन्य व्यवस्था बहुत ही विशाल थी। यह नन्द वंशों की सेना से 3 गुनी अधिक थी। इस समय स्थायी तथा अस्थायी दो प्रकार के सैनिक रहते थे।
- युद्ध क्षेत्र में सेना का नेतृत्व करने वाला अधिकारी नायक होता था।
- **कौटिल्य ने सेना को तीन श्रेणीयों में बांटा था-**
  1. पुश्तैनी सेना,
  2. भाटक सेना,
  3. नगरपालिका सेना।
- जस्टिन ने कहा है, कि मौर्य की सेना डाकुओं का एक गिरोह था।

### प्रशासनिक व्यवस्था

- मौर्यकालीन प्रशासन एक केन्द्रीकृत शासन था। राजा को सलाह देने के लिए मंत्री परिषद् होते थे।
- उच्च अधिकारियों को तीर्थ या महामात्र अथवा अमात्य कहा जाता था। इनकी संख्या 18 थी। जासूसों के लिए चर शब्द का प्रयोग किया गया था।

| अर्थशास्त्र में उल्लेखित तीर्थ (शीर्षस्थ अधिकारी) |               |                                 |
|---------------------------------------------------|---------------|---------------------------------|
| 1.                                                | अमात्य        | प्रधानमंत्री                    |
| 2.                                                | पुरोहित       | धर्म एवं दान विभाग का प्रधान    |
| 3.                                                | सेनापति       | सैन्य विभाग का प्रधान           |
| 4.                                                | युवराज        | राजपुत्र                        |
| 5.                                                | दौवारिक       | राजदरबार/राजकीय द्वार-रक्षक     |
| 6.                                                | अन्तर्वेदिक   | अन्तःपुर का अध्यक्ष             |
| 7.                                                | समाहर्ता      | आय का संग्रहकर्ता               |
| 8.                                                | सन्निधाता     | राजकीय कोष का अध्यक्ष           |
| 9.                                                | प्रशास्ता     | कारगार का अध्यक्ष               |
| 10.                                               | प्रदेष्ट्रि   | कमिशनर                          |
| 11.                                               | पौर/नागरक     | नगर का कोतवाल                   |
| 12.                                               | व्यावहारिक    | प्रमुख न्यायाधीश                |
| 13.                                               | नायक          | नगर रक्षा का अध्यक्ष            |
| 14.                                               | कर्मान्तिक    | उद्योगों और कारखानों का अध्यक्ष |
| 15.                                               | मन्त्रिपरिषद् | अध्यक्ष                         |
| 16.                                               | दण्डपाल       | सैन्य सामग्री एकत्रित करनेवाला  |
| 17.                                               | दुर्गपाल      | राजकीय दुर्ग रक्षक              |
| 18.                                               | अंतपाल        | सीमावर्ती दुर्गों का रक्षक      |



- ☛ मुख्यमंत्री और पुरोहित की नियुक्ति के पहले इनके चरित्र को जांचा या परखा जाता था उसे ही उपधा परीक्षण कहा जाता था।
- ☛ अशोक के समय प्रशासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम थी। ग्रामों के मुखिया ग्रामिक कहलाते थे।
- ☛ प्रशासनिक अधिकारियों को अध्यक्ष कहा जाता था। इनकी संख्या 26 थी।
  - (i) सीताध्यक्ष : कृषि विभाग
  - (ii) अकाराध्यक्ष : खनन विभाग
  - (iii) लक्ष्मणाध्यक्ष : मुद्रा विभाग
  - (iv) राक्षिन : पुलिस विभाग
  - (v) धर्मस्थली : दिवानी न्यायालय (धन)
  - (vi) कंटक शोधन : फौजदारी न्यायालय (अपराध)
  - (vii) गुह पुरुष : गुप्तचर
  - (viii) संस्था : स्थाई गुप्तचर
  - (ix) संचार : चलायमान गुप्तचर
  - (x) आंटविक : जंगल का अधिकारी
  - (xi) समाहारता : Tax या कर
  - (xii) सन्निधाता : कोषाध्यक्ष
- ☛ मेगास्थनिज के अनुसार नगर का प्रशासन 30 सदस्यों का एक मंडल चलाता था। यह मंडल 6 समितियों में विभक्त होता था। प्रत्येक समिति में 5 सदस्य होते थे।

### न्याय व्यवस्था

- ☛ मौर्य काल में सम्राट ही सर्वोच्च न्यायालय, अंतिम न्यायालय तथा न्यायधीश था। राजा का फैसला ही अंतिम एवं सर्वमान्य होता था।
- ☛ ग्राम सभा सबसे छोटा न्यायालय था। जहाँ वृद्ध जन अपने निर्णय लेते थे।
- ☛ सर्वोच्च न्यायालय राजधानी में स्थित होता था।
- ☛ मुख्य न्यायाधीश को धर्माधिकारी कहा जाता था।
- ☛ अर्थशास्त्र के अनुसार राज्य में दो प्रकार के न्यायालय होते थे।
  1. **धर्मस्थीय (दीवानी)**— इसके द्वारा दिवानी तथा विवाह संबंधित विवादों का निपटारा किया जाता था।
  2. **कंटक शोधन (फौजदारी)**— इसके द्वारा फौजदारी तथा मारपीट जैसे समस्याओं का निपटारा होता था।
- ☛ अशोक के काल में जनपदीय न्यायालय के न्यायाधीशों को राजूक कहा जाता था।

### गुप्तचर व्यवस्था

- ☛ मौर्य काल में गुप्तचर विभाग के प्रधान को महामात्याप्रसर्प कहा जाता था।
- ☛ अर्थशास्त्र में गुप्तचरों को गुहपुरुष तथा इसके प्रमुख अधिकारी को सर्पमहामात्य कहा जाता था।

- **संचार**
- ☛ इसमें व्यक्ति जगह-जगह जागकर गुप्तचरी करता था।
- **संस्था**
- ☛ एक जगह संगठित होकर गुप्तचरी करना।
- ☛ गुप्तचर के अलावा शांति व्यवस्था बनाये रखने तथा अपराधों की रोकथाम के लिए पुलिस भी थी। जिसे अर्थशास्त्र में आरक्षण कहा गया है।

### मौर्यकालीन वास्तुकला

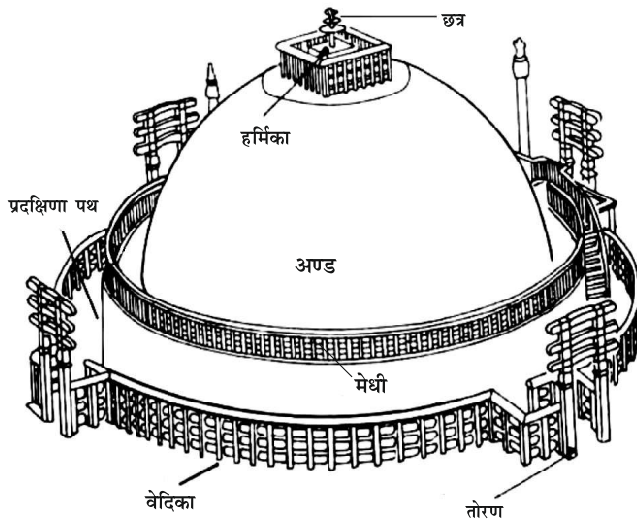
- ☛ मौर्यकाल में लकड़ी के भवन हुआ करते थे, जो वर्तमान में पटना के कुम्हार से मिले हैं। मौर्यकाल में पत्थर के कुशल कारीगर थे।
- ☛ अशोक ने मध्य प्रदेश में साँची का स्तूप बनवाया है। जो सबसे बड़ा स्तूप है।
- ☛ अशोक ने UP के सारनाथ में अशोक स्तंभ बनवाया। जिस पर 4 पत्थर के शेरों को एक ही जगह रखा। जो अहिंसा का सूचक हैं। यही भारत का राष्ट्रीय चिह्न भी है।
- ☛ मौर्यकाल में पत्थर की बनी सबसे महत्वपूर्ण कलाकृति पटना के दीदारगंज से मिला यक्ष एवं यक्षिणी की मूर्ति है।



- ☛ अशोक के अभिलेख विभिन्न क्षेत्रों से मिले हैं, किन्तु पाटलिपुत्र से एक भी अभिलेख नहीं मिला है।
- **स्तूप की संरचना**
- ☛ स्तूप एक अर्द्धवृत्ताकार संरचना है जिसे अण्ड कहा जाता है। अण्ड के ऊपर एक छज्जे जैसे संरचना होती है। जिसे हर्मिका कहते हैं। हर्मिका से एक मस्तूल निकलता था जिसे 'यष्टि' कहते हैं। यष्टि पर तीन छत्रियाँ लगी होती थी। उपरोक्त संरचना के चारों तरफ घुमने के लिए प्रदक्षिणापथ होता है। इस संपूर्ण संरचना के चारों ओर एक वेदिका होती थी जहाँ तोरणद्वार (प्रवेश द्वार) बनाया जाता था।



➤ स्तूप के विभिन्न अंगों का अर्थ—



1. **तोरण द्वार**— स्तूपों के चारों ओर प्रवेश द्वार बने होते थे जो चारों दिशाओं में बुद्ध के संदेशों के फैलने का प्रतीक है।
2. **वेदिका**— स्तूपों के चारों तरफ एक घेरा बनाया जाता था जिसे वेदिका/रैलिंग कहा जाता था। जो पत्थरों के विभिन्न स्तरों/पट्टिकाओं का बना होता था। यह पवित्र भूमि का प्रतीक है, जो पवित्र स्थल को सामान्य दुनिया से अलग करती है।
3. **‘अण्ड’**— ‘शांति’ का प्रतीक।
4. **‘हर्मिका’**— देवताओं के घर अथवा पवित्रता का प्रतीक है।
5. **‘छत्र’**— बुद्ध के विचारों/भिक्षाओं का प्रतीक है। जैसे— श्रद्धा, सम्मान एवं उदारता।

**सामाजिक जीवन**

- अशोक ने बौद्ध धर्म को अपना लिया किन्तु यह दूसरे धर्मों का भी आदर करता था। हिन्दु धर्म त्यागने के बाद भी अशोक ने अपने नाम में देवनाम प्रियदर्शी जोड़ा, जो संस्कृत भाषा का शब्द है।
- परिष्टि पर्वन जैन ग्रंथ में चन्द्रगुप्त मौर्य के जैन धर्म अपनाने का वर्णन मिलता है।
- अशोक ने 11वें शिलालेख में आदेश दिया है, कि ब्राह्मणों को कोई नहीं सताए।
- अशोक ने आजीवक संप्रदाय के भक्तों को गया में 4 गुफा प्रदान की।
- अशोक ने पशुबली पर पूर्णतः प्रतिबंध लगा दिया। यज्ञ तथा कर्मकांड पर रोक लगा दिया जिस कारण ब्राह्मणों की आय में बहुत कमी आ गई।
- मौर्य काल में दास प्रथा का प्रचलन था।
- इस समय स्त्रियों की स्थिति अच्छी थी। स्त्रियाँ पुर्नविवाह कर सकती थी। इस समय जो विधवा स्वतंत्र रूप से जीवन यापन करती थी उसे क्षन्द वासीनी कहा जाता था।

- स्वतंत्र रूप से वेश्यावृत्ति करने वाली महिला रूपाजीवा कहलाती थी। इनके कार्यों का देख-रेख गणिकाध्यक्ष करते थे।
- इस समय तलाक को मोक्ष कहा जाता था।
- इस वंश में प्रथम बार लोगों के जन्म एवं मृत्यु का पंजीयन किया गया था।
- इस काल में पाटलिपुत्र नगर को विश्व के नगरों की रानी कहा गया है।
- इस काल में सड़क निर्माण अधिकारी को एग्रोनोमाई कहा जाता था।

**प्रशासनिक ढाँचा**

- मौर्यकाल में सबसे बड़ा पद राजा का होता था, उसके नीचे युवराज होते थे।
  - प्रांत का शासन प्रांतपति के पास था।
  - विष (जिला), विषपति के नियंत्रण में रहता था।
  - 10 गांवों का छोटा मालिक या गोप होता था। जो प्रशासन की सबसे छोटी इकाई गाँव हुआ करती थी। जो ग्रामीण (मुखिया) के नियंत्रण में रहती थी।
  - इस समय न्यायाधीश को राजूक कहा जाता था।
- **मौर्यकाल में प्रांतों की संख्या 4 थी, लेकिन अशोक के समय 5 हो गई, जो निम्नलिखित हैं—**

| अशोककालीन मौर्य साम्राज्य के 5 प्रांत |                         |              |                                             |
|---------------------------------------|-------------------------|--------------|---------------------------------------------|
|                                       | प्रांत/चक्र             | राजधानी      | प्रमुख स्थल                                 |
| 1.                                    | कलिंग                   | तोसली (धौली) | कलिंग                                       |
| 2.                                    | अर्वति राष्ट्र          | उज्जयिनी     | मालवा, राजपूताना, गुजरात, काठियावाड़        |
| 3.                                    | प्रांशी (पूर्वी प्रांत) | पाटलिपुत्र   | बिहार-बंगाल के और उत्तर प्रदेश के क्षेत्र   |
| 4.                                    | उत्तरापथ                | तक्षशिला     | गांधार, कंबोज, पंजाब, कश्मीर और अफगानिस्तान |
| 5.                                    | दक्षिणपथ                | सुवर्णगिरि   | विन्ध्य के दक्षिण का क्षेत्र                |

- इसके समय प्रांतों को चक्र कहकर संबोधित किया जाता था।
- प्रांतों के प्रशासकों को कुमार या आर्यपुत्र अथवा राष्ट्रिक कहा जाता था।
- प्रांतों के विभाजन विषय में होता था। जो विषयपति के अधीन होता था।

**अशोक के उत्तराधिकारी**

- 232 ई.पू. (BC) पाटलीपुत्र में अशोक की मृत्यु हो गई।
- इसके बाद मगध की गद्दी पर अशोक का पुत्र कुणाल बैठा।
- अशोक के पौत्र दशरथ ने आठ वर्षों तक शासन किया। अशोक की भांति उन्होंने देवनामप्रिय की उपाधि धारण किया तथा आजीवक संप्रदाय के साधुओं के लिए गया जिले में नागार्जुन पहाड़ी पर 3 गुफाओं का निर्माण कराया।

- ☛ अशोक का कोई भी उत्तराधिकारी योग्य नहीं था। मौर्य वंश का अंतिम शासक वृहदथ था। जो एक कमजोर तथा अयोग्य शासक था।
- ☛ इसके शासन काल में कलिंग नरेश खारवेल ने कलिंग को मगध से स्वतंत्र कर लिया।
- ☛ वृहदथ का सेनापति पुष्यमित्र शुंग था जिसने सेना के निरीक्षण के दौरान वृहदथ की हत्या कर दी और मौर्य वंश के स्थान पर शुंग वंश की स्थापना कर दी।

### मौर्य वंश के पतन के कारण

- ☛ अशोक का युद्ध नीति त्याग देना।
- ☛ अशोक का बौद्ध धर्म के प्रति अत्यधिक झुकाव होना।
- ☛ अशोक ने बौद्ध भिक्षुओं को इतना दान दिया कि आर्थिक संकट उत्पन्न हो गया।
- ☛ पतन का सबसे बड़ा कारण अशोक के उत्तराधिकारी का अयोग्य होना था। साथ ही विभिन्न अधिकारी भ्रष्टाचार में लिप्त हो गए।

**Note :** मौर्यकाल में वर्ष की शुरुआत आषाढ़ (जुलाई) महीने से होती थी।



### शुंग वंश (185-73 BC)

- ☛ मगध पर शासन करने वाला यह पहला गैर क्षेत्रीय राजवंश था।
- ☛ इस वंश के संस्थापक पुष्यमित्र शुंग थे।
- ☛ इन्होंने अपनी राजधानी पाटलीपुत्र बनाई जबकि द्वितीय राजधानी विदिशा को बनाया। विदिशा का पुराना नाम बेसनगर (MP) था।
- ☛ पुष्यमित्र शुंग एक कट्टर ब्राह्मण था। यह 36 वर्षों तक शासन किया। जबकि इस वंश का शासन 112 वर्षों तक चला।
- ☛ भारत में पुनः वैदिक धर्म की स्थापना करने का श्रेय पुष्यमित्र शुंग को जाता है।
- ☛ पुष्यमित्र शुंग को बौद्ध धर्म का विरोधी शासक माना जाता है। इसका प्रमाण दिव्यावदान से प्राप्त होता है। हालांकि इनके काल में कई बौद्ध विहार का भी निर्माण हुआ।
- ☛ इसने बहुत सारे बौद्ध स्तूपों तथा मठों को ध्वस्त करा दिया।
- ☛ पुष्यमित्र शुंग ने मध्यप्रदेश के साँची स्तूप की खिड़कियों को तांबे का कराया जबकि भरहुत (MP) स्तूप की खिड़कियों को पत्थर का करवाया।
- ☛ पुष्यमित्र शुंग के काल में अशोक द्वारा निर्मित साँची एवं भरहुत स्तूप का आकार दुगुना करवाया गया था। वर्तमान में साँची के स्तूप का जो स्वरूप है वह पुष्यमित्र शुंग के काल का ही देन है।
- ☛ बौद्ध चैत्य भवन का निर्माण इसी वंश के समय हुआ था।
- ☛ इसके समय बौद्ध पुस्तक जातक ग्रंथ की रचना हुई।
- ☛ पाणिनी ने अष्टाध्यायी (व्याकरण ग्रंथ) लिखा।
- ☛ मनु ने मनुस्मृति लिखा। गर्गी ने गर्गीसंहिता लिखा।
- ☛ जिनसेन ने हरीवंश की रचना किया।
- ☛ इन दोनों ही आक्रमण के समय पुष्यमित्र शुंग विजय हुए और इस अवसर पर पुष्यमित्र शुंग ने पतंजलि के नेतृत्व में दो अश्वमेध यज्ञ करवाया एवं अपने राजधानी पाटलीपुत्र स्थानांतरित करके विदिशा को बनाया।
- ☛ पहले आक्रमण का नेतृत्व डेमेट्रियस ने किया।
- ☛ दूसरे आक्रमण का नेतृत्व मिणाण्डर (मिलिंद) ने किया।
- ☛ मिलिंद (मिणाण्डर) को बौद्ध भिक्षुक नागसेन ने बौद्ध धर्म की शिक्षा दी जिससे उसने बौद्ध धर्म अपना लिया।
- ☛ कलिंग नरेश खारवेल ने पुष्यमित्र शुंग को पराजित कर दिया था।
- ☛ इस वंश में कुल 10 शासक थे। पहला शासक पुष्यमित्र शुंग, नौवां शासक भागभद्र एवं दशवां शासक देवभूति थे।
- ☛ इस वंश के शासक भाग्यभद्र के दरबार में यवन (विदेशी) राजदूत हेलियोडोटस आया था। जो भागवद् धर्म अपना लिया।
- ☛ इसने भगवान विष्णु के सम्मान में विदिशा या बेसनगर (मध्यप्रदेश) में गरुडध्वज अभिलेख का निर्माण कराया था। उसने उसपर भगवान विष्णु के लिए देवदेवश्य शब्द का प्रयोग किया।
- ☛ शुंग राजवंश का शिलालेख जालंधर (पंजाब) से मिलता है।
- ☛ इस काल में संस्कृत भाषा का सर्वाधिक विकास हुआ।
- ☛ शुंग वंश के काल की अर्थव्यवस्था जातक ग्रंथ एवं मिलिन्दपन्हो नामक पुस्तक से मिलता है।
- ☛ इस वंश के 10वें एवं अंतिम शासक देवभूति थे जिनकी हत्या उन्हीं के मंत्री वासुदेव ने कर दी और इसके स्थान पर कण्व वंश की स्थापना कर दी।

### कण्व वंश (73-30 BC)

- इनके काल में कुल मिलाकर दो युद्ध किए गए थे—
  1. विदर्भ का युद्ध
  2. यवन आक्रमणकारी का युद्ध
- ☛ विदर्भ (बरार) में चल रहे उत्तराधिकारी के युद्ध का लाभ उठाकर पुष्यमित्र शुंग ने अग्निमित्र के नेतृत्व में सेना भेजा। जिसमें अग्निमित्र विजयी हुए थे। इसकी जानकारी कालीदास की रचना मालविकाग्निमित्र से मिलती है।
- Note :—** कालीदास की पुस्तक मालविकाग्निमित्र में अग्निमित्र एवं मालविका का प्रेम-प्रसंग की चर्चा है।
- ☛ इसके समय दो यवन विदेशी आक्रमण हुए। दोनों ही यवन आक्रमण को पुष्यमित्र शुंग ने अपने बेटे अग्निमित्र द्वारा विफल कर दिया।
- ☛ इस वंश के संस्थापक वासुदेव थे। इन्होंने अपनी राजधानी विदिशा को बनाया।
- इस वंश में कुल 4 शासक हुए—
  - (1) वासुदेव, (2) भूमिपुत्र, (3) तरायण एवं (4) सुशर्मा।
- ☛ इस वंश का दूसरा नाम कणवायांग था।
- ☛ यह वंश 43 वर्षों तक शासन किया।
- ☛ कण्व राजा को पुराण में शुंग मित्र के नाम से पुकारा जाता था।
- ☛ कण्व साम्राज्य पर पहला आक्रमण शक का हुआ। ये ब्राह्मण जाति के थे।
- ☛ इस वंश में सर्वाधिक समय तक शासन करने वाला शासक भूमिपुत्र था जो 14 वर्ष तक शासन किया।

- इस वंश का अयोग्य एवं दुर्बल अंतिम शासक सुशर्मा थे। जिसकी हत्या उसके मंत्री शिमुक (आंध्र राजा) ने 30 ई.पू. में कर दी और इसके स्थान पर सातवाहन वंश की स्थापना कर दी।

### **सातवाहन वंश ( प्रतिष्ठान ) [30 BC-250 AD]**

- इस वंश के संस्थापक **सिमुक** थे। जिसकी राजधानी **तगर** थी।
- प्रारम्भ में यह वंश महाराष्ट्र के क्षेत्र में था, किन्तु शक राजाओं ने इन्हें महाराष्ट्र छोड़ने पर विवश कर दिया।
- सातवाहन वंश को आंध्रप्रदेश में स्थानान्तरित होना पड़ा। जिस कारण पुराण में इन्हें आंध्र सातवाहन भी कहते हैं।
- सातवाहन की राजधानी प्रतिष्ठान (महाराष्ट्र) थी जो गोदावरी नदी के तट पर स्थित था।
- सातवाहनों की राजकीय भाषा प्राकृत तथा लिपि ब्राह्मी थी।
- सातवाहन वंश किसी न किसी रूप में 3 शताब्दियों तक बने रहें। जो प्राचीन भारत में किसी एक वंश का सर्वाधिक कार्यकाल है।
- शातकर्णी-I सातवाहन वंश का पहला शासक था। जिसकी जानकारी नानाघाट अभिलेख (पूणे) से मिलती है। जो उसकी पत्नी नैनिका द्वारा बनवाया गया था।
- शातकर्णी प्रथम ने दक्षिणापथपति तथा अप्रतिहत् चक्र की उपाधि धारण किया।
- शातकर्णी प्रथम शासक का नाम सांची स्तूप के प्रवेश द्वार पर अंकित है।
- शातकर्णी प्रथम द्वारा दो अश्वमेध यज्ञ और एक-राजसूय यज्ञ करवाया गया था।
- सातवाहन वंश का सबसे योग्य शासक **हाल** था।
- हाल ने प्राकृत भाषा में गाथासप्तशती की रचना किया था।
- इस वंश का सबसे प्रतापी शासक गौतमी पुत्र शातकर्णी था। इसके समय नासिक के शक शासक नहपान ने आक्रमण कर दिया, किन्तु गौतमीपुत्र शातकर्णी ने उसे पराजित कर दिया।
- इसकी जानकारी महाराष्ट्र के नासिक जोगलथंबी से मिले सिक्कों से मिलती है। जिसके एक ओर गौतमी पुत्र शातकर्णी एवं दूसरी ओर नहपान का नाम और चित्र अंकित है।
- जिससे पता चलता है कि गौतमीपुत्र शातकर्णी ने शक शासक नहपान को हराया था।
- गौतमीपुत्र शातकर्णी ने बौद्ध संघ को अजकालकीय तथा काले के भिक्षु संघ को कर्जक नामक ग्राम दान में दिया।
- गौतमीपुत्र शातकर्णी ने सातवाहन वंश की खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः लौटाया।
- इस वंश का अगला शासक वशिष्ठ पुत्र पुल्लुमावी था।
- इसके समय पुनः उज्जैन के शक ने आक्रमण किया। इस बार शक वंश की ओर से आक्रमण का नेतृत्व रूद्रदामन कर रहा था।
- रूद्रदामन ने वशिष्ठ पुत्र पुल्लुमावी को पराजित कर दिया, किन्तु दोनों के बीच वैवाहिक संबंध स्थापित हो गए।
- इन्होंने आंध्रप्रदेश पर विजय प्राप्त कर प्रथम आंध्र सम्राट की उपाधि धारण किया।
- पुल्लुमावी ने अमरावती स्थित बौद्ध स्तूप का किलाबंदी करवाया।
- इस वंश का अंतिम शासक यज्ञश्री शातकर्णी था। इनके सिक्के पर जहाज का चित्र अंकित था।
- सातवाहन वंश ने उत्तर और दक्षिण भारत के बीच सेतु का काम किया।
- ब्राह्मणों को सबसे पहले भू-दान सातवाहनों ने देना प्रारंभ किया, किन्तु सर्वाधिक भूदान गुप्त शासकों ने दिया।
- वेतन के बदले भूमि देने की सामंति व्यवस्था सातवाहन ने प्रारंभ किया, किन्तु सर्वाधिक प्रयोग गुप्त राजाओं ने किया।
- इस वंश के समय गांव के प्रधान को गौलिमक कहा जाता था।
- इस वंश में दक्कन के क्षेत्र में कपास फसल उगाया जाता था।
- सातवाहन समाज मातृसत्तात्मक था।
- यहाँ नाम के पहले माता का नाम लिखा जाता था, किन्तु राजा पुरुष ही होता था।
- इस समय सीसा (Pb) के सिक्का का प्रयोग होता था।
- चाँदी के सिक्के को काषापण तथा सोने के सिक्के को सुवर्ण कहते थे।
- सातवाहन साम्राज्य के भूमि गोदावरी नदी घाटी में थी, जिस कारण यह अत्यधिक उपजाऊ थी।
- ऐसा कहा जाता है कि सातवाहन काल की भूमि उस समय के सबसे उपजाऊ भूमि थी।





# 10.

## मौर्योत्तर काल (Post Mauryan Period)

- मौर्यकाल के पतन के बाद मगध छोटे-छोटे टुकड़ों में बंट गया, और कोई भी योग्य शासक नहीं रहा। जिसके कारण विदेशी आक्रमणकारियों को भारत एक अवसर की तरह दिखने लगा।
- मौर्योत्तर काल के बाद भारत पर 4 विदेशी आक्रमण हुए। जो निम्नलिखित हैं—

I – Indo Greek (हिन्द यवन)

S – शक (सीथियन)

P – पहलव (पार्थियन)

K – कुषाण

### Indo Greek ( हिन्द यूनानी )

- इनका क्षेत्र हिन्दकुश पर्वत के समीप का बैक्ट्रिया प्रांत था। अतः इन्हें बैक्टेरियन शासक भी कहते हैं।
- हिन्द यूनानी भारत में दो चरण में आए थे—
- **प्रथम चरण**
- डेमोट्रियस ने लगभग 183 ई.पू. में पश्चिमोत्तर भारत पर आक्रमण करते हुए, पंजाब एवं सिन्धु प्रांतों को जीत लिया और अपने जीते गये क्षेत्र की राजधानी शाकल (स्याल कोट) को बनाया और 'डेमोट्रियस वंश' की स्थापना किया।
- डेमोट्रियस ने शुंग राजा, पुष्यमित्र शुंग पर आक्रमण किया किन्तु पराजित हो गया।
- अगला शासक मिनाण्डर बना। इसने भी शुंग राजा पुष्यमित्र शुंग पर आक्रमण किया किन्तु पराजित हो गया।
- इसे (मिनाण्डर) बौद्ध-भिक्षुक नागसेन ने बौद्ध धर्म की शिक्षा दी। यह बौद्ध धर्म अपनाने वाला पहला विदेशी था।
- नागसेन एवं मिनाण्डर (मिलिन्द) के वार्तालाप की चर्चा नागसेन की पुस्तक मिलिन्द पन्हों में है।
- इनमें मिनाण्डर प्रश्न पूछते हैं और नागसेन उसके उत्तर देते हैं।
- सर्वप्रथम मिनाण्डर ने सोने के सिक्के जारी किये थे।
- मिनाण्डर का सर्वाधिक सिक्का गुजरात के भड़ौच नामक स्थान से मिला है। जो एक बन्दरगाह स्थल था।
- मिनाण्डर के काल में मूर्ति निर्माण के क्षेत्र में सर्वाधिक विकास हुआ।
- हिन्दयवन के अंतिम शासक हेलियोक्लीथ थे।
- **“द्वितीय चरण”**
- इसमें युक्रेटाइडिस ने तक्षशिला में युक्रेटाइडिस वंश की स्थापना की।

- इस वंश के शासक आन्तीआल ने अपना राजदूत हेलियोडोटस को शुंग राजा भागवत के दरबार में मित्रवत् संबंध स्थापित करने के लिए भेजा।
- हेलियोडोटस भागवत धर्म (विष्णु भगवान) से प्रभावित होकर इस धर्म को अपना लिया और इस धर्म के सम्मान में विदिशा (बेसनगर) में गरूडध्वज अभिलेख बनवाया।
- यह किसी राजदूत का एक मात्र व्यक्तिगत अभिलेख है।
- यूक्रेटाइडिस वंश के अंतिम शासक हर्मियस थे।

### हिन्दू यूनानी की विशेषता

- ये यवन से आकर भारत में बस गए अतः इन्हें हिन्द यूनानी कहते हैं।
- इन्हें काली मिर्च बहुत ही पसंद थी। अतः काली मिर्च को यवन प्रिय कहा गया।
- भारत में पहली बार चित्रयुक्त एवं लेखयुक्त सोने के सिक्के यूनानियों ने चलाया। जिसे ड्रम कहा जाता था। यह खरोष्ठी भाषा में लिखा गया है।
- यूनानियों ने भारत में खगोल, ज्योतिष, गणित तथा समय का गणना प्रारम्भ किया।
- भारतीय नाटक का विकास यूनानियों के द्वारा हुआ है। भारतीय नाटक में पर्दा के लिए यूनानियों के द्वारा यवनिका शब्द का प्रयोग किया गया।
- इन्डोग्रिक शासन में मूर्ति निर्माण के क्षेत्र में एक नयी शैली गंधार शैली का विकास हुआ और इसी शैली में निर्मित प्रथम मूर्ति महात्मा बुद्ध की बनाई गयी।

### ‘शक वंश’/सिथियन वंश (90BC)

- मौर्योत्तर काल में भारत पर आक्रमण करने वाला दूसरा आक्रमणकारी शक या सिथियन थे।
- ये बेलन-दर्पा पार करके भारत आये थे।
- शक मध्य एशिया के रहने वाले थे।
- इन्हें युची वंश (काबिला) वालों ने मध्य एशिया से भगा दिया था।
- शक राजाओं को क्षत्रप कहा जाता था।
- शकों के शासन व्यवस्था क्षत्रप शासक व्यवस्था थी।
- शकों ने भारत में उत्तर एवं पश्चिम दिशा में अपने साम्राज्य का विस्तार किया।

➤ **ये भारत में आकर 5 जगहों में बसे थे—**

- (i) कंधार (अफगानिस्तान)
- (ii) तक्षशीला (पाकिस्तान)
- (iii) मथुरा (UP)
- (iv) उज्जैन (MP)
- (v) नासिक (महाराष्ट्र)

- ☞ तक्षशीला में शक वंश की स्थापना मेउस के द्वारा किया गया था।
- ☞ मथुरा में शक वंश की स्थापना राजुल के द्वारा किया गया था।
- ☞ उज्जैन में शक वंश की स्थापना चेस्टक या यशोमति के द्वारा किया गया था।
- ☞ नासिक में शक वंश की स्थापना भूमक के द्वारा किया गया था।
- ☞ मथुरा के शक शासक राजुल को मालवा के शासक ने 57BC में पराजित कर दिया और विक्रमादित्य की उपाधि धारण कर लिया। इस उपलक्ष्य में उसने 57 ई.पू. विक्रम संवत् नामक Calendar चलाया।
- ☞ भारतीय संविधान का यह मूल Calendar था, किन्तु 1957 में शक् संवत् को अपना लिया गया।
- ☞ नासिक का शक् शासक नहपान ने सातवाहन शासक गौतमी पुत्र शातकर्णी पर आक्रमण किया, किन्तु पराजित हो गया।
- ☞ इसकी जानकारी नासिक के जोगल थंबी से मिले सिक्कों से मिलती है।
- ☞ इन सिक्कों पर एक तरफ नहपान की आकृति तथा दूसरी तरफ गौतमी पुत्र शातकर्णी की थी।
- ☞ सबसे प्रतापी शक् शासक उज्जैन का रूद्रदामन था।
- ☞ रूद्रदामन ने सातवाहन शासक वशिष्टि पुत्र पुल्लुमावी को पराजित कर दिया।
- ☞ रूद्रदामन का गुजरात के सौराष्ट्र प्रांत में गिरनार पहाड़ी पर जूनागढ़ अभिलेख मिला है।
- ☞ यह संस्कृत भाषा में लिखा भारत का पहला अभिलेख है। इस अभिलेख से यह जानकारी मिलती है कि चंद्रगुप्त मौर्य ने सरकारी खर्च पर गुजरात के सौराष्ट्र में सुदर्शन झील बनवाया था।
- ☞ यह अभिलेख चन्द्रगुप्त मौर्य के पश्चिम में विस्तार की जानकारी देता है।
- ☞ रूद्रदामन ने सुदर्शन झील का पुनर्निर्माण (जिर्णोधार) अपने अधिकारी शुवीशाख द्वारा करवाया।
- ☞ गुप्त शासक सकंदगुप्त ने भी इस झील का पुनर्निर्माण करवाया।
- ☞ अंतिम शक् शासक रूद्रसिंह-III थे।
- ☞ गुप्त शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय ने शकों का सर्वनाश कर दिया और इस उपलक्ष्य में विक्रमादित्य की उपाधि धारण किया। और चांदी के सिक्के चलाए। इस सिक्के को रूपक कहा जाता था।
- ☞ शक् शासकों ने 78 ई. में प्रारम्भ किए गए कनिष्क के Calendar का इतना अधिक प्रयोग किया कि इसे शक् संवत् कहते हैं।

**ग्रेगोरियन कैलेंडर**

- ☞ यह सूर्य पर आधारित है।
- ☞ यह ईसा के जन्म से प्रारम्भ होता है।
- ☞ इसका प्रयोग सर्वाधिक होता है।
- **विक्रम संवत्—** इसे मालवा शासक विक्रमादित्य-IV ने 57 ई. पू. प्रारम्भ किया था।
- ☞ यह ग्रेगोरियन Calendar से 57 वर्ष आगे है अर्थात् विक्रम संवत् में तिथी ज्ञात करने के लिए ग्रेगोरियन Calendar में 57 जोड़ दिया जाता है।
- ☞ इसी कारण संविधान लागू की तिथी 1949 को विक्रम संवत् में  $(1949 + 57) = 2006$  कहता है।
- **शक् संवत्**
- ☞ इसे कनिष्क ने 78 ई. में अपने राज्याभिषेक के समय प्रारम्भ किया था।
- ☞ यह ग्रेगोरियन Calendar से 78 ई. बाद आया। अतः यह ग्रेगोरियन Calendar से 78 वर्ष पिछे है।
- ☞ 22 मार्च, 1957 ई. से राष्ट्रीय पंचांग के रूप में शक् संवत् को अपनाया गया था।
- ☞ शक् संवत् में तिथी ज्ञात करने के लिए ग्रेगोरियन Calendar में 78 वर्ष घटा दिया जाता है।
- ☞ शक् संवत् एवं विक्रम संवत् के बीच 135 वर्ष के अंतर है।
- ☞ विक्रम संवत्, शक् संवत्, हिजरी Calendar (मुस्लिम Calendar) चन्द्रमा पर आधारित है। अतः इनका त्योहार भी हर एक वर्ष 11 दिन पिछे हो जाता है। किन्तु 3 साल बाद शक् संवत् में एक अतिरिक्त महीना जोड़ दिया जाता है।

**पहलव/पार्थीयन वंश**

- ☞ मौर्योत्तर काल के बाद भारत पर आक्रमण करने वाला तीसरा वंश पार्थीयन या पहलव थे।
- ☞ ये ईरान/फारस/पर्सिया के थे, जिस कारण इन्हें पार्थीयन कहा जाता है।
- ☞ इन्होंने अपनी राजधानी पुरुषपुर (पेशावर) को बनाया।
- ☞ इस वंश के संस्थापक मिथ्रेडेटस थे।
- ☞ इस वंश के सबसे योग्य शासक गोन्दोर्फर्निस थे जिनका उल्लेख पाकिस्तान के “तख्त-ए-बही” अभिलेख में मिला है। यह खरोष्टि लिपी में है। इनके समय में पूर्तगाल का इसाई धर्म प्रचारक ‘सेन्ट थामस’ भारत आया था। यह भारत आने वाला पहला ईसाई धर्म प्रचारक था।

**कुषाण वंश**

- ☞ मौर्योत्तर काल में भारत में आक्रमण करने वाला अंतिम शासक कुषाण वंश थे।

- ☛ ये मध्य एशिया (चीन तुर्कीस्तान) के निवासी थे।
- ☛ मध्य एशिया में यूचि कविला 5 भागों में बंटा था। इसी 5 में से 1 भाग कुषाण था।
- ☛ कुषाण वंश का क्षेत्र मध्य एशिया के आनुदरिया नदी से लेकर गंगा के क्षेत्र तक था।
- ☛ कुषाण वंश के संस्थापक 'कुजुलकडफिसस' थे।
- ☛ इन्होंने तांबे का सिक्का चलाया था।
- ☛ ये शैव धर्म को मानते थे। जिसका प्रमाण उनके सिक्के से मिले हैं। इन सिक्को पर एक तरफ कुजुलकडफिसस तथा दूसरी तरफ नंदी बैल की आकृति थी।
- ☛ अगला शासक विम-कडफिसस बना, जो इस वंश का वास्तविक संस्थापक था। यह शैव धर्म को मानता था।
- ☛ इन्होंने महेश्वर की उपाधी धारण किया।
- ☛ इनके सिक्के पर एक तरफ खरोष्टी लीपि में इनका नाम लिखा हुआ था तथा दूसरी तरफ शिव पार्वती एवं त्रिशुल की आकृति बनी हुई थी।
- ☛ कुषाण वंश का सबसे प्रतापी शासक "कनिष्क" था। इसने 78 ई. में अपना राज्याभिषेक करवाया। और इस अवसर पर शक संवत् प्रारम्भ किया।
- ☛ इसने अपनी राजनीतिक राजधानी पेशावर को बनाया जबकि सांस्कृतिक राजधानी तक्षशिला को बनाया बाद में सांस्कृतिक राजधानी मथुरा (मंधूसा) को बनाया।
- ☛ कनिष्क ने पाटलीपुत्र पर आक्रमण किया और महात्मा बुद्ध का "भिक्षा-पात्र" तथा यहाँ के दार्शनिक अश्व-घोष को अपने साथ लेता गया। इसी अश्वघोष को कनिष्क ने अपने राज कवि का दर्जा दिया।
- ☛ कनिष्क बौद्ध विद्वान पार्श्व के कहने पर कश्मीर के कुंडल वन में चतुर्थ बौद्ध सम्मेलन का आयोजन प्रथम सदी में करवाया था। इस बौद्ध सम्मेलन में अध्यक्ष के साथ साथ उपाध्यक्ष की भी व्यवस्था की गई। अध्यक्ष पद पर वसुमित्र तथा उपाध्यक्ष पद पर अश्वघोष को बैठाया गया।
- इस सम्मेलन में बौद्ध धर्म दो शाखा में बंट गया है-
  1. हीनयान एवं
  2. महायान।
- ☛ कनिष्क महायान शाखा को मानता था।
- ☛ महायान बौद्ध धर्म की एक सरल शाखा थी जिसमें भिक्षुक सोने के आभूषण धारण कर सकते थे तथा माँस खा सकते थे।
- ☛ कनिष्क के प्रयास से ही बौद्ध धर्म की महायान शाखा का प्रचार मध्य एशिया और चीन में हुआ।
- ☛ कनिष्क के दरबार में पार्श्व, वसुमित्र, अश्वघोष नागार्जुन तथा चरक नामक विद्वान रहते थे।
- ☛ अश्वघोष ने बुद्ध-चरित्र लिखा।
- ☛ चरक ने चरक-संहिता लिखा। ये वैद्य (डॉक्टर) थे।
- ☛ नागार्जुन ने माध्यमिक सूत्र में सापेक्षता के सिद्धांत की चर्चा की है। अतः इन्हें भारत का आइंस्टीन कहते हैं।
- ☛ नागार्जुन बौद्ध धर्म के 'शून्यवाद' को जानते थे।
- ☛ वसुमित्र नामक विद्वान ने महाविभाष सूत्र के रचना किया। जिसे बौद्ध धर्म का विश्वकोष कहा जाता है।
- ☛ सर्वाधिक शुद्ध सोने के सिक्के कनिष्क के शासन काल में जारी किए गए। इन्हें सोना की प्राप्ति पाकिस्तान में हिन्दूकुश पर्वत के बीच अलताई पहाड़ियों से होता था।
- ☛ कनिष्क के समय तांबे के सिक्के को काकिणी कहा जाता था।
- ☛ मथुरा से कनिष्क के सिक्को का एक ढेर मिला है। जिसमें कनिष्क को एक सैनिक वेश-भूषा में दिखाया गया है।
- ☛ कनिष्क के समय स्थल तथा समुद्र दोनों मार्ग से व्यापार होते थे।
- ☛ कनिष्क के समय उत्तर भारत में बंगाल का ताम्रलीप बंदरगाह तथा दक्षिण भारत में महाराष्ट्र का सोपारा एवं कल्याण बंदरगाह प्रमुख थे।
- ☛ अज्ञात की रचना "पेरिप्लस of the एरिथ्रीयन सी" (POAS) से यह जानकारी मिलती है कि कनिष्क का सर्वाधिक व्यापार रोम से होता था।
- ☛ कनिष्क के समय ही पहली बार नासपाती की खेती प्रारम्भ हुई। इसी के समय अरब नाविक हिप्पालस ने मानसून की खोज की। मानसून अरबी भाषा का शब्द मौसम से उत्पन्न हुआ जिसका अर्थ होता है मौसम के अनुरूप पवन की दिशा।
- ☛ कनिष्क के शासन काल में मूर्ति निर्माण कला में काफी विकास हुआ।
- ☛ कनिष्क ने अपनी राजधानी पुरुषपुर के समीप एक विशाल संधारामबिहार का निर्माण करवाया था।
- ☛ कनिष्क को द्वितीय अशोक कहा जाता है।
- ☛ 105 ई. (लगभग) में कनिष्क की मृत्यु हो गई।
- ☛ इसके उत्तराधिकारी योग्य नहीं थे, जिस कारण इसके छोटे-छोटे सामंत अलग होने लगे।
- ☛ इस वंश के अंतिम शासक के रूप में वासुदेव की चर्चा मिलती है।
- ☛ इसी वंश के सामंतों ने आगे चलकर गुप्त वंश की स्थापना कर दी।

### रेशम मार्ग (Silk Rout)

- ☛ यह चीन के रेशम व्यापार को यूरोप, फारस तथा मध्य एशिया से जोड़ता था।
- ☛ इस मार्ग का दक्षिणी भाग हिन्द महासागर से गुजरता था। जबकि उत्तरी भाग कश्मीर तथा हिन्दुकुश पर्वत को पार करके गुजरता था।
- ☛ कनिष्क ने रेशम मार्ग पर अधिकार कर लिया था। यह मार्ग चीन के क्षेत्राधिकार में आता था।
- ☛ कौशेय शब्द का प्रयोग रेशम के लिए किया गया है।
- ☛ रेशम मार्ग आम तौर पर वह स्थलीय मार्ग कहलाता है जिसे चीन के हान राजवंश के महान यात्री यांगछियान ने खोला था। जो हान वंश की राजधानी छगआन से पश्चिम में रोम तक जाता था।
- ☛ रेशम मार्ग के होने वाले व्यापार पर कनिष्क कर (Tax) लेता था। जो उसके अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा स्रोत था।



# 11.

## गुप्त काल (Gupta Period)

- ✎ इस वंश को भारतीय इतिहास का स्वर्णकाल कहा जाता है।
- ✎ गुप्त शासक वैश्य थे (विष्णु उपासक)।
- ✎ ऐसा माना जाता है कि ये कुषाण शासकों के सामंत थे।
- ✎ इस वंश के संस्थापक श्रीगुप्त थे।
- ✎ इन्होंने बिहार के स्थान पर उत्तरप्रदेश को अधिक वरीयता दिया।
- ✎ इन्होंने अपनी राजधानी उत्तरप्रदेश के कौशाम्बी को बनाया।
- ✎ इस वंश का अगला शासक घटोत्कच था।
- ✎ इन दोनों शासकों ने सामंत के रूप में ही शासन किया। अतः इन्हें वास्तविक संस्थापक नहीं माना जाता है।
- ✎ इस वंश का वास्तविक संस्थापक चंद्रगुप्त-I थे। इन्होंने लिच्छवी राजकुमारी कुमार देवी से विवाह किया और इस उपलक्ष्य में उसने “राजा-रानी” प्रकार का सिक्का चलाया।
- ✎ इस वंश में गरुड़ मुद्राएँ सर्वाधिक लोकप्रिय थीं।
- ✎ इस वंश में सोने के मुद्रा को दीनार तथा चांदी के रुपए को रूपयक कहा जाता था।
- ✎ महाराजाधिराज की उपाधि धारण करने वाला प्रथम शासक चंद्रगुप्त-I था।
- ✎ गुप्त संवत् का प्रारंभ 319-20 ई. में चंद्रगुप्त-I ने चलाया था।
- ✎ इस समय शिक्षा का प्रमुख केन्द्र उज्जैन था।
- ✎ इसी वंश के समय महिला को समाज में स्थान देना शुरू कर दिया गया।
- ✎ इस वंश का दरबारी भाषा संस्कृत थी।
- ✎ इसी वंश में बाल-विवाह की प्रथा प्रारंभ हुआ।
- ✎ प्रभावती गुप्त के पुनः स्थित ताम्र पत्र अभिलेख में श्रीगुप्त का वर्णन मिलता है।
- ✎ पारा का आविष्कार भी इसी वंश के समय हुआ।
- ✎ इस काल में गुजरात, बंगाल एवं तमिलनाडु वस्त्र उत्पादन के लिए प्रसिद्ध था।
- ✎ इसी काल में शतरंज का खेल प्रारंभ हुआ। जिसे चतुरंग कहा जाता था।
- ✎ हुणों का आक्रमण गुप्तवंश के शासक स्कंदगुप्त के समय हुआ था।
- ✎ सती प्रथा का वर्णन 510 ई. में एरण अभिलेख से मिलता है। उस समय शासक भानुगुप्त था।
- ✎ इस वंश के कुमारगुप्त शासक ने अश्वमेध यज्ञ करवाया था।
- ✎ यह कुमार देवी का पुत्र था। अतः यह खुद को लिच्छवी दौहित्र (लिच्छवी का नाती) कहता था।
- ✎ इसके बचपन का नाम कांच था।
- ✎ समुद्रगुप्त की नीतियाँ आक्रामक तथा विस्तारवादी थी। अतः यह अशोक के विपरीत था।
- ✎ इसने आर्यावर्त (उत्तर-भारत) के राज्यों को जीतकर अपने साम्राज्य में मिला लिया।
- ✎ जबकि दक्षिणार्ध (दक्षिण भारत) के 12 राज्यों को पराजित कर दिया और उनसे कर वसूलता रहा।
- ✎ इन्हीं विजय अभियान के कारण समुद्रगुप्त की तुलना “नेपोलियन” से की जाती है। इसलिए बी.ए. स्मिथ द्वारा समुद्रगुप्त को भारत का नेपोलियन कहा गया। जो Early History of India की पुस्तक में लिखा हुआ है।
- ✎ समुद्रगुप्त के विजय अभियान की जानकारी “प्रयाग प्रशस्ती” अभिलेख (इलाहाबाद) से मिलती है।
- ✎ प्रयाग स्तंभ लेख में जहांगीर शासक का वर्णन मिलता है।
- ✎ यह अभिलेख समुद्रगुप्त के दरबारी कवि तथा महासंघ विप्राहक (युद्ध एवं शांति का दूत) हरिसेन का है।
- ✎ पुराण में कहा गया है कि समुद्रगुप्त का घोड़ा 3 समुद्र का पानी पीता था, अर्थात् समस्त दक्षिण भारत समुद्रगुप्त के सामने नत-मस्तक था।
- ✎ इन्होंने अश्वमेध यज्ञ करवाया और अश्वमेध कर्ता का उपाधि धारण किया।
- ✎ इन्होंने विक्रमांक का उपाधि धारण किया था और इसे कविराज भी कहा जाता था।
- ✎ इसके समय बौद्ध भिक्षु वसुबंधु को संरक्षण दिया गया था।
- ✎ इसने आर्यावर्त में दिग्विजय तथा दक्षिण भारत में धर्म विजय का कार्य किया।
- ✎ श्रीलंका के शासक मेघवर्मन ने बौद्ध गया में मंदिर बनवाने के लिए अपना एक दूत समुद्रगुप्त के दरबार में भेजा और अनुमति मांगी।
- ✎ समुद्रगुप्त ने उसे मंदिर बनवाने की अनुमति दे दिया।
- ✎ समुद्रगुप्त ने कृष्णचरित्र पुस्तक की रचना की जिस कारण इसे कविराज कहा जाता है।
- ✎ इसे सिक्कों पर वीणा बजाते हुए तथा सैनिक “वेश-भूषा” में दिखाया गया है।
- ✎ समुद्रगुप्त के समय सबसे अधिक प्रचलित सिक्का मयूर शैली का सिक्का था।

### समुद्रगुप्त

- ✎ यह चंद्रगुप्त-I का पुत्र था।
- ✎ इसे प्राचीन भारतीय इतिहास के महानतम शासकों में गिना जाता है।



- ☛ समुद्रगुप्त के बाद रामगुप्त शासक बना।
- ☛ यह एक अयोग्य शासक था।
- ☛ इसकी पत्नी का नाम देवी था।
- ☛ देवी ने रामगुप्त के छोटे भाई चंद्रगुप्त-II के साथ षड्यंत्र रच कर खुद के पति रामगुप्त की हत्या करवा दी।
- ☛ इसकी जानकारी विशाखदत्त की पुस्तक “देवी चंद्रगुप्तम्” में मिलती है।

### चंद्रगुप्त-II

- ☛ इसने शकों का अंत कर दिया और विक्रमादित्य की उपाधि धारण की।
- ☛ विक्रमादित्य का अर्थ होता है, शूरवीर।
- ☛ इतिहास में कुल 14 शासकों ने विक्रमादित्य की उपाधि धारण की है।
- ☛ इसे शक विजेता भी कहा जाता था।
- ☛ इसे देवगुप्त के नाम से भी जाना जाता था।
- ☛ परम भागवत् का उपाधि इसी शासक द्वारा धारण किया गया था।
- ☛ इसके समय व्याघ्र शैली के सिक्के मिले हैं।
- ☛ इसने चाँदी के सिक्के चलाए। यह न्याय के लिए प्रसिद्ध था।
- ☛ इसके न्याय का सिंहासन पत्थर का बना था।
- ☛ इसके समय सर्वाधिक विस्तार हिन्दू धर्म का हुआ।
- ☛ इसके दरबार में संस्कृत के 9 विद्वान रहते थे, जिन्हें “नवरत्न” कहा जाता था।
- ☛ नवरत्न में सबसे प्रमुख कालीदास (संस्कृत लेखक), अमरदास (कवि), वराहमिहिर (खगोलविद्), धनवंतरि (आयुर्वेदाचार्य) आदि दरबार में थे।
- ☛ चंद्रगुप्त-II के दरबार में चीनी बौद्ध विद्वान फाह्यान भारत आया।
- ☛ इसने अपनी यात्रा विवरण “फो-क्यू-की” है।
- ☛ चंद्रगुप्त द्वितीय के बाद अगला शासक कुमार गुप्त बना।
- ☛ इसने महायान शाखा के शिक्षा के लिए नालंदा विश्वविद्यालय बनवाया।
- ☛ इसे महायान शाखा का ‘OXFORD’ कहा जाता है।
- ☛ विश्व का पहला विश्वविद्यालय ‘तक्षशिला’ विश्वविद्यालय था। इसकी स्थापना राजा तक्ष ने करवाई थी।
- ☛ यह वर्तमान पाकिस्तान में रावलपिंडी जिला में स्थित है।
- ☛ विश्व का पहला छात्रावास की सुविधा देने वाला विश्वविद्यालय ‘नालंदा विश्वविद्यालय’ था।
- ☛ 1198 ई. में ऐबक का सेनापति बख्तियार खिलजी ने नालंदा विश्वविद्यालय को ध्वस्त करवा दिया।
- ☛ कुमारगुप्त के बाद अगला शासक स्कंदगुप्त बना।
- ☛ स्कंदगुप्त ने सुदर्शन झील का पुनर्निर्माण करवाया।
- ☛ इसकी अलग से एक जूनागढ़ अभिलेख मिला है जिससे यह जानकारी मिलती है कि समुद्रगुप्त ने हुणों के आक्रमण को असफल कर दिया।

- ☛ इसके बाद गुप्तवंश में बहुत छोटे शासक हुए।
- ☛ भानू गुप्त के ‘एरण’ अभिलेख से सती प्रथा की जानकारी मिलती है।
- ☛ इस वंश का अंतिम शासक विष्णुगुप्त था।
- ☛ इस वंश के विनाश का कारण हुणों का आक्रमण था।
- ☛ हुण आक्रमण के बाद गुप्त वंश छोटे-छोटे सामंतों में बंट गया, जिसमें सबसे महत्वपूर्ण सामंत पुष्यभूति थे।

### गुप्तकालीन प्रशासनिक व्यवस्था

- ☛ वर्तमान हिन्दू धर्म का स्वरूप गुप्तकाल की देन है।
- ☛ गुप्तकाल की राजधानी कौशाम्बी थी।
- ☛ इस समय शासन की सबसे बड़ी इकाई देश होती थी। देश का सर्वोच्च राजा होता था, जो न्याय की भी सर्वोच्च था।
- ☛ शासन की सबसे छोटे इकाई गाँव थी, जो ग्रामीक के अधीन रहती थी।
- ☛ इस समय सबसे प्रमुख अधिकारी कुमार अमात्य था। जो वर्तमान में जिलाअधिकारी (D.M.) के समान था।
- ☛ फाह्यान के अनुसार इस समय अस्पृश्यता (छूआ-छूत) प्रचलित थी।
- ☛ निम्न जाति के लोगों को चांडाल या अंत्यज्ञ कहा जाता था।
- ☛ इस समय स्त्रियों को शिक्षा का अधिकार था और वे देवदासी भी हो सकती थी।
- ☛ इस समय बाल-विवाह, पदा प्रथा तथा सती प्रथा का भी प्रचलन था।
- ☛ इस समय वेश्यावृत्ति का प्रचलन था।
- ☛ वेश्यावृत्ति में लिप्त महिलाओं को गणिका या कुट्टनी कहा जाता था।
- ☛ इस समय गणित तथा ज्योतिष का सर्वाधिक विकास हुआ।
- ☛ अजंता की गुफाओं का निर्माण गुप्तकाल में हुआ।
- ☛ महाराष्ट्र के इन गुफाओं की संख्या 29 है।
- ☛ 16, 17 तथा 19 नंबर की गुफाएँ गुप्तकाल की हैं।
- ☛ अजंता की गुफा बौद्ध, जैन तथा हिन्दू तीनों के लिए प्रसिद्ध है।
- ☛ गुप्तकाल में ही मध्यप्रदेश में बाघ की गुफाएँ बनाई गई।
- ☛ गुप्तकाल में ही अफगानिस्तान के बामियान में स्थित पर्वतों को काटकर महात्मा बुद्ध की विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा बनाई गई, किन्तु अफगानिस्तान के तालिबान आतंकवादियों ने इसे बम से उड़ा दिया।

### गुप्तकालीन स्थापत कला

- ☛ इस काल में वास्तु, स्थापत्य, चित्रकला एवं मूर्ति कला के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई।
- ☛ इस काल में चैत्य और विहार की जगह मंदिर निर्माण पर विशेष बल दिया गया।

➤ **गुप्तकालीन प्रमुख मंदिर-**

1. विष्णु मंदिर — तिगवा (जबलपुर, मध्य प्रदेश)
2. शिव मंदिर — भूमरा (सतना, मध्य प्रदेश)
3. पार्वती मंदिर — नचनाकुठार, (मध्य प्रदेश)
4. भीतरगाँव मंदिर — भीतरगाँव (कानपुर, उत्तर प्रदेश)
5. दशावतार मंदिर — देवगढ़ (ललितपुर, उत्तर प्रदेश)
6. लक्ष्मण मंदिर — सिरपुर (ईटों से निर्मित)
7. विष्णु मंदिर — उदयगिरि (मध्य प्रदेश)
8. शिव मंदिर — खोह (मध्य प्रदेश)

**गुप्तकालीन अर्थव्यवस्था**

- ☞ गुप्तकालीन अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित थी।
- ☞ बाणभट्ट ने सिंचाई के क्षेत्र में इस काल में घंटीयंत्र के प्रयोग का विवरण दिया है।
- ☞ अमर सिंह द्वारा रचित अमरकोष से पता चलता है कि इस काल में 12 प्रकार की भूमि थी।
- ☞ इस समय अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा स्रोत भू-राजस्व था।
- ☞ भू-राजस्व कर को हख्य (नगद) या मेय (अनाज) के रूप में दिया जाता था। जो 1/4 भाग से लेकर 1/6 भाग तक हो सकता था।
- ☞ इस काल में कर को भाग कहा जाता था।
  1. उद्वंग- स्थाई काश्तकारों पर लगाया जाने वाला यह एक भूमि कर था।
  2. उपरिकर- यह अस्थायी कृषिकों पर लगने वाला कर था।
- **गुप्तकालीन भूमि के प्रकार निम्न हैं-**
- ☞ क्षेत्र- कृषि करने योग्य भूमि।
- ☞ वास्तु- वास करने योग्य भूमि।
- ☞ गोचर/चारागाह- पशुओं के चारा योग्य भूमि।
- ☞ सिल- जो भूमि जोतने योग्य नहीं होती थी।
- ☞ अप्रहत- बिना जोती हुई जंगली भूमि।

**गुप्तकालीन साहित्य**

- ☞ गुप्तकाल को संस्कृत साहित्य का स्वर्ण युग माना जाता है।
- ☞ गुप्तकाल की दरवारी भाषा संस्कृत थी।
- ☞ काशी, मथुरा, पाटलिपुत्र एवं वल्लभी आदि। इस काल के प्रमुख शैक्षणिक केन्द्र थे।
- ☞ नालंदा महाविहार की स्थापना भी इसी समय हुई जो विश्वविख्यात शैक्षणिक स्थल था।
- **गुप्तकालीन साहित्य एवं लेखक-**

|                                     |             |
|-------------------------------------|-------------|
| <b>गुप्तकालीन साहित्य</b>           | <b>लेखक</b> |
| मृच्छकटिकम्                         | - शुद्रक    |
| मुद्राराक्षस, देवीचंद्रगुप्त (नाटक) | - विशाखदत्त |

- |                                             |                |
|---------------------------------------------|----------------|
| पंचतंत्र                                    | - विष्णु शर्मा |
| नीतिसार                                     | - कामदंक       |
| कामसूत्र                                    | - वात्स्यसायन  |
| कुमारसंभव, मेघदूत, रघुवंशम, ऋतुसंहार,       | - कालिदास      |
| मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशयम, अभिज्ञान | - शाकुन्तलम्   |
| स्वप्नवासवदत्ता                             | - भास          |
| महाभारत                                     | - वेदव्यास     |
| सूर्यसिद्धांत                               | - आर्यभट्ट     |
| मालती माधव                                  | - भवभूति       |
| गणित सार                                    | - श्रीधर       |
| निघण्टु                                     | - धनवंतरि      |

**सुदर्शन झील**

| क्र. सं. | राजा             | कार्य       | राज्यपाल         |
|----------|------------------|-------------|------------------|
| 1.       | चंद्रगुप्त मौर्य | निर्माण     | पुष्यमित्र वैश्य |
| 2.       | अशोक             | जीर्णोद्धार | तुसास्प          |
| 3.       | रुद्रदामन        | जीर्णोद्धार | सुविशाख          |
| 4.       | स्कंदगुप्त       | जीर्णोद्धार | पर्णदत्त         |

**हुण**

- ☞ हुण का क्षेत्र फारस (इरान से अफगानिस्तान तक) था।
- ☞ इनकी राजधानी अफगानिस्तान के बामियान में थी।
- ☞ तारामाण तथा मिहिरकुल दो प्रमुख हुण आक्रमणकारी थे।
- ☞ मिहिरकुल बौद्ध विरोधी तथा मूर्तिभंजक (तोड़ने वाला) था।
- ☞ स्कंदगुप्त का जूनागढ़ स्थित अभिलेख से हुण आक्रमण की जानकारी मिलती है।
- ☞ इसमें हुणों के लिए मलेच्छ शब्द का प्रयोग किया गया है।
- ☞ जब हुण भारत पर आक्रमण किया उस समय गुप्तवंश का शासक स्कंदगुप्त था।
- ☞ यह मध्य एशिया का रहने वाला था। जो एक बर्बर एवं खानाबदोश थे।
- **हुण की दो शाखाएँ-**
  1. पश्चिमी
  2. पूर्वी था।
- ☞ भारत पर जिस हुण ने आक्रमण ने किया वह पूर्वी शाखा था।
- ☞ चीनी साहित्य में हुण को हुंग-नू कहा जाता था।
- ☞ यह एक जाति समूह था जिसका कोई धर्म नहीं था।

**पुष्यभूति वंश/वर्धन वंश**

- ☞ इस वंश के संस्थापक पुष्यभूति वर्धन थे। जो गुप्तकाल में एक सामंत थे।
- ☞ इन्होंने अपनी राजधानी हरियाणा के थानेश्वर को बनाया।

- ☞ इस वंश का अगला शासक प्रभाकर वर्धन थे।
- ☞ प्रभाकर वर्धन की पत्नी का नाम यशोमति था।
- ☞ इन्होंने परम भट्टारक और महाराजाधिराज का उपाधि धारण किया था।
- ☞ इस वंश का सबसे शक्तिशाली शासक प्रभाकर वर्धन था।

➤ **प्रभाकर वर्धन के 3 संतान थीं—**

1. राजवर्धन, 2. हर्षवर्धन एवं 3. राजश्री।
- ☞ राजश्री की विवाह कन्नौज के राजा ग्रहवर्मन से हुआ।
  - ☞ मालवा के शासक देवगुप्त ने ग्रहवर्मन की हत्या कर दी और राजश्री की हत्या करने का भी प्रयास किया। किन्तु राजश्री जंगल में भाग गई।
  - ☞ राजवर्धन ने देवगुप्त की हत्या कर दी।
  - ☞ गौड़ (बंगाल) शासक शशांक ने राजवर्धन की हत्या कर दिया। साथ ही इसने बौद्धी वृक्ष को भी कटवा दिया।
  - ☞ वर्तमान बौद्धी वृक्ष छठी पीढ़ी की है।
  - ☞ शशांक शैव धर्म का अनुयायी था।
  - ☞ हर्षवर्धन ने शशांक की हत्या कर दी।

➤ **हर्षवर्धन के सामने 2 चुनौती थी—**

1. राजश्री का पता लगाना
  2. साम्राज्य को संभालना।
- ☞ हर्षवर्धन ने दिवाकर नामक बौद्ध भिक्षुक के सहयोग से राजश्री का पता लगाया।
  - ☞ हर्षवर्धन ने अपनी राजधानी कन्नौज को बनाया और अपने साम्राज्य को संभालने लगा।
  - ☞ हर्षवर्धन ने कभी भी स्वयं को कन्नौज को राजा साबित नहीं किया बल्कि राजश्री का संरक्षक बनकर शासन किया।

➤ **हर्षवर्धन साहित्य प्रेमी था। इसने 3 पुस्तकों की रचना की—**

1. नागानंद
  2. रत्नावली
  3. प्रियदर्शिका।
- ☞ हर्षवर्धन के दरबारी कवि बाणभट्ट थे।
- **इन्होंने 2 पुस्तकों की रचना की—**
1. कादम्बरी
  2. हर्षचरित्र।
- ☞ हर्षवर्धन को शिलादित्य कहा जाता था।
  - ☞ हर्षवर्धन को भारत का अंतिम हिंदु सम्राट माना जाता है।
  - ☞ इसके काल में चोर तथा डाकुओं का बोल-बाला था।

- ☞ इसके समय मथुरा सूती वस्त्र का प्रमुख केन्द्र था।
- ☞ इसके समय चीनी यात्री ह्वेनसांग भारत की यात्रा किया।
- ☞ 629 ई. में जब ह्वेनसांग भारत आया था तब नालंदा विश्वविद्यालय के कुलपति शीलभद्र थे।
- ☞ ह्वेनसांग को यात्रियों का राजकुमार, नीति का पंडित तथा शाक्य मुनि कहा जाता है।
- ☞ 'सी-यू-की' की रचना ह्वेनसांग द्वारा किया गया था।
- ☞ इन्होंने नालंदा विश्वविद्यालय में अध्ययन (Student) तथा अध्यापन (Teacher) का कार्य किया।
- ☞ नालंदा विश्वविद्यालय के लिए 100 गांवों की आय हर्षवर्धन ने दान के रूप में दिया।
- ☞ ह्वेनसांग की विद्वता को देखकर हर्षवर्धन ने प्रत्येक 5 वर्ष पर प्रयाग में होने वाले महामोक्ष परिषद् का अध्यक्ष ह्वेनसांग को बना दिया, जिस कारण ब्राह्मणों ने हर्षवर्धन का विरोध किया।
- ☞ कुम्भ मेला का प्रारंभ हर्षवर्धन के द्वारा ही माना जाता है।
- ☞ हर्षवर्धन हिन्दू था किन्तु वह बौद्ध धर्म के महायान शाखा से प्रभावित था।
- ☞ हर्षवर्धन के समय उत्तर भारत का सबसे महत्वपूर्ण शहर कन्नौज था।
- ☞ इसके समय कन्नौज में बहुत बड़े बौद्ध सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसे 5वीं बौद्ध संगीति भी कहते हैं।
- ☞ हर्षवर्धन समस्त उत्तर भारत को जीत लिया था, किन्तु कश्मीर को अपने क्षेत्र में नहीं मिला पाया।
- ☞ हर्षवर्धन ने दक्षिण भारत का अभियान प्रारंभ किया किन्तु नर्मदा नदी के तट पर दक्षिण भारत के चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय ने इसे पराजित कर दिया।
- ☞ इसकी जानकारी पुलकेशिन द्वितीय का कर्नाटक में स्थित 'एहोल' अभिलेख से मिलती है।
- ☞ 647 ई. में हर्षवर्धन की मृत्यु हो गई।
- ☞ हर्षवर्धन की कोई संतान नहीं थी, जिस कारण वर्धन वंश का पतन हो गया।
- ☞ हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद उत्तर भारत में राजनीतिक शून्य (सन्नाटा) की स्थिति में आ गई।
- ☞ इतिहास में हर्षवर्धन के मृत्यु को "युग-परिवर्तन" का काल कहते हैं।
- ☞ हर्षवर्धन अंतिम बौद्ध राजा था जो संस्कृत का महान विद्वान था।
- ☞ हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद कन्नौज पर यशोवर्मन का शासन हुआ।



## संगम काल

- ☞ 100 ई. से 250 ई. के मध्य दक्षिण भारत में पांड्य राजाओं के संरक्षण के कवियों के 3 विशाल सम्मेलन बुलाए गए। इन सम्मेलन को ही तमिल भाषा में संगम कहते हैं।
- ☞ इन्हीं कवियों के द्वारा सभा में कई तमिल साहित्य की रचना की गई। इन्हीं तमिल साहित्य को संगम साहित्य भी कहा जाता है।
- इतिहास में 3 संगमों का वर्णन मिलता है—
- 1. प्रथम संगम
  - ☞ यह दक्षिणी मदुरै में आयोजित हुआ था।
  - ☞ इसकी अध्यक्षता अगस्त्य ऋषि ने की।
  - ☞ इस सम्मेलन में 89 राजाओं ने भाग लिया।
  - ☞ वर्तमान में दक्षिणी मदुरै जलमग्न हो गया है। जिस कारण इस संगम में लिखे गए साहित्य की कोई जानकारी नहीं है।
- 2. द्वितीय संगम
  - ☞ यह कपाटपूरम (अलैव) में आयोजित हुआ था।
  - ☞ प्रारंभ में इसकी अध्यक्षता अगस्त्य ऋषि ने की किन्तु बाद में “तोलकापिय्यर” ने की।
  - ☞ इसी सम्मेलन में “तोलकापिय्यर” ने “तोलकापिय्यम” नामक तमिल साहित्य की रचना की।
  - ☞ इस संगम में 59 राजाओं ने हिस्सा लिया।
- 3. तृतीय संगम—
  - ☞ इसकी अध्यक्षता “नक्किरर” ने किया।
  - ☞ इसमें 49 राजाओं ने हिस्सा लिया।
  - ☞ इस संगम में लिखे गए साहित्य का भी कोई स्पष्ट साक्ष्य नहीं मिला है।
  - ☞ यह उत्तरी मदुरै में आयोजित हुआ था।

**Note :-**

1. तीनों ही सम्मेलन तमिलनाडु में किए गए हैं।
  2. अगस्त्य ऋषि (काशी) बनारस के रहने वाले थे जो तमिलनाडु में बस गए।
- ☞ अगस्त्य ऋषि को तमिल साहित्य का जनक माना जाता है।
  - ☞ पांड्य राजाओं के द्वारा इन संगमों को शाही संरक्षण प्रदान किया गया।

## संगम काल के राज्य

- ☞ कृष्णा नदी के दक्षिण में अर्थात् भारत के सुदूर दक्षिण में 3 राज्यों का उदय हुआ।

1. चोल
2. चेर
3. पांड्य।

## चोल वंश

- ☞ संगम काल के वंशों में सबसे प्राचीन चोल था। इसका अर्थ होता है— नया देश।
- ☞ इसके बारे में प्रथम जानकारी पाणिनी की रचना अष्टाध्यायी से मिलती है।
- ☞ चोल साम्राज्य तमिलनाडु के पूर्वी भाग में था।
- ☞ इसकी प्रथम राजधानी ‘उरई-ऊर’ थी।
- ☞ इसकी मुख्य राजधानी तंजौर (तमिलनाडु) में स्थित था।
- ☞ इस वंश की दूसरी राजधानी कांचीपूरम् (तमिलनाडु) में बनाई गयी थी।
- ☞ इनका राजकीय चिन्ह बाघ था।
- ☞ उरई-ऊर सूती वस्त्र के लिए विश्व प्रसिद्ध था।
- ☞ ऐसा कहा जाता है कि इस समय के सूती वस्त्र साँप की केंचुली (पोआ) से भी पतले होते थे।
- ☞ चोल साम्राज्य कावेरी नदी के उपजाऊ मैदान में था। जिस कारण कहा जाता है कि जितने क्षेत्र पर एक हाथी सोता था, उतने ही क्षेत्र पर उतना अनाज उगाया जा सकता है जिससे 1 वर्ष तक 7 लोगों का पेट भरा जा सकता है।
- ☞ चोल वंश का पहला शासक “विजयालय” था।
- ☞ इस वंश का सबसे प्रतापी शासक करिकाल था। इसने श्रीलंका को जीत लिया और वहाँ से 12,000 द्वार लाया और कावेरी नदी पर 160 m लंबा बाँध बनवाया।
- ☞ यह भारत का पहला बाँध था। इसे Grand बाँध कहते हैं।
- ☞ करिकाल ने पुहार नामक बंदरगाह बनवाया जिसे “कावेरी पटनम्” कहते हैं।
- ☞ एलोरा तथा पेरूरनरकिल्ली इस वंश के अन्य शासक थे।
- ☞ चोल वंश 5वीं सदी आते-आते अत्यंत कमजोर हो गया और सामंती जीवन जीने लगा।
- ☞ 8वीं सदी में पुनः चोलों का उदय हुआ।

## चेर वंश

- ☞ चेर का अर्थ होता है— पर्वतीय देश।
- ☞ ऐतरेय ब्राह्मण ग्रंथ में इसे चेरापद कहा गया है।
- ☞ अशोक के द्वितीय शिलालेख में इसे केरलपुत्र कहा गया है।



- ☛ इनका क्षेत्र केरल (मालाबार) में था।
- ☛ चेर वंश का प्रथम शासक उदियन जेरल था।
- ☛ यह केरल का प्राचीन नाम था।
- ☛ इनकी राजधानी बंजी/करूर थी।
- ☛ इनका राज्य चिह्न धनुष था।
- ☛ उदियन जेरल ने महाभारत युद्ध के सैनिकों के लिए भोज करवाया था।
- ☛ अगला शासक शेनगुट्टवन था, इसे लाल-चेर भी कहते हैं।
- ☛ इस वंश का सबसे प्रतापी शासक शेनगुट्टवन था।
- ☛ शेनगुट्टवन ने पत्नीपूजा (कण्णगी पूजा) प्रारंभ किया। इस पूजा में उसने श्रीलंका तथा पड़ोस के राजाओं को भी आमंत्रित किया।
- ☛ इस वंश का अगला शासक आदीगमान था, जिसने गन्ने की खेती प्रारंभ की।
- ☛ चेर वंश का अंतिम शासक कुडक्कईय्यल जेरल था। जिसे हाथी की आँख वाला कहा जाता था।
- ☛ इसी शासक के समय पेरून जेरल पिरपोरई विद्वानों का संरक्षक था।
- ☛ इस वंश का प्रमुख बंदरगाह मुजरिस (रोमन व्यापार केन्द्र) था।
- ☛ दूसरी सदी के अंत में (190 ई.) चेर वंश समाप्त हो गया।

### पांड्य वंश

- ☛ इसका अर्थ होता है— प्राचीन देश।
- ☛ इसकी राजभाषा तमिल थी।
- ☛ यह मातृ सत्तात्मक था तथा मोतियों के लिए प्रसिद्ध था।
- ☛ पांड्य राजाओं ने ही तीनों संगम का अयोजन करवाया था।
- ☛ पांड्य वंश की प्रथम जानकारी मेगास्थनीज की पुस्तक 'इण्डिका' से मिलती है।
- ☛ पांड्य वंश का क्षेत्र तमिलनाडु के दक्षिणी भाग में था।
- ☛ इनकी राजधानी मदुरै थी।
- ☛ इनका राजकीय चिह्न मछली (कार्प) था।
- ☛ पांड्य वंश का प्रथम शासक नोडियोन था।
- ☛ इसने समुद्र पूजा प्रारंभ की।
- ☛ इस वंश का सबसे प्रतापी शासक नेडूजेलियन था।
- ☛ इसने 290 ई. में हुए 'तलैयालंगानम' के युद्ध में चेर, चोल तथा 5 अन्य राजाओं को एक साथ पराजित कर दिया।
- ☛ इस वंश का अंतिम शासक नल्लि वकोडन (मरावर्मन राजसिंहा तृतीय) था।
- ☛ 5वीं सदी आते-आते पाण्ड्य वंश अस्तित्व विहिन हो गया।
- ☛ पांड्य वंश के राजाओं का रोम के राजा से अच्छा संबंध था। इन्होंने अपने दूत रोम के राजा आगस्टस के दरबार में भेजा था।
- ☛ पांड्य वंश की राजधानी मदुरै को त्योहारों का शहर कहते हैं।
- ☛ यहाँ का मीनाक्षी मंदिर विश्व-प्रसिद्ध है।
- ☛ अशोक के शिलालेख, महाभारत एवं रामायण से इस वंश की जानकारी मिलती है।

- ☛ मेगास्थनीज ने इस वंश को माबर नाम से वर्णन किया है।
- ☛ श्रीमरा श्रीवल्लभा अपने शासन काल में कई सिचाई परियोजनाएँ शुरू करवायी थी तथा इसके निर्माण में ईंट और ग्रेनाइट का प्रयोग किया गया था।
- ☛ मरावर्मन राजसिंहा तृतीय एक ऐसा पाण्ड्य शासक था जिसने कुडम्बलूर में तंजावूर के चोल राजा का विरोध किया था।
- ☛ शिल्पादिकारम् पुस्तक में नेडूजेलियन प्रथम का वर्णन मिलता है। यह पुस्तक तमिल साहित्य के प्रथम महाकाव्य के रूप में जाना जाता है।

### ➤ संगम कालीन आर्थिक जीवन

- ☛ इस युग में लोगों की आजीविका का मूल आधार कृषि थी तथा संपन्न कृषकों को 'वेल्लार' कहा जाता था।
- ☛ इस समय भूमि कर सामान्यतः उपज का 1/6 भाग होता था।
- ☛ यहाँ काली मिर्च का उत्पादन अधिक होता था। यवनों को यह अत्यधिक प्रिय होने के कारण इसे 'यवनप्रिय' कहा जाता था।
- ☛ संगम काल सूती वस्त्र, मसाला, मोती, कृषि तथा पशुपालन के लिए प्रसिद्ध था।
- ☛ इस समय उरैयूर सूती वस्त्र विश्व में सबसे अधिक प्रसिद्ध था।

### ➤ संगम कालीन व्यापार

- ☛ संगम काल में रोम से सर्वाधिक व्यापार होते थे।
- ☛ तमिलनाडु के अरिकमेडू (पांडिचेरी) से रोम का सर्वाधिक व्यापार होता था।
- ☛ इस काल में व्यापारी वर्ग को बेनिगर कहते थे।

### ➤ संगम कालीन जाति व्यवस्था

- ☛ संगम काल में उत्तर-भारत के विपरीत जाति व्यवस्था थी।
- ☛ यहाँ सामंत तथा दास में समाज बटा हुआ था।
- ☛ यहाँ वर्ण व्यवस्था या ऊँच-नीच की जाति व्यवस्था नहीं थी।
- ☛ संगम काल में अस्पृश्यता थी, लेकिन दास प्रथा का उल्लेख नहीं मिलता है।

### ➤ संगम कालीन धार्मिक जीवन

- ☛ संगम काल में सबसे पुख देवता मुरुगन थे, जिन्हें वर्तमान में सुब्रमण्यम् कहा जाता है।
- ☛ दूसरे प्रमुख देवता कार्तिकी (गणेश जी के भाई) थे।

### ➤ संगम कालीन प्रशासनिक व्यवस्था

- ☛ इस युग में वंशानुगत राजतंत्र था जिसमें सारी शक्तियाँ राजा में ही निहित होती थी।
- ☛ न्याय का सर्वोच्च अधिकारी राजा ही होता था।
- ☛ राजा के न्यायालय को 'मन्म' कहा जाता था।
- ☛ सेनापति 'एनाडि' की उपाधि धारण करते थे।
- ☛ संपूर्ण राज्य को 'मण्डलम्' कहा जाता था। मण्डलम् के बाद 'नाडू' नाडू के बाद 'उर' होता था।

### ➤ संगम कालीन बंदरगाह

- ☛ संगमकाल के तीनों ही वंश के पास अपने-अपने बंदरगाह थे।

- (i) चेर-बंदरगाह → बंदर-चेर
- (ii) चोल-बंदरगाह → पुहार तथा उरई
- (iii) पांड्य-बंदरगाह → शालीयूर एवं कोरकाय

➤ **संगम कालीन साहित्य**

- ☞ संगम साहित्य तमिल भाषा में लिखे गए।
- ☞ इन्हें तमिलकम या द्रविड़ साहित्य भी कहते हैं, जो निम्नलिखित हैं।

(i) **तोलकाप्पियम**— इसका संबंध व्याकरण से है। इसकी रचना तोलकाप्पियर ने की थी।

(ii) **तिरुक्कूराल या कूराल**— इसे तमिल साहित्य का बाईबील (एंजिल) कहते हैं।

(iii) **जीवक चिन्तामणि**— इसका संबंध जैन धर्म से है। इसकी रचना तिरुत्त्वकदेवर ने की है।

(iv) **शिल्पादिकारम**— इसका संबंध जैन धर्म से है। इसमें नुपूर (पायल) की कहानी है। इसे तमिल काव्य का इलियट भी कहा जाता है। इसकी रचना इलांगोआदिगल ने की थी।

- ☞ राजा कोवलन अपनी पत्नी कन्नगी को छोड़कर माध्वी नामक नर्तकी के प्रेम में फंस जाता है और अपने धन को लुटाने के बाद उसे पश्चाताप होता है और अपनी पत्नी के पास लौटता है। उसकी पत्नी कन्नगी ने उसे अपना एक पायल दिया, जिसे बेचकर वे मदुरै में व्यापार प्रारंभ किया, किन्तु कोवलन पर मदुरै की रानी की पायल चुराने का आरोप लगा दिया गया और उसे फांसी दे दी गई।

- ☞ कोवलन की पत्नी कन्नगी ने श्राप दे दिया, जिससे मदुरै शहर नष्ट हो गया।

(v) **मणिमेखले**— इसका संबंध भी बौद्ध धर्म से है। इसमें कोलवन तथा माध्वी से उत्पन्न संतान मणिमेखलम् की चर्चा है, जिसने अंततः बौद्ध धर्म अपना लिया था। इसकी रचना शीतलैशतुनार द्वारा किया गया था। इसे तमिल काव्य की ओडिशी भी कहा जाता है।

**वाकाटक वंश**

- ☞ सातवाहन वंश के अंत के बाद उनके क्षेत्र पर वाकाटक वंश का आगमन हुआ।
- ☞ इन्होंने अपनी राजधानी बरार को बनाया था।
- ☞ ये ब्राह्मण धर्म को मानते थे। (ये शैव सम्प्रदाय के थे।)
- ☞ इस वंश की स्थापना विंध्य शक्ति (255 ई०) ने किया था।
- ☞ इस वंश का सबसे प्रतापी शासक प्रवरसेन प्रथम थे। इन्होंने 4 अश्वमेध यज्ञ तथा 1 वाजपेय यज्ञ का आयोजन किया।
- ☞ इस वंश के शासक रूद्रसेन का विवाह प्रभावती से हुआ।
- ☞ प्रभावती, चंद्रगुप्त-II तथा देवी की पुत्री थी।
- ☞ इस विवाह के कारण गुप्त तथा वाकाटक के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित हुआ।

- ☞ समुद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख से वाकाटक की जानकारी नहीं मिलती है, क्योंकि इस अभिलेख में केवल जीते गए क्षेत्र की चर्चा है।
- ☞ वाकाटक वंश का अंतिम शासक पृथ्वी सेन द्वितीय था।
- ☞ वाकाटक की शक्ति धीरे-धीरे कमजोर हो गई और इनके स्थान पर चालुक्य वंश का उदय हो गया।

**चालुक्य वंश ( 550 ई.-757 ई. )**

- **सतपुड़ा पर्वत के दक्षिण में चालुक्य वंश का उदय हुआ। इनकी 3 शाखाएँ थी—**

- (i) वातापी/बादामी, (ii) कल्याणी एवं (iii) बेंगी।

**चालुक्य ( वातापी/बादामी )**

- ☞ वातापी का वर्तमान नाम बादामी है।
- ☞ यह तीनों चालुक्य में सबसे पश्चिम में स्थित था।
- ☞ इसी ने चालुक्य की नींव रखी थी।
- ☞ इस वंश के संस्थापक जयसिंह थे। जिसके बारे में जानकारी कैरा ताम्रपत्र अभिलेख से प्राप्त होता है।
- ☞ इसने सामंत के रूप में शासन किया। क्योंकि यह स्वतंत्र शासक नहीं थे।
- ☞ इन्होंने वातापी (कर्नाटक) को अपनी राजधानी बनाया।
- ☞ पुलकेशिन-II इस वंश का सबसे प्रतापी और महान शासक था। जिसके बारे में जानकारी एहोल अभिलेख से मिलती है।
- ☞ इसने नर्मदा नदी को पार करके कन्नौज के शासक हर्षवर्धन को पराजित कर दिया।
- ☞ इसने दक्षिण भारत में पल्लव शासक महेन्द्र वर्मन को पराजित कर दिया तथा उसकी राजधानी कांची को जीतकर कांचीकोंड की उपाधि धारण कर लिया।
- ☞ पुलकेशिन-II ने दुबारा पल्लव पर आक्रमण किया। किन्तु पल्लव शासक नरसिंह वर्मन ने इसे पराजित कर दिया और उसका पीछा करते हुए उसकी राजधानी वातापी तक पहुँच गया एवं वातापी जीतकर वातापीकोंड की उपाधि धारण कर ली और पुलकेशिन-II की हत्या कर दी।
- ☞ इसके अतिरिक्त इन्होंने वातापी में स्थित मल्लिकार्जुन मंदिर के दीवार पर अपना एक अभिलेख खुदवाया।
- ☞ पुलकेशिन-II के दरबार में 641 ई. में चीनी यात्री ह्वेनसांग आया था।
- ☞ पुलकेशिन-II ने ईरान के राजा खुसरो-II के दरबार में अपना एक दूत मंडल भेजा था।
- ☞ पुलकेशिन-II के राजकीय कवि रविकिर्ति था।
- ☞ पुलकेशिन-II के बाद अगला शासक विक्रमादित्य बना। इन्होंने पल्लव की राजधानी कांची पर अधिकार करके अपने पिता के पराजय का बदला लिया किन्तु अपने शासन के अंतिम समय में पल्लव शासक परमेश्वरवर्मन से पराजय हो गया।

- ❖ विक्रमादित्य प्रथम के बाद चालुक्य वंश का अगला शासक विनयादित्य बना। इसके समय चालुक्य वंश का सर्वाधिक विकास हुआ। इन्होंने सकलेतरपथनाथ की उपाधि धारण की। जिसका अर्थ होता है— संघर्ष पर विराम लगाने वाला।
- ❖ विनयादित्य के मृत्यु के बाद अगला शासक विजयादित्य बना। इन्होंने पट्टदक्कल (बीजापुर, कर्नाटक) में एक शिव मंदिर का निर्माण करवाया।
- ❖ पट्टदक्कल शिव मंदिर को विजेश्वर शिव मंदिर के नाम से जाना जाता है।
- ❖ विजयादित्य के बाद इस वंश का अगला शासक विक्रमादित्य-II बना। इन्होंने पल्लव राज्य पर आक्रमण करके उसके राजधानी कांची पर अधिकार करके कांचीकोण्ड की उपाधि धारण कर ली और साथ ही कांची में स्थित राजसिंहेश्वर मंदिर के दीवार पर एक अभिलेख खुदवाया।
- ❖ विक्रमादित्य द्वितीय की दो पत्नियाँ थी। इसकी पहली पत्नी लोकमहादेवी थी जो पट्टदक्कल में लोकेश्वर महादेव मंदिर का निर्माण करवाई। इस मंदिर को विरूपाक्ष मंदिर के नाम से जाना जाता है।
- ❖ दूसरी पत्नी त्रिलोकीमहादेवी थी इन्होंने पट्टदक्कल में त्रिलोकेश्वर महादेव मंदिर का निर्माण करवाया।
- ❖ इस वंश का अंतिम शासक कीर्तिवर्मन-II था।
- ❖ कीर्तिवर्मन-II की हत्या दन्तिदुर्ग ने कर दी और इसके स्थान पर राष्ट्रकूट वंश की स्थापना कर दी तथा चालुक्यों को अपना सामंत बना लिया।

### कल्याणी का चालुक्य

- ❖ चालुक्य जो सामंत का जीवन जी रहे थे, राष्ट्रकूट की कमजोर स्थिति का फायदा उठा लिया और राष्ट्रकूट के अंतिम शासक कर्क-II की हत्या तैलप-II नामक चालुक्य ने कर दी।
- ❖ इस वंश को पश्चिमी चालुक्य भी कहा जाता है।
- ❖ कल्याणी के चालुक्य का संस्थापक तैलप-II था। इसकी राजधानी मानखेट थी।
- ❖ इस वंश का अगला शासक सोमेश्वर था। जिसने अपनी राजधानी मानखेट से कल्याणी स्थानान्तरित किया, जिस कारण इस वंश का नाम कल्याणी का चालुक्य हो गया।
- ❖ सोमेश्वर प्रथम ने अपने जीवनकाल में केवल चोलों पर विजय हासिल नहीं कर पाया और चोल शासक राजेन्द्र चोल से हारकर सोमेश्वर प्रथम ने करुवती के पास तुंगभद्रा नदी में डूबकर आत्महत्या कर ली।
- ❖ इस वंश का अगला शासक विक्रमादित्य-VI बना। यह एक कुशल योद्धा था।
- ❖ विक्रमादित्य-VI ने चोल के प्रभाव को रोक दिया। यह साहित्य प्रेमी था।

- ❖ इसके राजकीय कवि विल्हन थे।
- ❖ इन्होंने विक्रमांकदेव चरित नामक पुस्तक लिखी।
- ❖ इसके दरबार में मिताक्षर के लेखक विज्ञानेश्वर रहते थे। मिताक्षरा का संबंध हिन्दू कानून से था।
- ❖ इस वंश का राजचिन्ह वाराह (सुअर) था।
- ❖ इस वंश के अंतिम शासक सोमेश्वर-IV थे।

### बेंगी का चालुक्य

- ❖ यह चालुक्य की सबसे कमजोर शाखा थी, जो आंध्रप्रदेश के बेंगी में थी।
- ❖ इस वंश के संस्थापक विष्णुवर्धन थे।
- ❖ इस वंश की राजधानी बेंगी (आंध्रप्रदेश) थी।
- ❖ इस वंश में कोई भी प्रतापी शासक नहीं हुआ।
- ❖ इस वंश का सबसे योग्य शासक विजयादित्य-III था।

### पल्लव वंश

- ❖ इस वंश के संस्थापक सिंह विष्णु थे।
- ❖ सिंह विष्णु को अवनि सिंह भी कहा जाता है।
- ❖ इस वंश की राजधानी कांची थी।
- ❖ यह दक्षिण भारत में कृष्णा और गोदावरी नदियों के बीच का प्रदेश था।
- ❖ इस वंश की प्रथम जानकारी हरिसेन की प्रयाग प्रशस्ति एवं ह्वेनसांग की यात्रा से मिलती है।
- ❖ इसका प्रारंभिक अभिलेख प्राकृत भाषा में एवं बाद में संस्कृत भाषा में मिले हैं।
- ❖ इसके दरबार में भारवि नामक विद्वान रहते थे। जिन्होंने किरातार्जुनीयम नामक पुस्तक लिखी है।
- ❖ इस वंश का अगला शासक महेन्द्रवर्मन था। जिसे वातापी के चालुक्य शासक पुलकेशिन-II ने पराजित कर दिया।
- ❖ पुडुकोट्टई की तिरूकोकर्म, कोकणेश्वर मंदिर और पल्लवारम् की पाँच शेल वाले गुफा मंदिर का निर्माण महेन्द्र वर्मन-I द्वारा कराया गया था।
- ❖ इस वंश का अगला शासक नरसिंह वर्मन था। इसके समय पुनः पुलकेशिन-II ने आक्रमण किया, किन्तु पुलकेशिन-II को नरसिंहवर्मन ने मार दिया और उसकी राजधानी वातापी को जीतकर वातापीकोण्ड की उपाधि धारण कर ली।
- ❖ इस वंश का अगला शासक नरसिंहवर्मन-II था।
- ❖ इसके दरबार में दण्डी नामक विद्वान रहते थे, जिन्होंने दासकुमार चरितम् नामक पुस्तक संस्कृत भाषा में लिखी।
- ❖ इस वंश का अंतिम शासक अपराजित था। जिसे चोल शासक आदित्य-I ने पराजित कर दिया और पल्लव के स्थान पर चोल वंश की स्थापना कर दी।
- ❖ 8वीं सदी के इस पल्लव वंश में शैव धर्म अधिक प्रचलित था।
- ❖ महेन्द्र वर्मन संगीत प्रेमी था।



- इसने कद्राचार्य को संगीत की शिक्षा दी थी।
- नरसिंहवर्मन-I ने महाबलीपुरम में एकश्मीय मंदिर बनवाया जिसे रथ मंदिर कहते हैं।
- नरसिंहवर्मन-I के दरबार में हवेनसांग आया था।
- नरसिंहवर्मन-II ने कांची में कैलाश मंदिर, सप्तपैगोडा के शोर मंदिर और महाबलीपुरम् का मंदिर बनवाया।
- इसी के समय भारत में अरब आक्रमण प्रारंभ हो गए।
- इस वंश में शिक्षा का प्रमुख केन्द्र कांची था।
- महाबलीपुरम् के सप्त पैगोडा इसी वंश द्वारा स्थापित किया गया था।

### चोल वंश ( 9वीं सदी ) तंजौर

- चोल वंश के संस्थापक विजयालय थे। इन्हें चोल वंश का द्वितीय संस्थापक कहते हैं। इन्होंने नर कंसरी की उपाधि धारण की थी।
- चोल प्रारंभ में पल्लवों के सामंत थे।
- पल्लवों के ध्वंशावशेष पर चोल वंश की नींव रखी गई।
- इन्होंने अपनी राजधानी तंजौर/तंजावुर को बनाया।
- 9वीं सदी में उभरा यह चोल वंश संगमकालीन चोल वंश की ही शाखा थी।
- इस वंश का अगला शासक आदित्य-I बना। इसने पल्लव शासक अपराजित को पराजित कर दिया। जिससे कि पल्लवों का अंत हो गया। इन्होंने कोदंडराम की उपाधि धारण किया था।
- चोल का अगला शासक परान्तक-I बना। इसने मदुरै जीतकर मदुरैकोण्ड की उपाधि धारण कर ली। इसकी जानकारी उत्तरमेरूर अभिलेख से मिलती है।
- परान्तक-I पहला ऐसा चोल शासक था। जिसने भूमि सर्वेक्षण करवाया था।
- परान्तक-I को राष्ट्रकूट शासक कृष्ण-III ने तक्कोलम् के युद्ध में पराजित कर दिया।
- चोल वंश का अगला शासक राजाराज बना। इनका मूल नाम अरिमोलीवर्मन था।
- इसने श्रीलंका के उत्तरी भाग को जीतकर चोल वंश में मिला लिया और मामूडी चोल की उपाधि धारण कर ली। किन्तु इन्होंने श्रीलंका को चोल साम्राज्य में शामिल नहीं किया।
- इसने अपनी राजधानी तंजौर में “वृहदेश्वर” मंदिर का निर्माण करवाया। ये शैव धर्म को मानते थे। इसने शिवपाद शेखर की उपाधि धारण किया।
- राजाराज अपने अंतिम दिनों में मालदीव पर भी अधिकार कर लिया और एक दूत मंडल को चीन भेजा।
- अगला चोल शासक राजेन्द्र-I बना। यह चोल वंश का सबसे प्रतापी शासक था। इसने श्रीलंका को पूरी तरह जीत लिया और वहाँ की राजधानी अनुराधापुर पर आक्रमण करके वहाँ के शासक महेन्द्र-V को बंदी बना लिया।

- राजेन्द्र-I ने बंगाल के शासक महिपाल को पराजित कर दिया और गंगईकोण्ड की उपाधि धारण कर ली और वहाँ से गंगाजल को लाया।
- इस शहर में उसने एक तालाब बनवाया और उसमें गंगाजल मिला दिया और इस तालाब का नाम चोलगंगम् रखा।
- अपनी राजधानी के बगल में एक नया शहर बसाया, जिसे गंगईकोण्ड चोलपुरम् कहते हैं।
- राजेन्द्र-I ने सुमात्रा (इण्डोनेशिया) पर आक्रमण किया और वहाँ के शासक शैलेन्द्र को पराजित कर दिया। राजेन्द्र प्रथम अरब सागर में स्थित सदिमन्तिक नामक द्वीप पर भी अधिकार कर लिया।
- राजेन्द्र प्रथम चोल वंश का पहला शासक था जिसने 72 सदस्यीय दूत मंडल चीन भेजा था।
- इसी वंश के शासक कोलोतुंग द्वितीय था। जिसने चिदम्बरम् मंदिर में स्थापित गोविंदराज (विष्णु) की मूर्ति को मंदिर से हटवाकर समुद्र में फेंकवा दिया था। जिसे रामानुजाचार्य ने समुद्र से निकलवाकर तिरुपति मंदिर में स्थापित करवाया।
- इस वंश के अंतिम शासक राजेन्द्र-III थे। जिनके बाद यह वंश स्वतः समाप्त हो गया।
- चोल काल की स्थानीय स्वशासन भारत का सबसे प्राचीन स्थानीय स्वशासन है। इस समय स्थानीय स्वशासन का चुनाव लौटरी पद्धति द्वारा होता था।
- चोल प्रशासन में महत्वपूर्ण पद राजा का होता था। राजा को सहायता देने के लिए मंत्रिपरिषद् होती थी।
- चोल प्रशासन में भाग लेने वाले उच्च श्रेणी के अधिकारी को पेरुन्दनम् तथा निम्न श्रेणी के अधिकारी को शेरुन्दनम् कहा जाता था।
- इस समय राजा का उच्च अधिकारी को उड्डनकुट्टम कहा जाता था।
- इस समय अधिकारियों को वेतन न देकर भूमि अनुदान के रूप में दिया जाता था। इस समय प्रशासन की सुविधा के लिए पूरे चोल साम्राज्य को छः प्रांतों में बांटा गया था। उस प्रांत को मंडलम् कहा जाता था।
- प्रांत या मंडलम् को कोट्टम(कमिश्नरी) में, कोट्टम को नाडू (जिला) में बांटा गया था।
- नाडू (जिला) को कई कुरम (ग्राम समूह) में बांटा गया था।
- चोल काल में आय का मुख्य स्रोत भू-राजस्व था।
- चोलों की नौसेना सबसे शक्तिशाली थी।
- चोल काल में शिव मंदिरों का निर्माण हुआ, जो द्रविड़ शैली में बने थे।
- द्रविड़ शैली को विमानम् शैली भी कहते हैं।
- विमानम् शैली का प्रथम उपयोग तंजौर के वृहदेश्वर मंदिर में किया गया।
- चोल काल में निर्मित नटराज प्रतिमा सांस्कृतिक धरोहर था।



- चोल काल को तमिल भाषा का स्वर्णकाल कहा जाता है।
- तमिल साहित्य के त्रित्त के रूप में कंबन, ओट्टककुट्टन एवं पुगलेन्दी थे।
- कंबन ने तमिल रामायण की रचना किए।

### राष्ट्रकूट वंश ( 7वीं-9वीं )

- इस वंश के संस्थापक दन्ति दुर्ग थे। इन्होंने वातापी के चालुक्य शासक कीर्तिवर्मन-II को हराकर राष्ट्रकूट की नींव रखी किन्तु उन्होंने चालुक्यों का पूरी तरह सफाया नहीं किया जो कि इनकी सबसे बड़ी भूल साबित हुई।
- दन्तिदुर्ग ने अपनी राजधानी मान्यखेत (मालखण्ड) को बनाया।
- दन्तिदुर्ग ने महाधिराज, परमेश्वर और परमभट्टारक उपाधियाँ धारण की।
- इस वंश का अगला शासक कृष्ण-I था। जिसने महाराष्ट्र में एलोरा के कैलाश मंदिर बनवाया।
- इस वंश का अगला शासक ध्रुव बना, जिसने कन्नौज पर अधिकार के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष में भाग लिया। त्रिपक्षीय संघर्ष 100 वर्षों तक चला। इसमें सर्वाधिक जीत राष्ट्रकूटों की हुई थी। किन्तु अंतिम विजय प्रतिहार की हुई। इनमें सर्वाधिक पराजय पाल शासकों की हुई।
- इस वंश का अगला शासक अमोघवर्ष बना। यह सबसे विद्वान शासक था। इसने कविराज मार्ग नामक पुस्तक लिखी तथा जिनसेन के प्रभाव में आकर जैन धर्म अपना लिया।
- इसके दरबार में कन्नड़ भाषा के त्रि-विद्वान कहे जाने वाले पन्न-पोन्न-रन्न रहते थे।
- शांतिपुराण की रचना पोन्न द्वारा किया गया था।
- इस वंश का अगला शासक इन्द्र-III बना। इसके दरबार में अलमसूदी नामक अरब यात्री आया था।
- अलमसूदी ने ही पहली बार मानसून का वर्णन किया।
- इस वंश का अगला शासक कृष्ण-III बना। इसने तक्कोलम के युद्ध में चोल शासक परान्तक-I को पराजित कर दिया।
- इस वंश का अंतिम शासक कर्क-II था, जो एक अयोग्य शासक था। इसकी हत्या तैलप-II ने कर दी और चालुक्य वंश की पुनः स्थापना कर दी।
- तैलप-II का चालुक्य वंश कल्याणी का चालुक्य कहलाया।

### पाल वंश ( 7वीं-11वीं )

- पाल वंश के संस्थापक गोपाल थे।
- पाल वंश के शासक बौद्ध धर्म के वज्रयान शाखा के अनुयायी थे।
- पाल वंश बिहार-बंगाल के क्षेत्र में था।
- पाल वंश की राजधानी मुंगेर थी।
- उन्होंने बिहारशरीफ (नालंदा) में ओदंतपुरी विश्वविद्यालय की स्थापना की।

- पाल वंश का अगला शासक धर्मपाल था।
- इसने कन्नौज पर अधिकार के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष में भाग लिया किन्तु इनकी पराजय हुई और इसी कारण पाल साम्राज्य का विकास रुक गया।
- धर्मपाल ने भागलपुर (बिहार) में विक्रमशिला विश्वविद्यालय तथा बांग्लादेश में सोनपुर महाविहार की स्थापना की।
- उत्तरापथ स्वामी का उपाधि धर्मपाल ने धारण किया और इस उपाधि से गुजराती कवि सोट्टल ने संबोधित किया था।
- अगला शासक देवपाल बना। इसी ने राजधानी मुंगेर को बनाया था। इसके दरबार में अरबयात्री सुलेमान आया था। इसने बंगाल को रूहमा शब्द से संबोधित किया था।
- इस वंश का अगला शासक महिपाल बना।
- महिपाल ने पाल वंश का विकास पुनः प्रारंभ किया। जिस कारण इसे पाल वंश का द्वितीय संस्थापक कहते हैं।
- इसने आदि दीपंकर नामक बौद्ध भिक्षुक के नेतृत्व में एक दूत मंडल तिब्बत में वज्रयान शाखा के प्रचार के लिए भेजा। इसी के काल में चोल शासक राजेन्द्र-I ने बंगाल पर आक्रमण कर दिया। जिस कारण पाल वंश बिखर गया।
- पाल वंश के अंतिम शासक मदनपाल थे। इनके मृत्यु के बाद पाल वंश का अंत हो गया।
- पाल वंश के स्थान पर बंगाल के क्षेत्र में सेन वंश का उदय हुआ।

### सेन वंश

- इस वंश के संस्थापक सामंत सेन थे।
- सेन वंश की राजधानी लखनौती (नदिया), बंगाल में थीं।
- इस वंश का अगला शासक विजय सेन था।
- विजय सेन को इस वंश का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
- विजयसेन शैव धर्म का अनुयायी था।
- विजयसेन ने अपनी दो राजधानी बनायी थी। पहली राजधानी विजयपुर जो पश्चिम बंगाल में था। दूसरी राजधानी विक्रमपुर जो पूर्वी बंगाल में था। यह वर्तमान में बांग्लादेश में स्थित है।
- विजयसेन ने परमेश्वर, परमभट्टारक और महाराजाधिराज की उपाधियाँ धारण की थी।
- विजयसेन का उत्तराधिकारी वल्लाल सेन था।
- वल्लाल सेन विद्वान तथा समाज सुधारक था।
- दानसागर एवं अद्भुत सागर ग्रंथ की रचना वल्लाल सेन ने की थी।
- अद्भुत सागर की रचना के दौरान ही इनकी मृत्यु हो गई जिसके बाद लक्ष्मण सेन ने इसको पूरा किया था।
- इनके दरबार में जयदेव नामक विद्वान रहते थे।
- जयदेव ने गीत-गोविन्द नामक पुस्तक की रचना की।

- लक्ष्मण सेन के बाद कोई भी योग्य शासक नहीं बना, और 11वीं सदी के अंत में सेन वंश समाप्त हो गया।
- परमभागवत् की उपाधि लक्ष्मण सेन ने धारण की थी।
- लक्ष्मणसेन सेन वंश का प्रथम शासक था जिसने अपना अभिलेख हिन्दी में उत्कीर्ण करवाया था। इससे पहले अभिलेख प्राकृत भाषा में लिखा जाता था।

### गुर्जर प्रतिहार वंश

- गुर्जर प्रतिहार वंश की उत्पत्ति गुजरात व दक्षिण-पश्चिम राजस्थान में हुई थी।
- इस वंश के संस्थापक नागभट्ट-I थे।
- नागभट्ट-I ने मालवा के क्षेत्र पर अपना अधिकार कर लिया था।
- प्रतिहारों के अभिलेख में इन्हें श्रीराम के छोटे भाई लक्ष्मण का वंशज बताया गया है।
- पुलकेशिन द्वितीय के एहोल अभिलेख में सर्वप्रथम गुर्जर जाति का उल्लेख मिलता है।
- इस वंश का दूसरा सबसे प्रभावशाली शासक वत्सराज था और इसी ने कन्नौज के लिए त्रिस्तरीय संघर्ष में भाग लिया और कन्नौज को अपने क्षेत्र में मिला लिया।
- इस वंश का सर्वश्रेष्ठ शासक मिहिरभोज बना, जिसने कन्नौज को अपनी पूर्ण राजधानी बना दी।
- मिहिरभोज के उपलब्धियों की चर्चा उसके ग्वालियर प्रशस्ति अभिलेख में की गई है।
- मिहिरभोज ने गुर्जरों की शक्ति पराकाष्ठा पर पहुँचा दी थी।
- मिहिरभोज के पश्चात् उसका पुत्र महेन्द्रपाल शासक बना। इन्होंने राष्ट्रकूट शासक इंद्र तृतीय को पराजित किया।
- महेन्द्रपाल के दरबार में प्रसिद्ध विद्वान राजशेखर रहते थे। जिन्होंने कर्पूरीमंजरी, काव्यमीमांसा, बालरामायण आदि ग्रंथों की रचना की।
- स्कंद पुराण में इस वंश को गुर्जर कहा गया।
- इस वंश का अंतिम शासक यशपाल बना। यशपाल के बाद यह वंश स्वतः समाप्त हो गया।

### चंदेल वंश/जजाकभूक्ति वंश

- यह वंश मध्यप्रदेश के क्षेत्र में था। इसे जजाकभूक्ति वंश भी कहा जाता है।
- इस वंश के संस्थापक नन्नुक थे।
- चंदेल शासक ने मंदिर निर्माण के क्षेत्र में बेसर शैली (द्रविड़ शैली + नागर शैली) को जन्म दिया।
- बेसर शैली को मिश्रित शैली भी कहते हैं। मध्य भारत में बनने वाली अधिकांश मंदिरें बेसर शैली में बनी हैं।
- इसने खजुराहो में विष्णु मंदिर बनवाया। इस मंदिर को खजुराहो का चतुर्भुज मंदिर भी कहते हैं।

- प्रारंभ में इसकी राजधानी कालिंजर (महोबा) थी। किन्तु बाद में इसे खजुराहो स्थानांतरित किया गया।
- इस वंश का अगला शासक यशोवर्मन बना।
- इस वंश का अगला शासक “धंग” था। यह शिव को मानता था।
- इसने खजुराहो में एक विशाल शिव मंदिर का निर्माण करवाया।
- इसे कंदरिया महादेव के नाम से भी जाना जाता है।
- इस मंदिर के परांगन में नंदी बैल की मूर्ति है। जो कि सबसे बड़ी नंदी बैल की प्रतिमा है।
- राजा धंग ने जिन्नाथ, विश्वनाथ और वैद्यनाथ मंदिर का निर्माण करवाया था।
- धंग ने प्रयाग में गंगा-यमुना के संगम पर जल समाधि ले ली।
- इस वंश का सबसे प्रतापी शासक विद्याधर था। जिसने गुजरात के शासक राज्यपाल की हत्या कर दी। क्योंकि इसने महमूद गजनवी का सामना नहीं किया बल्कि डर से भाग गया।
- विद्याधर अकेला ऐसा भारतीय शासक था जिसने महमूद गजनवी की महत्वकांक्षाओं का सफलतापूर्वक विरोध किया।
- इस वंश का अंतिम शासक परमर्दिदेव था, जिसे पृथ्वीराज चौहान-III ने पराजित कर दिया और उसके क्षेत्र को मिला लिया।
- आल्हा रूदल दोनों भाई परमर्दिदेव का सेनापति था जो पृथ्वीराज चौहान के साथ युद्ध करते समय उनकी मृत्यु हो गई।
- परमर्दिदेव ने कुतुबद्दीन ऐबक की अधिनता स्वीकार कर ली जिसके कारण उसके मंत्री अजयदेव ने उनकी हत्या कर दी थी।
- अंततः कुतुबद्दीन ऐबक ने पृथ्वीराज चौहान को हराकर दिल्ली सल्तनत में मिला लिया।

### कुछ छोटे राजवंश

#### 1. मैत्रक वंश

- इसके संस्थापक भट्टारक थे। यह वंश गुजरात के सौराष्ट्र में था।
- इसकी राजधानी वल्लभी थी, जो जैन धर्म का प्रमुख केन्द्र थी।
- ये गुप्तों के सामंत थे।

#### 2. कल्चूरी वंश (चेदी वंश)

- यह मध्यप्रदेश के त्रिपुरी के क्षेत्र में था।
- इस वंश के संस्थापक कोक्कल-I थे।
- इन्होंने अपनी राजधानी त्रिपुरी को बनाया।
- इस वंश का सबसे प्रतापी शासक गंगेय देव था।
- इन्होंने विक्रमादित्य की उपाधि धारण किया।

#### 3. गौड़ वंश

- यह बंगाल के क्षेत्र में था।
- इस वंश का सबसे प्रतापी शासक शशांक था।
- इसने राजवर्धन की हत्या कर दी तथा महाबोधि वृक्ष को कटवाकर इसके जड़ों में आग लगा दिया।
- इसकी हत्या हर्षवर्धन ने कर दी, जिसके बाद यह वंश स्वतः ही धीरे-धीरे समाप्त हो गया।

#### 4. पूर्वी गंग वंश

- ☛ यह उड़ीसा तथा आंध्रप्रदेश में था।
- ☛ इस वंश के संस्थापक आनन्द वर्मन ने पूरी में जगन्नाथ मंदिर बनवाया।
- ☛ इस वंश के शासक नरसिंह-I ने कोणार्क में सूर्य मंदिर बनवाया, जिसे Black Pagoda भी कहते हैं।
- ☛ इस वंश के शासक नरसिंह देव ने भुवनेश्वर में लिंगराज मंदिर बनवाया।

#### काकतिया वंश ( तेलंगाना )

- ☛ यह तेलंगाना के क्षेत्र में एक छोटा-सा वंश था।
- ☛ इसके संस्थापक बीटा प्रथम थे।
- ☛ इस वंश का अगला शासक रूद्र प्रथम बना। इसने अपनी राजधानी वारंगल को बनाया।
- ☛ इस वंश का अगला शासक प्रतापरूद्र देव था, जिसके शासन काल में मलिक काफूर ने आक्रमण किया।
- ☛ इसने बिना लड़े अधीनता स्वीकार कर ली और अपनी सोने की प्रतिमा को जंजीर लगाकर तथा कोहिनूर हीरा अल्लाउद्दीन खिलजी के दरबार में भेंट किया।
- ☛ इसके बाद यह वंश स्वतः समाप्त हो गया।
- ☛ इस वंश पर अल्लाउद्दीन खिलजी का अधिकार हो गया।

#### यादव वंश

- ☛ यह महाराष्ट्र के देवगिरि के क्षेत्र में था।
- ☛ इसके संस्थापक भिल्लम-V थे।
- ☛ इसकी राजधानी देवगिरि थी।
- ☛ इस वंश का सबसे प्रतापी शासक सिंहन्न था।
- ☛ इस वंश के शासक रामचंद्र देव को मल्लिक काफूर ने पराजित कर दिया किन्तु इसकी वीरता को देखकर अल्लाउद्दीन खिलजी ने इसे देवगिरि का जागीरदार बना दिया।

#### होयशल वंश

- ☛ ये यादव वंश के सामंत थे। इन्होंने अपनी राजधानी द्वारसमुद्र (आधुनिक हलेविड) को बनाया।
- ☛ इस वंश के संस्थापक विष्णुवर्मन थे।
- ☛ इन्होंने वेल्लूर में चेन्ना केशव मंदिर बनवाया।
- ☛ इस वंश का अंतिम शासक वीरवल्लाल तृतीय था। जिसे मल्लिक काफूर ने पराजित कर दिया और यह वंश समाप्त हो गया।

#### कश्मीर का इतिहास

- ☛ कश्मीर के इतिहास के बारे में जानकारी संस्कृत के कल्हण की पुस्तक राजतरंगिणी से मिलती है।
- **राजतरंगिणी**
- यह ऐसा संस्कृत साहित्य है जिसमें क्रमबद्ध तरीके से इतिहास लिखने का पहली बार प्रयास किया गया।

- ☛ यह ग्रंथ ऐतिहासिक रूप से इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि कल्हण ने पक्षपात रहित होकर राजा के गुण और दोषों का वर्णन किया है।

#### ➤ इसमें तीन वंशों की जानकारी है-

- (i) कार्केट वंश
- (ii) उत्पल वंश
- (iii) लोहार वंश

#### (i) कार्केट वंश ( 598 ई.-855 ई. )

- ☛ इस वंश के संस्थापक दुर्लभवर्धन थे। इसके दरबार में ह्वेनसांग (कश्मीर) आया था।
- ☛ इस वंश का शासक तारापिंड सबसे क्रूर शासक था।
- ☛ इस वंश का सबसे योग्य शासक “ललितादित्य मुक्तापिंड” था। जिसने मालवा के चंदेल शासक यशोवर्मन को पराजित कर दिया।
- ☛ कश्मीर में सूर्य का प्रसिद्ध मार्तण्ड मन्दिर ललितादित्य द्वारा बनवाया गया था।
- ☛ तक्षशिला, राजपूताना, सिंहपुर, उर्शा और पुंच इसी वंश का क्षेत्र था।
- ☛ दामोदर गुप्त, उद्भट्ट तथा क्षीर नामक विद्वान जयापिंड के दरबार में रहा करता था।
- ☛ इस वंश का अंतिम शासक उत्पलापीड को मंत्री ने राज्यच्युत करके अवन्तिवर्मन को गद्दी पर बैठाया और कार्केट वंश का अंत हुआ।

#### (ii) उत्पल वंश

- ☛ कार्केट वंश के बाद कश्मीर पर उत्पल वंश का अधिकार हुआ।
- ☛ इस वंश का संस्थापक अवन्तिवर्मन थे। इन्होंने अवन्तिपुर नामक नगर बनवाई।
- ☛ रत्नाकार एवं आनंदवर्धन नामक कवि अवन्तिवर्मन के दरबार में रहा करते थे।
- ☛ अवन्तिवर्मन का योग्य मंत्री शूर था।
- ☛ अवन्तिवर्मन के समय सूय्य नामक अभियंता ने नहरों से सिंचाई का निर्माण करवाया था।
- ☛ अवन्तिवर्मन का उत्तराधिकारी शंकरवर्मन ने गुर्जर को जीतकर अपने साम्राज्य का विस्तार किया।
- ☛ अवन्तिवर्मन की मृत्यु के बाद उसकी पत्नी सुगंधा ने शासन की।
- ☛ इस वंश में प्रथम महत्वाकांक्षी शासिका रानी दिदा थी जो क्षेमगुप्त की पत्नी थी।
- ☛ इनकी मृत्यु के बाद इस वंश की बागडोर संग्रामराज के हाथ में आई। किन्तु संग्रामराज इस वंश का अंत करके लोहार वंश की स्थापना कर दी।

#### (iii) लोहार वंश

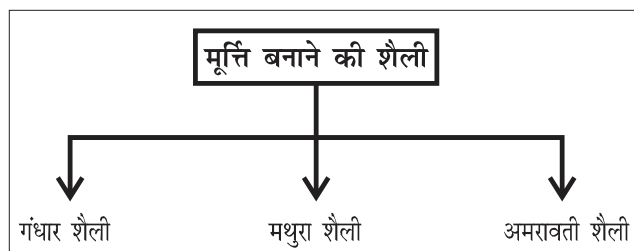
- ☛ उत्पल वंश के बाद लोहार वंश आया।
- ☛ इस वंश के संस्थापक संग्रामराज थे।

- संग्रामराज ने अपने मंत्री तुंग को भट्टिंडा के शाही शासक त्रिलोचनपाल की ओर से महमूद गजनवी से लड़ने के लिए भेजा।
- इस वंश का शासक 'हर्ष' एक योग्य शासक था।
- इसके समय कश्मीर में भीषण अकाल पड़ा। इसने नीरों की उपाधि धारण की।
- हर्ष स्वयं एक कवि था और कई भाषाओं एवं विद्याओं का ज्ञाता भी था। इसके दरबार में कल्हण नामक विद्वान रहते थे।
- इस वंश का अंतिम शासक जयसिंह था।
- इन्हीं के काल में "राजतरंगिणी" पुस्तक पूर्ण हुई थी।
- इसके बाद कश्मीर पर यवन आक्रमण हो गया।
- यवन आक्रमण के बाद कश्मीर पर तुर्क शासकों ने अधिकार कर लिया।
- सबसे योग्य तुर्क शासक 'जैनुल-आबे-दीन' थे।
- इन्हें कश्मीर का अकबर कहा जाता है।

### वर्मन वंश ( कामरूप असम )

- असम का प्राचीन नाम कामरूप था।
- इस वंश का संस्थापक पुष्यवर्मन था। यह समुद्रगुप्त के समकालीन था।
- असम को पहले प्रयागज्योतिषपुर भी कहा जाता था। यह पुष्यपुर की राजधानी थी।
- इस वंश का सबसे शक्तिशाली शासक भूतिवर्मन था।
- स्थितवर्मन ने दो अश्वमेध यज्ञ करवाया था।
- इस वंश का अंतिम शासक भास्करवर्मन था।
- पुष्यभूति वंश के हर्षवर्धन ने समस्त कामरूप के साथ बंगाल के कुछ भागों पर अधिकार कर लिया और इसी के साथ कामरूप के वर्मन वंश का अंत हो गया।
- अंत में कामरूप पालवंश का अंग बन गया।

### मूर्तिकला तथा मंदिर निर्माण की शैली



- (i) **गंधार शैली**— इस शैली का विकास कुषाण वंश के प्रमुख शासक कनिष्क के शासन काल में हुआ था।



- सबसे पहले इस शैली में मूर्ति मिट्टी, चुना और प्लास्टर को मिलाकर बनाई जाती थी लेकिन इस प्रकार की मूर्ति बहुत कमजोर होती थी इसलिए बाद में ये काले और भूरे रंग के पत्थर से बनाए जाने लगे।
- ये मूर्तियाँ मुख्य रूप से पश्चिमोत्तर भारत में बनाई जाती थी। जिसका प्रमुख केन्द्र तक्षशिला था।
- इस शैली की 95% मूर्तियाँ महात्मा बुद्ध की बनी थी।
- इस शैली में महात्मा बुद्ध के बहुत बड़े घुंघराले बाल दिखाए गए हैं।
- इस शैली में महात्मा बुद्ध को बहुत बलशाली, बलिष्ठ शरीर (गठिला), योग करते हुए, ध्यान की मुद्रा में और युवा अवस्था में दिखाया गया है।
- इसमें महात्मा बुद्ध के पीछे होलोमंडल या प्रभामंडल सेप दिखाई गई है। कपड़े को दोनों ओर से लपेटकर पूरा शरीर ढका हुआ है।
- इस शैली का उल्लेख वैदिक एवं सांस्कृतिक साहित्य में है। यह कला यूनान से प्रभावित है। इसलिए इसे ग्रीक इंडियन कला भी कहा जाता है।
- इस कला में मूर्ति बैठी, खड़ी, आँखे बंद, योग और ध्यान मुद्रा में बनाई गई है।
- यह शैली अपोलो देवता से प्रभावित है।

- (ii) **मथुरा शैली**— मथुरा शैली का विकास मुख्यतः उत्तर भारत में हुए थे।



- मथुरा, वाराणसी और कौशाम्बी इसके प्रमुख केन्द्र थे। इसकी शुरुआत मथुरा से हुई इसलिए इसे मथुरा शैली कहा जाता था।



- इस शैली में चौड़ा सीना, बालविहिन और नग्न मूर्तियाँ भी थी। ज्यादातर मुर्तियों में बायाँ हाथ आसन्नस्थ है और दाहिने हाथ को अभय मुद्रा (आशिर्वाद) में उठाये हुए हैं और कपड़े बाएँ कंधे पर पड़े हुए हैं।
- इस शैली में तीन धर्म की मूर्तियाँ मिलती है— बौद्ध, जैन एवं हिन्दू।
- यह शैली पूर्णतः भारतीय शैली थी। इसमें लाल रंग के पत्थर का प्रयोग हुआ है।
- (iii) अमरावती शैली— इस शैली का विस्तार मुख्यतः दक्षिण भारत में हुई थी।



- इस शैली में पूजा और योग को दिखलाकर कहानियों को बताया गया है।
- इसमें कई मुर्तियाँ एक साथ बनाई गई थी।
- इस शैली की मुर्तियाँ मुख्यतः सफेद संगमरमर की बनाई जाती थी।
- इस कला की मुर्तियाँ जातक कथाओं की हैं और इसे चित्रण के माध्यम से बनाया गया है।
- ये दक्षिण भारत के आंध्रप्रदेश के अमरावती नामक स्थान पर विकास हुआ। इसलिए इसे अमरावती शैली कहा जाता था।

| शैली    | जगह         | रंग  | वंश     | धर्म                 | अवस्था   | संकेत     |
|---------|-------------|------|---------|----------------------|----------|-----------|
| गंधार   | पश्चिम भारत | काला | कुषाण   | बौद्ध                | योग      | चिंता     |
| मथुरा   | उत्तर भारत  | लाल  | कुषाण   | बौद्ध + जैन + हिन्दू | आशिर्वाद | प्रसन्नता |
| अमरावती | दक्षिण भारत | सफेद | सातवाहन | बौद्ध                | ग्रुप    | कहानी     |

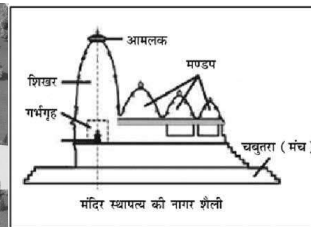
### स्थापत्य कला

- भारत में स्थापत्य कला में मंदिरों के निर्माण की शैली बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रखती है।
- भारत में प्रमुख रूप से मंदिरों के निर्माण की जो शैली है वह मौर्य काल से प्रारंभ होती है और गुप्त काल में अपने चरम पर होती है।
- मंदिरों का वर्तमान स्वरूप गुप्त काल की है।

### मंदिर निर्माण की शैली

नागर शैली विमानन शैली (द्रविड़ शैली) बेशर शैली

- (i) नागर शैली— नागर शैली की मंदिर उत्तर भारत में देखने को मिलते हैं।



- यह उत्तर भारत में हिमालय से लेकर विन्ध्याचल पर्वत तक मिलते हैं।
- नागर शैली की मंदिर का जो गुंबद होता है। वह नीचे चौड़ा होता है और जैसे-जैसे ऊपर जाता है पतला होते जाता है। यह गुंबद रेखीय होता है जिसे शिखर कहा जाता था शिखर के ऊपर एक रिंग बना दिया जाता है जिसे आमलक कहा जाता था और आमलक के ऊपर एक कलश रख जाता था और कलश के बगल में एक ध्वज रखा जाता था।
- इसके शिखर ऊँचे नहीं होते हैं। शिखर के नीचे भगवान की मूर्ति रखी जाती है जहाँ भगवान की मूर्ति रखी जाती है उसे गर्भ गृह कहते हैं।
- पूरे मंदिर का सबसे प्रमुख जगह गर्भ गृह ही होता है।
- गर्भ गृह में ज्यादा भीड़ न हो इसलिए उसमें कई मंडप बने होते हैं ताकी वहाँ लोग प्रतिक्षा कर सकें।
- गर्भ गृह के दरवाजे पर गंगा और यमुना की मूर्ति की लगी होती थी।
- इस शैली की मंदिरों में दो प्रकार की सीढ़ी होती थी शुरूआत की जो सीढ़ी होती थी उसे जगती, चबुतरा जबकि अगली सीढ़ी को पिठ कहा जाता था।
- गर्भ गृह और मंडप के बीच खाली जगह नहीं होते थे। गर्भ गृह के अंदर ही प्रदक्षिणा पथ (परिक्रमा) होता था।
- नागर शैली की मंदिर कभी भी अकेली नहीं होती थी। इसे पांच मंदिर के ग्रुप में बनाया जाता था। इसीलिए इसे पंचायतन शैली भी कहा जाता था।
- इस मंदिर के चारों ओर चारदीवारी नहीं रहती थी। यहाँ किसी भी प्रकार का तलाब नहीं होता था क्योंकि उत्तर भारत में नदियों की कोई कमी नहीं है और मंदिर में कोई भव्य द्वार नहीं होता था।
- इस शैली की कई विशेषता थी जो उड़ीसा में है उसे उड़िया शैली कहते हैं। इसकी एक शाखा मध्य प्रदेश में है जो कंदरिया महादेव खजुराहो का मंदिर है।

- एक शाखा गुजरात में भी है जिसे सोलंकी शैली कहते हैं।
- (ii) **विमानन शैली/द्रविड़ शैली**— द्रविड़ शैली का विकास चोल और पल्लव काल में हुए थे।



- ये मंदिर हमें दक्षिण भारत में देखने को मिलती हैं।
- दक्षिण भारत में पानी की कमी होती थी इसलिए इस शैली में निर्मित मंदिर के आस-पास तालाब होते थे।
- यह शैली कृष्णा नदी से लेकर पूरे दक्षिण भारत में है। इस शैली में भव्य मुख्य द्वार होते थे। जिसे हमलोग गोपुरम या गोपुरा कहते थे।
- मुख्य द्वार के कारण ही वहाँ चारदिवारी बनी होती थी।
- यह मंदिर भी पंचायतन शैली में ही था।
- मंदिर बीच में रहती थी इस शैली की मंदिर सीढ़ीनुमा होती थी और सीढ़ीनुमा को ही विमानन कहा जाता था। इसी कारण इस शैली को विमानन शैली भी कहा जाता था।
- विमानन शैली में मंडप और गर्भ गृह सटा नहीं रहता है। उसमें अंतराल रहता है क्योंकि यही पर परिक्रमा किया जाता है।
- गर्भ गृह के बाहर दरवाजे पर यक्ष और यक्षीणी की मूर्ति लगी रहती है।
- (iii) **बेसर शैली**— यह शैली नागर और द्रविड़ शैली का मिश्रित रूप है।

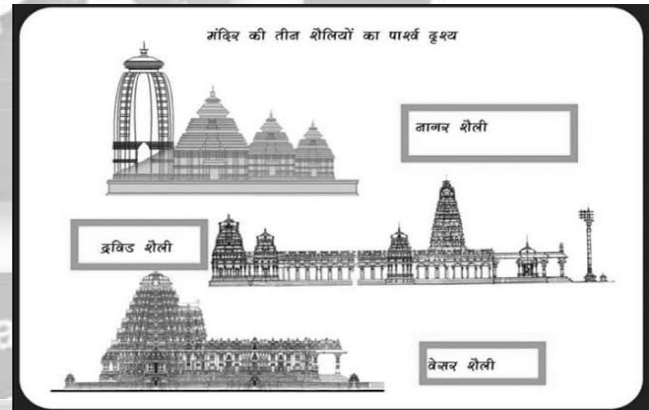


- यह शैली विंध्य से लेकर कृष्णा नदी तक मिलता है।
- इसमें खुले प्रदक्षिणा पथ होता है और मण्डप बहुत सुसज्जित होता है।
- **कुछ प्रमुख शैली के उदाहरण—**
- नागर शैली — मीनाक्षी मंदिर (मदुरै)
- विजयनगर शैली — विट्ठल स्वामी मंदिर (विजय नगर), लोटस महल (हम्पी)

- होयशल शैली — सोमनाथपुर में केशव मंदिर (विष्णु को समर्पित)
- पाल शैली — चित्रकला

### कुछ प्रमुख मंदिर और उसकी शैली

| नागर शैली             |                    |
|-----------------------|--------------------|
| प्रमुख मंदिर          | शैली               |
| भितरगांव मंदिर        | कानपुर             |
| दशावतार मंदिर         | झांसी              |
| लक्ष्मण मंदिर         | सिंहपुर            |
| कन्दरिया महादेव मंदिर | खजुराहो (एम.पी.)   |
| लिंगराज मंदिर         | भुवनेश्वर (उड़ीसा) |
| जगन्नाथ मंदिर         | पुरी (उड़ीसा)      |
| सूर्यमंदिर            | कोणार्क उड़ीसा     |
| द्रविड़ शैली          |                    |
| प्रमुख मंदिर          | शैली               |
| वृहदेवश्वर मंदिर      | तंजावुर            |
| शिवमंदिर              | गंगैयकोडचोलपुरम    |
| महावलीपुरम रथ मंदिर   | महावलिपुरम         |
| बेसर शैली             |                    |
| प्रमुख मंदिर          | शैली               |
| डोडा वेसप्पा          | दम्बल              |
| बादामी के मन्दिर      |                    |



### राजपूत काल ( 800ई.-1200ई. ) या पूर्वमध्यकाल ( 800ई.-1200ई. )

- राजपूत काल को पूर्व मध्य काल भी कहा जाता है।
- राजपूत वंश के उदय के बारे में चंद्रबरदाई की पुस्तक “पृथ्वीराज रासो” से जानकारी मिलती है। इस पुस्तक के अनुसार माउन्ट आबू पर हुए एक अग्नि कुंड (हवन कुंड) से 4 वंशों का उदय हुआ, जो निम्नलिखित हैं—
- (i) प्रतिहार
- (ii) परमार
- (iii) चालुक्य
- (iv) चौहान

(i) प्रतिहार

- पीछे पड़ चुके हैं।

(ii) परमार वंश

- यह वंश मध्यप्रदेश (मालवा) के क्षेत्र में था।
- इस वंश के शासक उपेन्द्र थे।
- इस वंश का सबसे योग्य शासक राजा भोज था।
- इन्होंने अपनी राजधानी धारानगरी को बनाई जो संस्कृत का प्रमुख केन्द्र था।
- इस काल में धारा नगरी में एक विशाल सरस्वती मंदिर की स्थापना की गई।
- इस काल में ज्योतिष का विकास सर्वाधिक हुआ।
- अंततः इस क्षेत्र पर दिल्ली सल्तनत का अधिकार हो गया।

गुजरात का चालुक्य (सोलंकी)

- यह वंश गुजरात के क्षेत्र में था।
- इसके संस्थापक मूल राज थे।
- इस वंश का शासक भीम-I के सामंत विमलशाह थे। जिन्होंने वस्तुपाल तथा तेजपाल नामक अधिकारियों द्वारा दिलवाड़ा का जैन मंदिर बनवाया।
- महमूद गजनवी ने भीम-I के काल में ही सोमनाथ मंदिर को लूटा था।
- भीम प्रथम के सेनानायक विमलशाह ने माउंट आबू पर प्रसिद्ध दिलवाड़ा का जैन मंदिर का निर्माण करवाया था।
- इस वंश का प्रतापी शासक भीम-II था। जिसने 1178 ई. में मोहम्मद गौरी को हराया था।
- यह मोहम्मद गौरी की भारत में प्रथम पराजय थी।
- अंततः इस वंश पर दिल्ली सल्तनत का अधिकार हो गया।

चौहान वंश

- इस वंश का उदय जंगल देश में हुआ जिसे बाद में सपादलक्ष (सवा लाख गांव) कहा गया। जिसकी राजधानी अहिक्षत्रपुर थी।

- इस वंश के संस्थापक वासुदेव (सिंह राज) थे।
- इस वंश के सबसे योग्य शासक अरूणोराज थे, जिनके दरबार में संस्कृत के विद्वान विग्रहराज-IV विसलदेव रहते थे, जिन्होंने हरिकेली नामक संस्कृत नाट्य लिखा था।
- वाक्पतिराज-I ने सर्वप्रथम चौहानों में महाराज की उपाधि धारण की।
- इस वंश के अगले शासक पृथ्वीराज-III (चौहान) थे।
- पृथ्वीराज चौहान को रामपिथौरा भी कहा जाता है।
- पृथ्वीराज-III (चौहान) के पिता सोमेश्वर तथा माता (संरक्षिका) कर्पूरी देवी थी जो त्रिपुरी के कल्चूरी राजा अचलराज की पुत्री थी।
- पृथ्वीराज तृतीय के दरबार में जयानक, चन्दबरदाई, विश्वरूप, वागीश्वर, जनार्दन, विद्यापति गौड़, आशाधार तथा पृथ्वीभट्ट आदि विद्वान रहते थे।
- चन्दबरदाई ने पृथ्वीराज रासो नामक ग्रंथ की रचना किया।
- इन्होंने जयचंद्र के साथ मिलकर तराईन के प्रथम युद्ध (1191 ई०) में मोहम्मद गौरी को पराजित कर दिया।
- पृथ्वीराज-III (चौहान) ने जयचंद्र की बेटी संयोगिता का अपहरण कर लिया और उससे विवाह कर लिया। जिस कारण जयचंद्र और पृथ्वीराज-III (चौहान) एक दूसरे के विरोधी हो गए।
- जयचंद्र ने मोहम्मद गौरी से मिलकर तराईन के द्वितीय युद्ध में (1192 ई०) में पृथ्वीराज-III (चौहान) की हत्या कर दी।
- तराईन का द्वितीय युद्ध भारतीय इतिहास में एक निर्णायक घटना थी।
- पृथ्वीराज तृतीय तराईन के युद्ध में **नाटयरम्भा** नामक घोड़ा तथा **रामप्रसाद** नामक हाथी पर सवार था।
- मोहम्मद गौरी ने 1194 ई० में चंदावर के युद्ध में जयचंद्र की हत्या कर दी।
- मोहम्मद गौरी के गुलाम कुतुबद्दीन ऐबक ने दिल्ली तथा अजमेर पर आक्रमण करके चौहानों की सत्ता का अंत कर दिया।